हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

गिरिराज

साप्ताहिक

ISSN 2454-9738

डाक पंजीकरण संख्या
एच.पी./42/एस.एम.एल. 2021-2023
साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

वर्ष 45 अंक 01 शिमला, 5-11 अक्तूबर, 2022 हर बुधवार को प्रकाशित मूल्य : एक प्रति 5.00 रुपये वार्षिक 250 रुपये आजीवन 2500 रुपये

आउटसोर्स संबंधित मुद्दों पर मंत्रिमंडलीय उपसमिति की रिपोर्ट सैद्धांतिक रूप से स्वीकार

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर की अध्यक्षता में गत दिनों शिमला में हुई प्रदेश मंत्रिमण्डल की बैठक में कई महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए। मंत्रिमण्डल ने पेंशनभोगियों, पारिवारिक पेंशनभोगियों और राज्य संवर्ग से सम्बद्ध रखने वाले अखिल भारतीय सेवा पेंशनभोगियों तथा पारिवारिक पेंशनभोगियों को उनकी संशोधित मूल पेंशन/मूल पारिवारिक पेंशन पर क्रमशः 5, 10 और 15 प्रतिशत पेंशन भत्ता प्रदान करने का निर्णय लिया। इससे 65 से 80 वर्ष आयु वर्ग के लगभग 86,200 पेंशनभोगी तथा पारिवारिक पेंशनभोगी लाभान्वित होंगे। हिमाचल प्रदेश में सेवा प्रदाताओं के माध्यम से विभिन्न सरकारी विभागों में आउटसोर्स आधार पर तैनात कर्मचारियों से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर मंत्रिमंडलीय उपसमिति की रिपोर्ट को भी मंत्रिमंडल के समक्ष रखा गया और इसे सैद्धांतिक रूप से स्वीकार कर लिया गया। इस मामले में एक नीति दस्तावेज का मसौदा तैयार करने का निर्णय लिया गया। मंत्रिमंडलीय उपसमिति की सिफारिशों के अनुसार 'हिमाचल प्रदेश कौशल विकास निगम' का नाम बदलकर कंपनी अधिनियम-2013 के प्रावधानों के तहत 'हिमाचल प्रदेश कौशल विकास एवं रोजगार निगम कंपनी' की स्थापना की जाएगी। यह कंपनी तकनीकी शिक्षा विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य करेगी। यह कंपनी विभिन्न सरकारी विभागों, बोर्डों, निगमों, विश्वविद्यालयों, राज्य के शिक्षण संस्थानों, सांविधिक संस्थाओं और राज्य सरकार के स्वामित्व और नियंत्रण वाले अन्य उपक्रमों की अस्थायी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कुशल, अर्द्ध-कुशल और अन्य कर्मचारियों की तैनाती सुनिश्चित करेगी।

मंत्रिमंडल ने युवा सेवाएं एवं खेल विभाग द्वारा पात्र खिलाड़ियों को भर्ती प्रक्रिया के लिए प्रायोजित करने या संबंधित विभागों को अनुपलब्धता प्रमाण पत्र जारी करने की प्रक्रिया को समयबद्ध बनाने का निर्णय लिया, ताकि भर्ती प्रक्रिया को जल्द से जल्द पूरा किया जा सके। युवा सेवाएं एवं खेल विभाग से अनुशंसा या अनुपलब्धता प्रमाण पत्र के लिए कम से कम छह सप्ताह की अवधि के इंतजार के बाद पद भर दिए जाएंगे। मंत्रिमंडल ने स्थानीय लोगों की सुविधा के लिए कुल्लू जिले के पठवार वृत्त बंगा को तहसील सैंज से हटाकर तहसील बंजार में शामिल करने (शेष पृष्ठ दो पर)

मंत्रिमंडल के निर्णय

- 86,200 पेंशनभोगियों को संशोधित पेंशन पर 5,10,15 प्रतिशत भत्ता प्रदान
- खिलाड़ियों को भर्ती प्रक्रिया के लिए प्रायोजित करने या संबंधित विभागों को अनुपलब्धता प्रमाण पत्र जारी करने की प्रक्रिया होगी समयबद्ध

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर शिमला में प्रदेश मंत्रिमंडल बैठक की अध्यक्षता करते हुए

कल्याणकारी योजनाओं से सुनिश्चित हुआ महिलाओं का सशक्तीकरण : जय राम ठाकुर

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों सराज विधानसभा क्षेत्र के जंजैहली में लगभग 29 करोड़ की 14 विकासात्मक परियोजनाओं के उदघाटन एवं शिलान्यास किए। उन्होंने 10.78 करोड़ से निर्मित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जंजैहली के भवन, जंजैहली में ही 4.12 करोड़ से बने लोक निर्माण विभाग के विश्राम गृह, 5.99 करोड़ के इंडोर स्टेडियम, बागाचनोगी में 50 लाख के राजकीय सेरीकल्चर सेंटर, भुलाह में 1.20 करोड़ से बने जैव विविधता पार्क और शैटाधार में एक करोड़ रुपये के इंटरप्रटेशन सेंटर का लोकार्पण किया। उन्होंने जंजैहली में नए वन मंडल (वन्य जीव) और लोक निर्माण विभाग के वृत कार्यालय, नवस्तरोन्नत राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला शोधाधार, राजकीय माध्यमिक पाठशाला तुंगधार, राजकीय माध्यमिक पाठशाला भलवाइ और लंबाथाच में 5000 लीटर क्षमता के मिल्क कूलर का शुभारंभ भी किया। इसके बाद डीमकटारू में महिला सम्मेलन को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि महिलाओं के कल्याण और सशक्तीरण की चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2010 में भाजपा की सरकार ने नगर निकायों तथा पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया था। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज इन संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी 50 प्रतिशत से भी ज्यादा हो गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार ने महिलाओं (शेष पृष्ठ दो पर)

5.99 करोड़ के इंडोर स्टेडियम, 5000 लिटर क्षमता के मिल्क कूलर का शुभारंभ

शिमला, धर्मशाला में प्लॉट निर्माण के लिए 277 करोड़ के प्राक्कलन को मंजूरी

प्रदेश सरकार शहरी विकास के लिए कृतसंकल्प है तथा हिमाचल प्रदेश आवास तथा शहरी विकास प्राधिकरण (हिमुडा) इस उद्देश्य के लिए विशेष प्रयास कर रहा है। यह बात शहरी विकास तथा आवास मंत्री और हिमुडा के अध्यक्ष सुरेश भारद्वाज ने गत दिनों शिमला में हिमुडा के निदेशक मण्डल की 51वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए कही। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार शहरी क्षेत्रों के नागरिकों को बेहतरीन आवासीय सुविधा प्रदान करने के लिए निरन्तर प्रयासरत है।

बैठक के दौरान निदेशक मण्डल ने धर्मशाला में नई आवासीय कॉलोनी स्थापित करने की मंजूरी प्रदान की। यहां प्रथम चरण में 158 प्लॉटों का निर्माण करने के उपरान्त इच्छुक प्रार्थियों को आबंटित किया जाएगा। हिमुडा ने इन प्लॉटों के आबंटन के लिए 31 अक्तूबर, 2022 तक आवेदन आमंत्रित करने की तिथि निर्धारित की है। आवेदनों की छानबीन के उपरान्त 10 नवम्बर, 2022 को ड्रॉ निकाला जायेगा और उमीदवारों को आबंटित किये जाएंगे। निदेशक मण्डल ने धर्मशाला कॉलोनी में बुनियादी सुविधाओं को सुनिश्चित करने के लिए 127 करोड़ के प्राक्कलन की भी मंजूरी प्रदान की है। इसके अतिरिक्त शिमला में हवाई अड्डे के नजदीक जाठियादेवी में भी प्रथम चरण के प्लॉटों के निर्माण के लिए 150 करोड़ के प्राक्कलन की मंजूरी भी (शेष पृष्ठ 11 पर)

धर्मशाला में 158 प्लाटों के आवंटन के लिए 31 अक्तूबर तक आवेदन आमंत्रित

अटल आयुर्विज्ञान संस्थान में सेवाएं आरंभ

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों शिमला के निकट चमियाणा में प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना-3 के तहत 262 करोड़ से निर्मित अटल अति विशिष्ट (सुपर स्पेशियलिटी) आयुर्विज्ञान संस्थान का उद्घाटन किया। इस अवसर उन्होंने 25 करोड़ से बनने वाले क्रिटिकल केयर ब्लॉक और 42 करोड़ के एडवांस डायग्नोस्टिक सेंटर की आधारशिला भी रखी। इस अवसर पर लोगों को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेशवासियों को उच्च गुणवत्ता वाली अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है और इसके लिए स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे को मजबूत किया गया है। उन्होंने कहा कि अटल सुपर स्पेशियलिटी चिकित्सा संस्थान लोगों को विश्व स्तरीय चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करेगा और इस संस्थान का श्रेय तत्कालीन केंद्रीय (शेष पृष्ठ 11 पर)

शिमला रोपवे प्रोजेक्ट दिलाएगा जाम से निजात

✍ रीना नेगी

भीड़-भाड़ वाले शहरों को सुविधाजनक बनाया जा सके। इसलिए हिमाचल सरकार पहाड़ी क्षेत्रों में रज्जू मार्गों और ईको-फ्रेंडली परिवहन सुविधाओं को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रयास कर रही है। राजधानी शिमला में वाहनों की भीड़ तथा प्रदूषण कम करने के लिए तारा देवी से शिमला शहर तक करीब 14.69 किलोमीटर लम्बा रज्जू मार्ग बनाया जायेगा। इस रज्जू मार्ग में 15 स्टेशन होंगे जिनमें स्मार्ट पार्किंग, लिफ्ट्स, एस्केलेटर्स जैसे आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध होंगी। इस रज्जू मार्ग के बनने से पर्यटन नगरी शिमला में स्थानीय लोगों को बसों में धक्के खाने और घण्टों जाम में फंसे रहने से निजात मिलेगी। शिमला शहर में हर वर्ष लाखों पर्यटक प्राकृतिक सौंदर्य और प्रदूषण मुक्त हवा का लाभ उठाने आते हैं। इस रज्जू मार्ग के बनने से पर्यटकों को भी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध होगी और बिना किसी परेशानी के वे अपनी यात्रा का आनन्द उठायेंगे। देश में यह पहली ऐसी परियोजना है जो पूरी तरह ईको-फ्रेंडली एवं कार्बन न्यूट्रल है। इस परियोजना के वित पोषण के लिए प्रदेश सरकार ने न्यू डिवेलपमेंट बैंक (एनडीबी) के समक्ष प्रस्ताव प्रस्तुत कर दिया है। 1546.60 करोड़ से बनने वाली यह परियोजना शिमला शहर के लिए मील का पत्थर साबित होगी।

सरकार इस दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही है। रोपवे एंड रैपिड ट्रांसपोर्ट सिस्टम डिवेलपमेंट कारपोरेशन (आरटीडीसी) पांच वर्षों में इसका कार्य पूरा करेगी। शिमला में रज्जू मार्ग का कार्य पूरा होने के पश्चात् प्रदेश सरकार इस वैकल्पिक परिवहन प्रणाली को धर्मशाला और मनाली में भी विकसित करेगी। हिमाचल सरकार रज्जू मार्गों के निर्माण को बढ़ावा देने के लिए कृतसंकल्प है और रोपवे परियोजनाओं को प्राथमिकता वाली परियोजनाओं की सूची में शामिल करने के साथ इन परियोजनाओं के लिए राइट ऑफ वे को एफ.सी.ए. और ईसी पूर्व पर्यावरण मंजूरी में भी छूट दिलाई गई है, इन मार्गों के किराये में जी.एस.टी. की दर 18 से घटा कर पांच प्रतिशत की गई है। आर. आई. डी. एफ. नाबार्ड के तहत वित पोषण के लिए रज्जू मार्गों को पात्र श्रेणी में शामिल करवाया गया है। मण्डी में पंडोह के पास माता ज्वालामुखी मंदिर के लिए रज्जू मार्ग योजना देश भर में आर.आई.डी.एफ. नाबार्ड के माध्यम से वित पोषित पहली रज्जू मार्ग परियोजना है। प्रदेश में रज्जू मार्गों के विकास के लिए केन्द्र सरकार के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं, और पर्वतमाला योजना के तहत जिला कांगड़ा, कुल्लू, चम्बा, सिरमौर, शिमला और बिलासपुर में लगभग 60.6 कि.मी. रज्जू मार्ग के लिए 2964 करोड़ से सात परियोजनाएं प्रस्तुत की है।

आकर्षण का केन्द्र होगा 'देव लोक': मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों मनाली के निकट बड़ाग्रां बिहाल में सार्वजनिक निजी भागेदारी के अन्तर्गत 46 करोड़ से निर्मित पारम्परिक कला एवं शिल्प केन्द्र का लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि मनाली विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है और एशियन डेवल्पमेंट बैंक की परियोजना पारम्परिक कला एवं शिल्प केन्द्र 'देव लोक' यहां आने वाले कला प्रेमियों और पर्यटकों के लिए उत्कृष्ट स्थल साबित होगा। यह महत्त्वाकांक्षी परियोजना प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को प्रदर्शित करेगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश न केवल प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए जाना जाता है, बल्कि पर्वतारोहण, रॉक क्लाइबिंग, रिवर राफ्टिंग और पैराग्लाइडिंग जैसे साहसिक खेलों के लिए भी यह आदर्श स्थल है। श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि इस केंद्र के माध्यम से स्थानीय बुनकरों और कारीगरों को अपने (शेष पृष्ठ दो पर)

आउटसोर्स संबंधित मुद्दों पर मंत्रिमंडलीय उपसमिति की रिपोर्ट सैद्धांतिक रूप से स्वीकार

(पृष्ठ एक का शेष) का निर्णय लिया। बैठक में विभिन्न श्रेणियों के छः पदों के सृजन एवं भरने के साथ मण्डी जिले के थाना जंजैहली के अंतर्गत नई पुलिस चौकी खोलने को स्वीकृति प्रदान की गई।

मंत्रिमंडल ने जिला न्यायालयों के कर्मचारियों को पहली जनवरी, 2016 से संशोधित वेतनमान प्रदान करने और हिमाचल प्रदेश अधीनस्थ न्यायालय कर्मचारी (वेतन, भत्ते और सेवाओं की अन्य शर्तें) अधिनियम, 2005 में संलग्न अनुसूची में संशोधन / प्रतिस्थापन करने का भी निर्णय लिया। इससे जिला न्यायालयों के लगभग 2300 कर्मचारी लाभान्वित होंगे।

बैठक में सोलन जिले की ग्राम पंचायत नालका को कसौली थाने से हटाकर बरोटीवाला थाने के अंतर्गत लाने का निर्णय लिया गया।

मंत्रिमंडल ने प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों परवाणु और संसारपुर टैरेस में महिला यात्रियों की सुविधा के लिए कालका या परवाणु से चलने वाली तथा हरियाणा के केवल एक किलोमीटर क्षेत्र से आवाजाही करने वाली बसों और संसारपुर टैरेस या तलवाड़ा से चलने वाली तथा पंजाब के केवल तीन किलोमीटर क्षेत्र से गुजरने वाली हिमाचल पथ परिवहन निगम की बसों के किराये में 50 प्रतिशत छूट प्रदान करने का निर्णय लिया।

मंत्रिमण्डल ने हिमाचल प्रदेश चिकित्सा शिक्षा विभाग के शैक्षणिक संकाय को लाभान्वित करने के लिए टाइम बाउंड डेजिग्नेशन स्कीम (अपग्रेडेशन) 2014 में संशोधन को भी मंजूरी प्रदान की।

बैठक में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला अमरोह में विज्ञान और वाणिज्य की कक्षाएं और राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला भुक्कड़ में वाणिज्य कक्षाएं शुरू करने के साथ-साथ आवश्यक पदों के सृजन एवं भरने का निर्णय लिया गया।

बैठक में चम्बा जिले की राजकीय माध्यमिक पाठशाला भंदार को स्तरोन्नत करने तथा आवश्यक पदों के सृजन को भी स्वीकृति प्रदान की गई।

मंत्रिमण्डल ने शिमला जिला की राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला क्यार में विज्ञान एवं वाणिज्य की कक्षाएं आरम्भ करने तथा आवश्यक पदों के सृजन एवं भरने का निर्णय लिया।

बैठक में सोलन जिला के राजकीय स्नातक महाविद्यालय ममलीग में विभिन्न श्रेणियों के 16 पद सृजित कर भरने तथा आवश्यक अधोसंरचना के निर्माण के लिए 5 करोड़ रुपये प्रदान करने को स्वीकृति प्रदान की गई।

मंत्रिमण्डल ने सोलन जिला के नालागढ़ विधानसभा क्षेत्र की राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला रतवाड़ी, दभोटा, राजपुरा एवं डोली में वाणिज्य कक्षाएं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला नंड एवं भाटियां में विज्ञान तथा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला गोयला पनेड़, रेड्डू एवं गुल्लरवाला में विज्ञान एवं वाणिज्य की कक्षाएं प्रारंभ करने तथा आवश्यक पदों के सृजन और भरने का निर्णय लिया।

बैठक में सोलन जिला के दून विधानसभा क्षेत्र में राजकीय माध्यमिक विद्यालय तुझार को राजकीय उच्च विद्यालय में स्तरोन्नत करने तथा आवश्यक पदों को सृजित कर भरने को भी स्वीकृति प्रदान की गई।

मंत्रिमंडल ने किन्नौर जिला में पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जिला के रिकांग पिओ में स्टाफ के आवश्यक पदों सहित सहायक जिला पर्यटन विकास अधिकारी का पद सृजित कर भरने की स्वीकृति प्रदान की।

बैठक में मुद्रण एवं लेखन सामग्री विभाग में अनुबंध एवं दैनिक वेतनभोगी आधार पर विभिन्न श्रेणियों के 40 पद भरने को भी स्वीकृति प्रदान की गई। मंत्रिमंडल ने चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के शिक्षकों/ वैज्ञानिकों को सातवें वेतन आयोग के अनुसार संशोधित वेतनमान प्रदान करने को भी स्वीकृति प्रदान की। इससे विश्वविद्यालय के 240 से अधिक शिक्षकों को लाभ मिलेगा।

मंत्रिमंडल के निर्णय

- **जिला न्यायालयों के कर्मचारियों को संशोधित वेतनमान**
- **चौ. सरवण कुमार हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय के शिक्षकों व वैज्ञानिकों, डॉ. वाई.एस. परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय के शिक्षकों व इनके समकक्ष काडर के अधिकारियों को संशोधित वेतनमान**

मंत्रिमंडल ने कैडर समीक्षा समिति की अनुशंसा पर हिमाचल प्रदेश प्रशासनिक सेवाओं की कुल कैडर क्षमता 228 से बढ़ाकर 246 करने को भी स्वीकृति प्रदान की।

मंत्रिमंडल ने सिरमौर जिला की कमरऊ तहसील में 11 पटवार वृतों को पुनर्गठित कर सात नए पटवार वृत सृजित करने और इनके लिए आवश्यक पदों के सृजन एवं भरने को स्वीकृति प्रदान की। बैठक में कांगड़ा जिले के उप स्वास्थ्य केंद्र गाहलियां को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में स्तरोन्नत करने और आवश्यक पदों के सृजन एवं भरने की स्वीकृति प्रदान की गई।

मंत्रिमंडल ने मंडी जिला की निहरी तहसील के जनोह में आवश्यक पदों के सृजन एवं भरने के साथ स्वास्थ्य उपकेंद्र खोलने की भी स्वीकृति प्रदान की। बैठक में कांगड़ा जिला के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र तकीपुर को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में स्तरोन्नत कर आवश्यक पदों को सृजित कर भरने की स्वीकृति प्रदान की गई।

मंत्रिमंडल ने कुल्लू जिला की बंजार तहसील के स्वास्थ्य उपकेंद्र दयोरी को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में स्तरोन्नत करने और आवश्यक पदों के सृजन एवं भरने को स्वीकृति प्रदान की। मंत्रिमंडल ने कुल्लू जिला की बंजार तहसील के स्वास्थ्य उपकेंद्र बठाड़ को आवश्यक पदों के सृजन एवं भरने के साथ प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में स्तरोन्नत करने की स्वीकृति प्रदान की।

मंत्रिमंडल ने कांगड़ा जिला की ग्राम पंचायत रानीताल में आवश्यक पदों के सृजन एवं भरने के साथ प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र खोलने को स्वीकृति प्रदान की।

बैठक में मंडी जिला के बालीचौकी क्षेत्र के चोड़ी बटवाड़ा में स्वास्थ्य उपकेंद्र खोलने और इसके लिए आवश्यक पदों के सृजन एवं भरने को स्वीकृति प्रदान की गई। बैठक में सिरमौर जिला के कोटला बांगी (राजगढ़) में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र खोलने और इसके लिए आवश्यक पदों के सृजन एवं भरने को स्वीकृति प्रदान की गई।

मंत्रिमंडल ने मंडी जिला की चच्योट तहसील की ग्राम पंचायत गुडार में आवश्यक पदों के सृजन एवं भरने के साथ उप स्वास्थ्य केंद्र खोलने को स्वीकृति प्रदान की। बैठक में मंडी जिला की थुनाग तहसील के केयोली में आवश्यक पदों के सृजन एवं भरने के साथ उप स्वास्थ्य केंद्र खोलने को स्वीकृति प्रदान की गई।

बैठक में कांगड़ा जिला की सुलह विधानसभा क्षेत्र में नया प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खोलने तथा आवश्यक पद सृजित कर भरने का निर्णय लिया गया। बैठक में मण्डी जिला के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र बागाचनोगी को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में स्तरोन्नत करने तथा आवश्यक पद सृजित कर भरने का निर्णय लिया गया।

बैठक में मंडी जिला के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बालीचौकी को 50 बिस्तर की क्षमता वाले नागरिक अस्पताल में स्तरोन्नत करने तथा आवश्यक पद सृजित कर भरने का निर्णय लिया गया। मंत्रिमंडल ने मंडी जिला की जोगिन्द्रनगर तहसील की ग्राम पंचायत गुम्मा में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खोलने के साथ आवश्यक पदों को सृजित कर भरने का निर्णय लिया।

बैठक में कांगड़ा जिला के स्वास्थ्य उपकेन्द्र राजनाल को स्तरोन्नत कर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (पीएचसी) में स्तरोन्नत करने तथा आवश्यक पदों को सृजित कर भरने को स्वीकृति प्रदान की गई। बैठक में मण्डी जिला की बालीचौकी तहसील के धंडाली में स्वास्थ्य उपकेन्द्र खोलने के साथ आवश्यक पदों को सृजित कर भरने को स्वीकृति प्रदान की गई।

मंत्रिमंडल ने कांगड़ा जिला के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र कंडबाड़ी को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) में स्तरोन्नत करने के साथ ही आवश्यक पदों को सृजित कर भरने को स्वीकृति प्रदान की। बैठक में कांगड़ा जिला की पालमपुर तहसील के होल्टा में स्वास्थ्य उपकेन्द्र खोलने के साथ आवश्यक पदों को सृजित कर भरने का निर्णय लिया गया। बैठक में ऊना जिला की राजकीय प्राथमिक पाठशाला गगोह को राजकीय केन्द्रीय प्राथमिक पाठशाला में परिवर्तित करने का निर्णय लिया गया।

मंत्रिमंडल ने मण्डी जिला के गोथला, कांढी एवं जैशला में नई प्राथमिक पाठशालाएं खोलने को स्वीकृति प्रदान की।

बैठक में कुल्लू जिला के शिक्षा खंड कुल्लू के अंतर्गत बलरगा में नई प्राथमिक पाठशाला खोलने का निर्णय लिया गया। मंत्रिमंडल ने सिरमौर जिला के प्रारंभिक शिक्षा खंड कार्यालय पांवटा साहिब, सतौन व कफोटा का पुनर्गठन कर खोदोवाला में नया प्रारंभिक शिक्षा खंड कार्यालय खोलने का निर्णय लिया। बैठक में मण्डी जिला की ग्राम पंचायत सोमगार्ड के धनोट गांव में नई प्राथमिक पाठशाला खोलने को स्वीकृति प्रदान की गई।

बैठक में मण्डी जिला के राजकीय प्राथमिक पाठशाला केल्टी और थुनारीगढ़ को राजकीय केन्द्रीय प्राथमिक पाठशाला बनाने की भी स्वीकृति प्रदान की गई।

मंत्रिमंडल ने कुल्लू जिला के कुमारहट्टी गांव (मनाली क्षेत्र) में नया पशु औषधालय खोलने के साथ ही आवश्यक पदों को सृजित कर उन्हें भरने का भी निर्णय लिया।

बैठक में मण्डी जिला के थुनाग के शिहाल गांव में नया आयुर्वेदिक स्वास्थ्य केन्द्र खोलने के साथ आवश्यक पदों को सृजित कर भरने का निर्णय लिया गया। मंत्रिमंडल ने बैजनाथ तहसील पटवार वृत्त बीड़ का पुनर्गठन कर चौगान में नया पटवार वृत्त खोलने का निर्णय लिया। बैठक में मण्डी जिला की चच्योट तहसील के तहत छपराहन में नया पटवार वृत्त खोलने का निर्णय लिया गया।

बैठक में परवाणू शहरी और परवाणू ग्रामीण में दो नए पटवार वृत्त बनाने की स्वीकृति प्रदान की गई।

मंत्रिमंडल ने सीजीएसटी मंडल एवं सीजीएसटी रेंज मण्डी के लिए कार्यालय भवन एवं आवासीय आवास निर्माण के लिए केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड के नाम बिक्री आधार पर 2,17,89,414 रुपये शुल्क के साथ नियमित स्वामित्व में भूमि हस्तान्तरित करने की स्वीकृति प्रदान की।

बैठक में सोलन जिला में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र जोघों को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के रूप में स्तरोन्नत करने व आवश्यक पदों के सृजन एवं भरने का निर्णय लिया गया।

मंत्रिमंडल ने भारतीय हवाई अड्डा प्राधिकरण के साथ मण्डी इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटिड नाम से संयुक्त उद्यम की स्थापना को भी मंजूरी प्रदान की। इसमें प्रदेश सरकार की 51 प्रतिशत पूंजीगत हिस्सेदारी और भारतीय हवाई अड्डा प्राधिकरण की 49 प्रतिशत पूंजीगत हिस्सेदारी होगी।

बैठक में आवश्यक पदों के सृजन एवं भरने के साथ-साथ मण्डी जिले के पंजाईं एवं शिल्लीबागी में उद्यान प्रसार केन्द्र खोलने का निर्णय लिया गया।

मंत्रिमंडल ने खौली-द्वितीय और 126 मेगावाट की छतड़ू पन बिजली परियोजनाओं को अपफ्रंट प्रीमियम की दरों पर बीओओटी आधार पर नियम एवं शर्तों के अनुसार निजी क्षेत्र को आवंटित करने का निर्णय लिया।

बैठक में शिमला जिले के शोघी औद्योगिक क्षेत्र में पर्यटन एवं यात्रा संबंधी सेवाओं की स्थापना के लिए 1000 वर्ग मीटर की सीमा शर्त में ढील देते हुए 500 वर्ग मीटर करने को मंजूरी प्रदान की गई।

बैठक में आवश्यक पदों के सृजन एवं भरने के साथ-साथ मण्डी जिले के बालीचौकी में ओक टसर रेशम उत्पादन प्रभाग स्थापित करने का निर्णय लिया गया। मंत्रिमंडल ने डॉ. यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी के शिक्षकों और इनके समकक्ष कैडर के अधिकारियों को पहली जनवरी 2016 से यूजीसी के तर्ज पर संशोधित वेतनमान प्रदान करने का निर्णय लिया गया।

मंत्रिमंडल ने हमीरपुर जिला के भरठियां के राजकीय उच्च विद्यालय को वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला तथा सिरमौर जिले की राजकीय माध्यमिक पाठशाला पनयाली को राजकीय उच्च पाठशाला में स्तरोन्नत करने का निर्णय लिया।

बैठक में मण्डी जिला की प्राथमिक पाठशाला भलवाड़ और तुंगाधार, बिलासपुर जिला की राजकीय प्राथमिक पाठशाला शोरा ब्यूंस, साई खारसी और पिपल घाट, कांगड़ा जिला की राजकीय प्राथमिक पाठशाला बड़ुखर, सिरमौर जिला की राजकीय प्राथमिक पाठशाला भूपपुर, कुल्लू जिला की प्राथमिक पाठशाला मनिहार, कोइशुधर, खद्याणा, रामनगर, रास्कट और डोभी, शिमला जिला की राजकीय प्राथमिक स्कूल दावन को राजकीय माध्यमिक पाठशालाओं में स्तरोन्नत करने के साथ आवश्यक पदों के सृजन एवं भरने का निर्णय लिया गया।

बैठक में प्रदेश में हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड लिमिटिड द्वारा संचालित किए जा रहे सभी विद्यालयों को स्टाफ सहित शिक्षा विभाग में हस्तांतरित करने की सैद्धांतिक मंजूरी प्रदान की गई। इस संबंध में प्रस्ताव मुख्यमंत्री के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा, जिन्हें इस संबंध में आगामी कार्रवाई करने के लिए अधिकृत किया गया।

बैठक में कुल्लू जिला की राजकीय प्राथमिक पाठशाला रंबी तथा शरई तथा जिला बिलासपुर की राजकीय प्राथमिक पाठशाला संदयार को स्तरोन्नत करने तथा आवश्यक पदों को सृजित कर भरने का निर्णय लिया गया।

सरकार की कल्याणकारी योजनाओं से सुनिश्चित हुआ...

(पृष्ठ एक का शेष) द्वारा संचालित स्वयं सहायता समूहों के आर्थिक सशक्तिकरण के 40 हजार रुपये के रिवॉल्विंग फंड की व्यवस्था की है। मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना में महिलाओं को 35 प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है। गृहिणी सुविधा योजना के तहत प्रदेश की लगभग 3.35 लाख महिलाओं को निःशुल्क गैस कुनेक्शन दिए गए हैं।

मुख्यमंत्री ने खोडाथाच में 1.75 करोड़ और खौली में 3.49 करोड़ से बनने वाले नेचर पार्कों के शिलान्यास भी किए। उन्होंने कहा कि सत्ता संभालने के पहले दिन से ही सरकार ने गरीबों, कमजोर वर्गों और महिलाओं सहित समाज के हर वर्ग के कल्याण के लिए कार्य करना शुरू कर दिया था। आज प्रदेश में 60 वर्ष से अधिक आयु के सभी लोगों को सामाजिक सुरक्षा पेंशन दी जा रही है। उन्होंने बताया कि पहले लगभग चार लाख लोगों को पेंशन मिल रही थी, जबकि आज 7.50 लाख से अधिक पात्र लोगों को यह पेंशन दी जा रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पांच वर्षों के दौरान प्रदेश सरकार ने हर क्षेत्र का चहुमुखी विकास और समाज के हर वर्ग का कल्याण सुनिश्चित किया है। उन्होंने कहा कि विकास की इस गति को कायम रखने तथा केंद्र सरकार की मजबूती के लिए हिमाचल प्रदेश में दोबारा भाजपा की सरकार बनना जरूरी है। जय राम ठाकुर ने कहा कि प्रदेश में भाजपा फिर सत्ता में आएगी और इसमें महिलाओं की भूमिका निर्णायक होगी। उन्होंने कहा कि विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के कारण प्रदेश की महिलाएं भाजपा को भारी समर्थन देंगी।

इस अवसर पर केंद्रीय विदेश और संस्कृति राज्य मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी ने भी महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आठ वर्ष पहले देश की बागडोर संभालते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि उनकी सरकार गांव, गरीब और आम जन की सरकार होगी, जिसमें सबका साथ और सबका विकास सुनिश्चित होगा। इन आठ वर्षों के दौरान प्रधानमंत्री ने इसे सार्थक साबित किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने स्वच्छ भारत मिशन के माध्यम से करोड़ों शौचालय बनवाए, जिनका सबसे ज्यादा लाभ महिलाओं को हुआ। मीनाक्षी लेखी ने कहा कि 70 वर्षों के दौरान देश के आठ करोड़ घरों में नल लगाए गए थे, जबकि मोदी सरकार ने जल जीवन मिशन आरंभ करके केवल ढाई वर्षों में ही लगभग 8.64 करोड़ घरों में नल लगवाए।

इस मिशन का भी महिलाओं को सबसे ज्यादा लाभ हुआ। उन्होंने कहा कि हिमाचल के चहुमुखी विकास के लिए राज्य और केंद्र में डबल इंजन सरकार जरूरी है। इस अवसर पर भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष रश्मिधर सूद, महामंत्री मांचली ठाकुर, जिला अध्यक्ष सुमन ठाकुर, भाजपा नेत्री खेमदासी और रजनी ठाकुर सहित बड़ी संख्या में महिलाएं उपस्थित रहीं।

आकर्षण का केन्द्र होगा 'देव लोक': मुख्यमंत्री

(पृष्ठ एक का शेष) उत्पाद के प्रोत्साहन, प्रदर्शन और बाजार उपलब्ध करने का अवसर प्राप्त होगा। उन्होंने कहा कि 22 एकड़ में फैली यह परियोजना साहसिक पर्यटन प्रेमियों के लिए आकर्षण का केन्द्र साबित होगी।

शिक्षा मंत्री श्री गोविन्द सिंह ठाकुर ने कहा कि 'देव लोक' इस क्षेत्र में आने वाले पर्यटकों के लिए एक बड़ा आकर्षण होगा। उन्होंने कहा कि इसके माध्यम से पर्यटकों को हिमाचल प्रदेश के समृद्ध और विविध इतिहास के बारे में जानने का अवसर प्राप्त होगा। उन्होंने इस महत्त्वाकांक्षी योजना में स्थानीय लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए दीपा साही का आभार व्यक्त किया।

प्रसिद्ध अभिनेता, निर्देशक और देव लोक के प्रोमोटर दीपा साही और केतन मेहता ने मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुए कहा कि यह प्रोजेक्ट हिमाचल प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को प्रोत्साहित तथा संरक्षित करने में मील पत्थर साबित होगा। उपायुक्त कुल्लू आशुतोष गर्ग, पुलिस अधीक्षक गुरुदेव शर्मा और अन्य वरिष्ठ अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री द्वारा सराज विधानसभा क्षेत्र को 167 करोड़ की विकास परियोजनाएं समर्पित

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों सराज विधानसभा क्षेत्र के अपने एक दिवसीय प्रवास के दौरान लगभग 167 करोड़ रुपये की 27 विकासात्मक परियोजनाओं के उद्घाटन व शिलान्यास किए। उन्होंने बगस्याड़, परवाड़ा, कयोलीधार, बाखली, हणोगी तथा बाड़ा में जनसभाओं को सम्बोधित किया।

मुख्यमंत्री ने स्थानीय जनता की मांग पर नागरिक अस्पताल बगस्याड़ को 50 बिस्तर से बढ़ाकर 100 बिस्तर के अस्पताल में स्तरोन्नत करने और बगस्याड़ में पुलिस चौकी खोलने, गाड़ से परमेली, सरली से नहाच तथा छोई पाल से सलार सड़कों के निर्माण को 10-10 लाख प्रदान करने की भी घोषणा की। उन्होंने बगस्याड़ में मृदा परीक्षण प्रयोगशाला खोलने का भी आश्वासन दिया। इस अवसर पर श्री जय राम ठाकुर ने 4.28 करोड़ रुपये से परवाड़ा में निर्मित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला के अतिरिक्त भवन का लोकार्पण किया। उन्होंने 1.72 करोड़ की उठाऊ जलापूर्ति योजना टिक्कर, बह तथा बटांड, केलोधार में 54 लाख से निर्मित कनिष्ठ अभियन्ता कार्यालय एवं आवास भवन, ग्राम पंचायत तांदी, सरोआ, थरजून, मसरानी, बासी, देवधार, खारशी तथा कोटला खुनाला के लिए 39.43 करोड़ की जलापूर्ति योजना, 6.14 करोड़ की उठाऊ जलापूर्ति योजना कालीगढ़ तथा बाड़ा, बाड़ा में 1.55 करोड़ से निर्मित जल शक्ति विभाग का निरीक्षण कुटीर तथा बाखली में सात करोड़ से निर्मित नेचर पार्क का लोकार्पण किया।

मुख्यमंत्री ने एक करोड़ से निर्मित इंटरप्रेटेशन सेंटर बाखली, 59 लाख से

नागरिक अस्पताल बगस्याड़ को 100 बिस्तर के अस्पताल में स्तरोन्नत करने की घोषणा

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला के लोधार में निर्मित विज्ञान प्रयोगशाला, बगस्याड़ में 28.44 से निर्मित 50 बिस्तरों वाले नागरिक अस्पताल का लोकार्पण किया।

उन्होंने 2.43 करोड़ से बगस्याड़ में निर्मित औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, 4.55 करोड़ से राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला बगस्याड़ के अतिरिक्त भवन, 24.89 करोड़ से हणोगी में बने केबल स्टैंड पुल, 77 लाख से निर्मित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला शारटी के भवन का लोकार्पण किया। उन्होंने तहसील थुनाग में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला कानधा, राजकीय उच्च विद्यालय अनाह और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बांदल का शुभारम्भ भी किया। मुख्यमंत्री ने 43.31 करोड़ की विभिन्न विकासात्मक परियोजनाओं के शिलान्यास किए।

बगस्याड़ में आयोजित जनसभा को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने पिछले लगभग पांच वर्षों के दौरान सराज विधानसभा क्षेत्र में 224 करोड़ की विभिन्न जलापूर्ति योजनाओं के कार्य प्रगति पर हैं। उन्होंने कहा कि थाची, बागा चनोगी व छतरी में उप तहसील कार्यालय खोले गए। छतरी को डिग्री कॉलेज की सौगात दी गई है। बागा चनोगी में आईटीआई तथा जल शक्ति विभाग का उपमण्डल कार्यालय खोला गया है। 8.27 करोड़ से लम्बाथाच में कॉलेज का निर्माण किया गया है। उन्होंने कहा कि थुनाग में 240 करोड़ से औद्यानिकी व वानिकी महाविद्यालय के भवन का निर्माण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि शाटाधार, तुंगासीधार, घाटीधार जैसे कठिन क्षेत्रों तक सड़कें पहुंचाई गई हैं।

मौंही में 12.60 करोड़ से बनेगा आई.टी.आई. भवन

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों जिला मण्डी के सरकाघाट विधानसभा क्षेत्र में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सरकाघाट के खेल मैदान में आयोजित 'प्रगतिशील हिमाचल : स्थापना के 75 वर्ष' समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर उन्होंने क्षेत्र में लगभग 62 करोड़ की विकासात्मक परियोजनाओं के लोकार्पण एवं शिलान्यास किए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने 3.95 करोड़ की बही-सुलपुर-जाहू सड़क पर निर्मित जबोठी पुल, 60 लाख लागत के लोक निर्माण विभाग के विश्राम गृह जमणी तथा राजकीय महाविद्यालय बल्द्वाड़ा में विज्ञान संकाय की कक्षाओं का शुभारम्भ किया। मुख्यमंत्री ने 12.60 करोड़ से औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान मौंही के भवन, 1.50 करोड़ से भदरोल सड़क में कलथरी पुल, 2.25 करोड़ से संपर्क मार्ग पंचवटी पार्क काश से भदरोता और 53 लाख से पेयजल योजना जांगल ठनकर के पुनर्निर्माण (ग्राम पंचायत टिक्कर), नाबार्ड के अंतर्गत 2.23 करोड़ की जल शक्ति उपमंडल भद्रवाड़ की विभिन्न बहाव सिंचाई योजनाओं के पुनर्निर्माण एवं सुधार, 61 लाख की उठाऊ पेयजल योजना रोपा ठाठर के पुनर्निर्माण, 1.51 करोड़ के लोक निर्माण विभाग के विश्राम गृह बल्द्वाड़ा, नागरिक चिकित्सालय बल्द्वाड़ा और 12.66 करोड़ से राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बतैल के भवन, 14.89 करोड़ से राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान भदरोता के भवन का शिलान्यास किया। उन्होंने 7.33 करोड़ के हि. प्र राज्य बिजली बोर्ड के विद्युत उपमंडल बल्द्वाड़ा में 33 के.वी. के विद्युत वितरण केंद्र समैला तथा अटल आदर्श विद्यालय सिरोहली के भवन का शिलान्यास भी किया।

बल्ह के चक्कर में खुला दुग्ध प्रसंस्करण संयंत्र

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों मंडी जिला के बल्ह विधानसभा क्षेत्र के चक्कर में 16.32 करोड़ की लागत से निर्मित 50 हजार लीटर क्षमता के नए दुग्ध प्रसंस्करण संयंत्र का लोकार्पण किया। उन्होंने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गागल और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र राजगढ़ का भी लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि यह प्लांट अर्ध-स्वचालित ढंग से दुग्ध प्रसंस्करण की सुविधा प्रदान करेगा।

चक्कर में जनसभा को संबोधित करते हुए श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि हिमाचल प्रदेश दुग्ध प्रसंघ द्वारा वर्ष 2021-22 में प्रदेश के 47295 किसानों से 395 लाख लीटर दूध की खरीद कर किसानों को 110.56 करोड़ प्रदान किए गए। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार के कार्यकाल में दूध की खरीद में 78 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

विधानसभा चुनाव को लेकर निर्वाचन आयोग सक्रिय

हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव को लेकर चुनाव आयोग सक्रिय हो गया है। चुनाव आयोग के प्रतिनिधि-मंडल ने प्रदेश का दौरा कर सभी हितधारकों के साथ बैठक की जिसमें आगामी चुनावों को लेकर समीक्षा की गई। यह जानकारी गत दिनों शिमला में भारत निर्वाचन आयोग के मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने पत्रकारों से बातचीत के दौरान दी। उन्होंने कहा कि प्रदेश के तीन जनजातीय विधानसभा क्षेत्र लाहुल-स्पीति, किन्नौर और पांगी में 15 से 20 नवंबर के बाद बर्फबारी और ठंड के चलते दिक्कतें बढ़ जाती हैं। यह मामला चुनाव आयोग के ध्यान में है। इसके लिए चुनाव आयोग की ओर से तैयारियां की जा रही हैं।

उन्होंने कहा कि राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ हुई बैठक में सुझाव आया है कि जनजातीय क्षेत्रों में बर्फबारी की समस्या को देखते हुए पहले चुनाव करवाए जाए। वर्तमान सरकार का कार्यकाल आठ जनवरी, 2023 को पूरा हो जाएगा। ऐसे में आठ जनवरी 2023 से पहले चुनाव प्रक्रिया पूरी करवाई जाएगी।

प्रदेश में कुल 48 सामान्य, 17 अनुसूचित जाति और तीन जनजातीय विधानसभा क्षेत्र हैं। राज्य में कुल 53.80 लाख मतदाता पंजीकृत हैं। इनमें 100 साल से ज्यादा उम्र के 1294 वोटर हैं। शारीरिक रूप से अक्षम वोटर 67793 हैं। बुजुर्ग और शारीरिक रूप से अक्षम वोटरों को मतदान के लिए विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जा रहा है।

मुख्य चुनाव आयुक्त ने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव में 50 प्रतिशत मतदान केंद्रों पर वेबकास्टिंग की जाएगी। प्रदेश में कुल 7881 मतदान केंद्र हैं। इनमें से ग्रामीण इलाकों में कुल 7235 मतदान केंद्र हैं। ऐसे में चार हजार मतदान केंद्रों में वेब कास्टिंग होगी। 142 मतदान केंद्रों में महिला कर्मचारी ही ड्यूटी पर तैनात रहेंगी और सुरक्षा भी महिला पुलिस ही संभालेंगी। वहीं 38 मतदान केंद्रों को सिर्फ दिव्यांग संभालेंगे।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में प्रलोभन मुक्त, पारदर्शी व निष्पक्ष चुनाव करवाने के लिए निर्वाचन आयोग प्रतिबद्ध है और आयकर, आबकारी, पुलिस, खनन विभाग, बैंकों और एयरपोर्ट प्रशासन सहित सभी एजेंसियों को सर्तक रहने के निर्देश दे दिए गए हैं।

विकासनगर में तीन करोड़ से बने लिफ्ट एवं फुट ओवर ब्रिज

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों शिमला शहर के विकासनगर में लगभग तीन करोड़ से स्मार्ट सिटी मिशन के तहत पहले चरण में निर्मित लिफ्ट और फुट ओवर ब्रिज का शुभारंभ किया। पुलिस चौकी विकासनगर के पास बनी 36 मीटर ऊंची यह लिफ्ट लोगों को सीधे राष्ट्रीय राजमार्ग तक पहुंचाएगी। इस लिफ्ट में 20 लोग एक साथ आ-जा सकेंगे और उन्हें चढ़ाई से भी छुटकारा मिलेगा। वहीं खलीणी-पंथाघाटी सड़क पर विकासनगर के 53 मीटर लंबे फुट ओवर ब्रिज से लोगों को बिना किसी दुर्घटना के खतरे से सड़क पार करने में आसानी होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि विकासनगर में लिफ्ट बनने से स्थानीय निवासियों, नौकरी पेशा लोगों और स्कूली बच्चों को सबसे अधिक लाभ होगा। उन्होंने कहा कि यह परियोजना रोपवेज़ एंड रैपिड ट्रांसपोर्ट सिस्टम डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा क्रियान्वित की जा रही है। प्रथम चरण के कार्य के उपरांत अब दूसरे चरण में 24 मीटर तथा तीसरे चरण में 29 मीटर ऊंची लिफ्ट और 44 मीटर व 47 मीटर लंबे फुट ओवर ब्रिज से विकासनगर को ब्रॉकहर्स्ट से जोड़ा जाएगा, जिसकी अनुमानित लागत 7.62 करोड़ है।

यह कार्य आगामी जून माह तक पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है। श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि छोटा शिमला तक 12.78 करोड़ की अनुमानित लागत से एक पैदल वॉक-वे परियोजना का कार्य भी जारी है।

उन्होंने कहा कि इन परियोजनाओं के पूर्ण होने पर लोगों को विकासनगर से छोटा शिमला तक सुगम आवागमन की सुविधा मिल सकेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि शिमला स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत शहर के लिए 713 करोड़ की 216 परियोजनाएं स्वीकृत की गई हैं। स्मार्ट सिटी के अंतर्गत शहर में स्मार्ट पार्किंग, फुट ओवर ब्रिज, लिफ्ट, एस्केलेटर, गरीबों के लिए पक्के घर, कारोबारियों के लिए नई दुकानें, तहबाजारियों के लिए नए स्टॉल की सुविधा प्रदान की जा रही है।

स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत शिमला शहर के लिए 713 करोड़ रुपए की 216 परियोजनाएं स्वीकृत

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि फुट ओवरब्रिज के निर्माण से संबंधित 91.19 करोड़ की 33 परियोजनाएं, निगरानी व आईटी से संबंधित करीब 45 कवरोड़ की चार परियोजनाएं और स्मार्ट सिटी मिशन के तहत स्मार्ट बस स्टॉप व सब-वे के निर्माण व ई-मोबिलिटी से संबंधित 39.15 करोड़ की 6 परियोजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि इन परियोजनाओं पर विभिन्न स्तरों पर कार्य जारी है और शीघ्र ही शिमला शहर एक नए स्वरूप में नज़र आएगा।

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर शिमला शहर के विकासनगर में लिफ्ट एवं फुट ओवर ब्रिज का लोकार्पण करते हुए

पांगणा में खुलेगा राजकीय महाविद्यालय

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों जिला मण्डी की करसोग विधानसभा क्षेत्र के करसोग में क्षेत्र के लिए लगभग 90 करोड़ की 33 विकास परियोजनाओं के लोकार्पण एवं शिलान्यास किए।

'प्रगतिशील हिमाचलः स्थापना के 75 वर्ष' कार्यक्रम के तहत आज मंडी जिले के करसोग विधानसभा क्षेत्र के करसोग में एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने पांगणा में डिग्री कॉलेज खोलने, डिग्री कॉलेज करसोग में एमए इतिहास और एमएससी की कक्षाएं आरम्भ करने की घोषणा की। उन्होंने धार में आयुर्वेदिक स्वास्थ्य केंद्र खोलने, पशु औषधालय तत्तापानी को पशु चिकित्सा अस्पताल में स्तरोन्नत करने, अशला में उप तहसील खोलने, शंश और पोखी में स्वास्थ्य उप केंद्र खोलने और खान्योल बगड़ा में वन निरीक्षण कुटीर के निर्माण की भी घोषणा की।

मुख्यमंत्री ने करसोग विधानसभा क्षेत्र में 90 करोड़ की 33 विकासात्मक परियोजनाओं के लोकार्पण व शिलान्यास किए

इससे पूर्व, मुख्यमंत्री ने तहसील करसोग की ग्राम पंचायत शाहोट और मेहंदी में चेरा खड्ड से धमून तक 3.43 करोड़ की उठाऊ जलापूर्ति योजना, 1.38 करोड़ से ईमला-बिमला खड्ड के तटीकरण, 5.05 करोड़ से सरोटा-कलाशन जलापूर्ति योजना के जीर्णोद्धार कार्य, 93 लाख से ग्राम पंचायत सेरी में जुआ-पोगली-सेरी जलापूर्ति योजना के जीर्णोद्धार कार्य, 25 करोड़ से सरौर खड्ड चुराग और तत्तापानी क्षेत्र के लिए उठाऊ जलापूर्ति योजना, माहुनाग की बस्तियों के लिए 3.14 करोड़ से निर्मित उठाऊ जलापूर्ति योजना, कण्डा-टकरोल में 54 लाख की जलापूर्ति योजना, बिथारी खड्ड से पांगणा के लिए एक करोड़ से निर्मित जलापूर्ति योजना, खील में 24 लाख से निर्मित आयुर्वेदिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा चुराग में 81 लाख से निर्मित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के भवन का उद्घाटन किया।

इसके अलावा मुख्यमंत्री ने करसोग में तीन करोड़ से निर्मित बस अड्डा, बगशाड़ में 78 लाख से निर्मित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 2.59 करोड़ से निर्मित तुमन पुल, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला तत्तापानी में 89 लाख से निर्मित विज्ञान प्रयोगशाला भवन, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला सेरी बंगलो में 96 लाख से निर्मित विज्ञान प्रयोगशाला, नागरिक चिकित्सालय करसोग में 82 लाख के पीएसए प्लांट, विकास खण्ड कार्यालय में ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग का 44 लाख का समिति हॉल तथा 31 लाख से निर्मित प्लांट हैल्थ क्लीनिक पांगणा के भी उद्घाटन किए।

मुख्यमंत्री ने पशु औषधालय आशला को पशु चिकित्सालय में, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र अशला को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा स्वास्थ्य केन्द्र खन्योल बगड़ा को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खन्योल बगड़ा में स्तरोन्नत करने के उपरान्त इसका शुभारम्भ भी किया।

गिरिराज
हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

जिंदगी अपने दम पर जी जाती है, दूसरों के कंधों पर तो सिर्फ जनाजे उठते हैं।
- भगत सिंह

संवरता बालपन

बच्चों का भविष्य इस पर निर्भर करता है कि बालपन में उसके मस्तिष्क का विकास किस तरह से हुआ। जन्म से लेकर छः वर्ष तक की उम्र बच्चे के स्वास्थ्य एवं मानसिक विकास के लिए असाधारण होती है। सीखने और उत्तम शारीरिक स्वास्थ्य इसी समयावधि पर निर्भर करता है। किसी भी राष्ट्र का विकास एवं उत्थान अगली पीढ़ी पर ही गहरे से जुड़ा है। अतः बचपन को लोरियां भी चाहिए और अच्छा मानसिक एवं शारीरिक विकास भी। इसी के दृष्टिगत हिमाचल प्रदेश सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में तीन से छः वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए 'हिमाचल प्रदेश आरम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षक योजना-2022' को स्वीकृति प्रदान की है। योजना इस परिकल्पना को सुदृढ़ आधार प्रदान करती है कि शुरूआती आयु में मानसिक विकास सुनिश्चित हो सके और उनकी उचित देखभाल को प्रोत्साहन मिले। योजना के तहत सामाजिक-आर्थिक रूप से सुविधाओं से वंचित जिलों और क्षेत्रों को प्राथमिकता दी जाएगी। शिक्षकों की भर्ती के लिए भर्ती एवं पदोन्नति नियम बनाये जाएंगे और जब तक उक्त नियमों को अन्तिम रूप प्रदान नहीं किया जाता तब तक शिक्षा विभाग राज्य इलैक्ट्रानिक्स विकास निगम के माध यम से आउटसोर्स पर शिक्षक नियुक्त करेगा। जिन अभ्यर्थियों ने नर्सरी टीचर एजुकेशन/प्री स्कूल एजुकेशन/पूर्व बाल्यकाल शिक्षा कार्यक्रम में एक वर्ष का डिप्लोमा प्राप्त किया है उन्हें योग्यता से मापदण्डों के अनुरूप पात्र बनाने के लिए एक ब्रिज पाठ्यक्रम तैयार किया जाएगा ताकि वह लक्षित उद्देश्यों की पूर्ति में सक्षम हों और बच्चे इससे भरपूर गुणी बन कर जीवन में तत्परता से आगे बढ़ने के योग्य बन सकें। प्रदेश में वर्तमान सरकार द्वारा पहले ही प्राथमिक पाठशालाओं में बच्चों के लिए प्री-नर्सरी कक्षाएं शुरू की गई हैं और अब तक 3391 प्राथमिक पाठशालाओं में प्री-नर्सरी को आरम्भ किया भी जा चुका है। अब हिमाचल प्रदेश सरकार ने राजकीय प्राथमिक पाठशालाओं में तीन वर्ष से छः वर्ष के नौनिहालों के लिए यह योजना लागू की है जोकि एक अहम व सराहनीय कदम है। अब इस नई योजना के परिणामस्वरूप प्राथमिक पाठशालाओं में बच्चों की संख्या में और भी वृद्धि होगी। प्रदेश में सरकार द्वारा 10,657 प्राथमिक पाठशालाएं, 1996 माध्यमिक, 922 उच्च, 1836 उच्चतम माध्यमिक पाठशालाएं संचालित हैं। आज राज्य की साक्षरता दर 86 प्रतिशत से भी अधिक है। शिक्षण संस्थानों की संख्या बढ़ कर 16,124 से भी अधिक हो गई है। प्रदेश के दूर-दराज एवं दुर्गम क्षेत्रों में स्कूल खुल चुके हैं। यही नहीं, प्रदेश में राष्ट्रीय स्तर के शिक्षण संस्थान जैसे आई. आई.टी., आई.आई. एम, केन्द्रीय विद्यालय और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान भी स्थापित हो चुके हैं जिससे प्रदेश में शिक्षा का प्रवाह निरन्तर बढ़ रहा है। चालू वित्त वर्ष के बजट में शिक्षा के विस्तार के लिए 7598 करोड़ रुपये का बजट परिव्यय प्रस्तावित है। इससे शिक्षा का आधारभूत ढांचा सुदृढ़ करने व विद्यार्थियों का भविष्य सुनहरा बनाने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता के बिंब स्वयंमेव परिलक्षित होते हैं। वर्तमान सरकार द्वारा गुणात्मक शिक्षा विस्तार एवं प्रसार के लिए अनेक योजनाएं कार्यान्वित की जा रही हैं। 'मेधा प्रोत्साहन' के तहत आर्थिक रूप से कमजोर मेधावी छात्र लाभान्वित हो रहे हैं। इन्हें बारहवीं, स्नातक के उपरांत मेडिकल इंजीनियरिंग व अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रशिक्षण के लिए वित्तीय सहायता दी जा रही है। आई.सी.टी. विद्यालय योजना राजकीय प्राथमिक विद्यालयों और उच्च विद्यालयों में लागू की गई है। इस के तहत इन विद्यालयों में सी.सी.टी.वी. की सुविधा उपलब्ध की गई है। स्वर्ण जयन्ती उत्कृष्ट विद्यालय योजना के तहत वर्ष 2020-2021 में 68 तथा 2021-22 में भी 68 अन्य वरिष्ठ प्राथमिक पाठशालाओं को स्वर्ण जयन्ती उत्कृष्ट विद्यालयों में नामित किया गया और प्रति विद्यालय 44 लाख रुपये प्रदान किये गए। अटल स्कूल वर्दी योजना के तहत पहली से बारहवीं कक्षाओं के विद्यार्थियों का स्कूल की वर्दी के दो-दो सैट प्रदान किये जा रहे हैं। निःशुल्क स्कूल बैग, पाठ्य पुस्तकें भी उपलब्ध करवाई जा रही है। अटल निर्मल योजना में प्राथमिक व माध्यमिक पाठशालाओं को टैरा-वाटर-फिल्टर व वाटर प्योरीफायर दिए जा रहे हैं। युवाओं को तकनीकी शिक्षा प्रदान करने के लिए सरकारी व निजी क्षेत्र में 363 तकनीकी शिक्षा व औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान क्रियाशील है। जिससे तकनीकी शिक्षा सुदृढ़ हो रही है। प्रदेश में शिक्षा की तस्वीर उजली है। बच्चों का भविष्य संवर रहा है। इससे सुखद अनुभूति का अहसास हम सबको है।

टी.बी. से मुक्ति की ओर भारत

✍ वीएस शैट्टी

टीबी (क्षयरोग) एक घातक संक्रामक रोग है, जो कि माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरक्लोसिस जीवाणु की वजह से होती है। टीबी (क्षयरोग) आमतौर पर ज्यादातर फेफड़ों पर हमला करता है, लेकिन यह फेफड़ों के अलावा शरीर के अन्य भागों को भी प्रभावित कर सकता है। यह रोग हवा के माध्यम से फैलता है। जब क्षयरोग से ग्रसित व्यक्ति खांसता, छींकता या बोलता है तो उसके साथ संक्रामक ड्रॉपलेट न्यूक्लीआई उत्पन्न होता है, जो कि हवा के माध्यम से किसी अन्य व्यक्ति को संक्रमित कर सकता है। ये ड्रॉपलेट न्यूक्लीआई कई घंटों तक वातावरण में सक्रिय रहते हैं। जब एक स्वस्थ व्यक्ति हवा में घुले हुए इन माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरक्लोसिस ड्रॉपलेट न्यूक्लीआई के संपर्क में आता है तो वह इससे संक्रमित हो सकता है। भारत में दुनिया के सबसे अधिक तपेदिक (टीबी) रोगी है, अनुमानित 26 लाख लोग इससे संक्रमित हैं।

हाल ही में क्षय रोग (TB) के खिलाफ देश की लड़ाई में तेजी लाने और वर्ष 2025 तक रोग को खत्म करने के प्रधानमंत्री द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये राष्ट्रपति ने प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान का शुभारंभ किया।

9 सितंबर को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने प्रधानमत्री टी.बी. मुक्त भारत अभियान के साथ 'नि-क्षय मित्र' पहल का शुभारंभ किया। इस अभियान का उद्देश्य वर्ष 2025 तक टी.बी. उन्मूलन का लक्ष्य प्राप्त करना है।

टीबी या क्षय रोग 'माइका बैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस' नामक जीवाणु के कारण होता है। यह आमतौर पर फेफड़ों को प्रभावित करता है, लेकिन शरीर के अन्य हिस्सों को भी प्रभावित कर सकता है। यह एक इलाज योग्य और साध्य रोग है।

वर्ष 2020 में टीबी से कुल 1.5 मिलियन लोगों की मृत्यु हुई और अनुमानित 10 मिलियन लोग दुनिया भर में तपेदिक (टीबी) से बीमार हुए। 2021 में तपेदिक के मामलों में 19 प्रतिशत की बढ़ोतरी देखने को मिली है। राष्ट्रीय टीबी कार्यक्रम की शुरुआत वर्ष 1962 में हुई थी। वर्ष 1993 में राष्ट्रीय टीबी कार्यक्रम में संशोधन किया गया। हर सरकार ने टीबी मुक्त भारत बनाने की कोशिश की लेकिन अब केंद्र सरकार ने 2025 तक भारत को टीबी मुक्त बनाने का संकल्प लिया है।

वर्ष 2021 में टी.बी. से संबंधित 21 लाख मामलों को अधिसूचित किया गया। भारत में प्रतिवर्ष 20-25 लाख टी.बी. के मामले सामने आते हैं और लगभग चार लाख लोगों की इससे मृत्यु हो जाती है। सितम्बर 2019 में राष्ट्रीय टीबी प्रसार सर्वेक्षण के साथ स्वास्थ्य मंत्रालय ने 'टीबी हारेगा, देश जीतेगा' अभियान की शुरुआत की थी। टीबी भारत में अन्य सभी संक्रामक रोगों में सबसे अधिक मौतों का कारण बनती है ।

टीबी यानी क्षयरोग आमतौर पर ज्यादातर फेफड़ों पर हमला करता है, लेकिन यह फेफड़ों के अलावा शरीर के अन्य भागों को भी प्रभावित कर सकता है। यह रोग हवा के माध्यम से फैलता है। जब क्षयरोग से ग्रसित व्यक्ति खांसता, छींकता या बोलता है तो उसके साथ संक्रामक ड्रॉपलेट न्यूक्लीआई उत्पन्न होता है, जो कि हवा के माध्यम से किसी अन्य व्यक्ति को संक्रमित कर सकता है।

भारत में दुनिया की आबादी का 20 प्रतिशत से थोड़ा कम है, लेकिन दुनिया के कुल टीबी रोगियों का 25 प्रतिशत से अधिक है। जो चिंता की बात है। उल्लेखनीय है कि देशभर में वर्ष 2018 से अब तक 65 लाख से अधिक टी.बी. मरीजों की पहचान की गयी जिनके इलाज के लिये सरकारी योजनाओं के तहत 1,707 करोड़ रुपए आबंटित किये जा चुके हैं। प्रधानमंत्री टी.बी. मुक्त भारत अभियान वर्ष 2025 तक टीबी उन्मूलन की दिशा में देश की प्रगति में तेजी लाने के लिये स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की एक पहल है।

प्रधानमंत्री टी.बी. मुक्त भारत अभियान के हिस्से के रूप में टी.बी. रोगियों को किसी व्यक्ति, किसी प्रतिनिधियों या संस्थानों द्वारा गोद लिया जा सकता है। सामुदायिक समर्थन में संलग्न इन लोगों और संस्थानों को 'निक्षय मित्र' कहा जाएगा। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने मार्च 2018 में हुए 'दिल्ली एंड टीबी समिट' में 2030 के सतत् विकास लक्ष्य से पांच साल पहले देश को टीबी मुक्त बनाने का आह्वान किया था।

इस योजना के तहत व्यक्ति, गैर सरकारी संगठन और कॉरपोरेट 1-3 वर्ष के लिये समर्थन देकर टी.बी. रोगियों को गोद ले सकते हैं। सामुदायिक समर्थन से रोगियों के लिये पोषण, अतिरिक्त उपचार में सहायता और उनके परिवार के लोगों के लिये व्यावसायिक प्रशिक्षण का प्रबंध करना शामिल है। टी.बी. रोगी के परिवार के सदस्यों को व्यावसायिक प्रशिक्षण देने से उनके परिवारों पर आर्थिक दबाव कम हो सकता है। इस अभियान का प्रमुख उद्देश्य सभी टी.बी. रोगियों की पहचान करते हुए उन्हें आवश्यक निःशुल्क उपचार सुलभ करना है। प्रधानमंत्री टी.बी. मुक्त भारत अभियान के तहत नि-क्षय मित्र पहल का भी शुभारंभ किया गया है। इसका प्रमुख उद्देश्य टी.बी. के उपचार में अतिरिक्त नैदानिक, पोषण और व्यावसायिक सहायता सुनिश्चित करना है। साथ ही, उपचार में सहयोग के लिये निर्वाचित प्रतिनिधियों, गैर-सरकारी संगठनों और व्यक्तियों को दाताओं के रूप प्रोत्साहित करना है। इसके लिये नि-क्षय 2.0 पोर्टल लांच किया गया है। डिजिटल पोर्टल नि-क्षय टी.बी रोगियों को सामुदायिक सहायता के लिये एक मंच प्रदान करेगा। नि-क्षय पोर्टल में लगभग 13.5 लाख टी.बी. रोगी पंजीकृत हैं। इसमें से 8.9 लाख सक्रिय टी.बी. रोगियों ने गोद लेने के लिये अपनी सहमति दे दी है। उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र जैसे कुछ राज्यों में 'नि-क्षय मित्र' नामक पहल पहले से ही चल रही है।

प्रधानमंत्री टी.बी. मुक्त भारत अभियान और नि-क्षय पहल का उद्देश्य टी.बी. रोगियों के उपचार परिणामों में सुधार के लिये अतिरिक्त रोगी सहायता प्रदान करना है। वर्ष 2025 तक टी.बी. को समाप्त करने की भारत की प्रतिबद्धता को पूरा करने में सामुदायिक भागीदारी बढ़ाना और कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) गतिविधियों का लाभ उठाना है। नि-क्षय मित्र उन सभी उपचाररत टी. बी. रोगियों को अतिरिक्त सहायता प्रदान करेगा जिन्होंने इसके लिये सहमति प्रदान की है। केवल व्यक्तिगत नि-क्षय मित्र किसी दिए गए स्वास्थ्य सुविधा से रोगियों का चयन कर सकते हैं।

टी.बी. की समाप्ति के लिये वैश्विक प्रतिबद्धता के रूप में वर्ष 2030 तक का समय निर्धारित किया गया है। भारत ने इसकी समाप्ति के लिये पाँच वर्ष पूर्व वर्ष 2025 तक का समय निर्धारित किया है। दिसंबर 2022 तक 1,50,000 से अधिक आयुष्मान भारत-स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र स्थापित किये जाएंगे। गौरतलब है की भारत में टी.बी. उन्मूलन के लिये पहले से राष्ट्रीय टी.बी. उन्मूलन कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम को पूर्व में राष्ट्रीय क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम के रूप में जाना जाता था। इसका लक्ष्य भारत में टी.बी. के बोझ को सतत् विकास लक्ष्यों से वर्ष 2025 तक रणनीतिक रूप से कम करना है। वर्ष 2020 में संशोधित राष्ट्रीय क्षयरोग नियंत्रण कार्यक्रम का नाम बदलकर राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम कर दिया गया था। भारत में लक्षद्वीप और बडगाम जिला (जम्मू-कश्मीर) टी.बी. मुक्त घोषित होने वाली पहली जगहें हैं।

रिश्तों में संवेदनाओं की स्वाभाविकता

✍ नरेन्द्र भारती

खूनी रिश्तों के लिए समय का अभाव, समाज के लिए घातक होता जा रहा है। कैसी विडंबना है कि आज के समय में मानव अनावश्यक ही व्यस्त हो गया है। चौबीसों घंटे इंटरनैट की दुनिया में मस्त मानव के पास संवेदनाएं व्यक्त करने के लिए दो मिनट का समय नहीं है। एक नयी ही परंपरा की शुरुआत हुई है कि सोशल मीडिया पर ही किसी के देहांत की खबर डाल दी जाती है। हजारों लोग संवेदनाएं जताते हैं क्योंकि मातम वाले घर पर जाने के लिए समय ही नहीं है।

फेसबुक पर ही मातमपुर्सी करके अपनी जिम्मेवारी निभाते है। परन्तु इंसान जिम्मेवारियों से कब तक भागेगा। कुछ लोग सात संमदर दूर से भी किसी की मौत होने पर घर पंहुच जाते है। मगर कुछ तथाकथित शहरी बन चुके लोगों के पास समय ही नहीं है। आज रिश्तेदारों के पास संवेदना जताने के लिए समय नहीं है। मोबाइल से संवेदनाएं प्रकट कर रहे है। यह प्रलय की आहट है। मात्र दिखावा करने के लिए औपचारिकता निभाते है। समय पर की गई सहायता से बहुत बल मिलता है। अगर आप किसी के दुख में शामिल नही हो सकते तो सुख में भी दूरी बनाए रखें ताकि बाद में औपचारिकता की जरुरत न पड़ें। रिश्तों के लिए समय का अभाव होता जा रहा है। आज अगर किसी रिश्तेदार की मृत्यु हो जाती है तो लोगों के पास समय ही नहीं की उसकी अंतेष्टि में शामिल होकर अपना सामाजिक दायित्व का निर्वहन कर सके। आज हैसियत के हिसाब से मानव वर्गीकरण कर रहा है। आज लोग गरीबों से रिश्ता छुपाते है। गरीबों से बात करना अपमान समझते है। समय ऐसा है कि गरीब अपने स्वाभिमान से अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। मेहनत मजदूरी करके खून-पसीने की रोटी खाता है। आज के आधुनिक इंसानों में संवेदनाएं मरती जा रही है और संवेदनहीनताएं बढ़ती जा रही है। जीवन में हम अनेक सुख-दुख देखते है, परन्तु क्या हमने किसी और के लिए कुछ करने के बाद सच्चे सुख की अनुभूति की है दूसरों को अपनी सामर्थ्य के अनुसार दीजिए, खासकर उन्हे जो अनेक चीजों से वंचित ही रहे या जिन्हें दुख के सिवाय कुछ भी नहीं मिला। आप महसूस करेगें कि परोपकार का काम करने के बाद आपके होंठों पर आई मुस्कराहट दुनियाभर की दौलत से भी मंहगी होगी। विडंबना देखिए कि मानव माया को ही सब कुछ मान बैठा है। कुछ तथाकथित अमीर आज मजदूरों की कमाई से महल बना रहे है मगर जिस दिन यह मजदूरों का पसीना अपना रंग दिखाएगा महल धराशायी हो जाएंगे।

खूनी रिश्तों के लिए समय का अभाव, समाज के लिए घातक होता जा रहा है। कैसी विडंबना है कि आज के वर्तमान समय में मानव अनावश्यक ही व्यस्त हो गया है। चौबीसों घंटे इंटरनैट की दुनिया में मस्त मानव के पास संवेदनाएं व्यक्त करने के लिए दो मिनट का समय नहीं है। एक नयी ही परंपरा की शुरुआत हुई है।

मानव को पता है कि सदा कोई अमर नहीं रहता पर रिश्तों की अहमियत नहीं भूलनी चाहिए। रिश्तों के महत्त्व को समझना होगा। एक दूसरे के सुख-दुख में शामिल होना होगा तन, मन धन, से हर मानव की सेवा करनी चाहिए। अभावग्रस्त लोगों की जितनी सहायता हो सके करनी चाहिए तभी समाज में एक संदेश जाएगा। अंहकार छोड़ना होगा। मानव मिट्टी का बना है मिटटी मे ही मिल जाता है। सदा कोई अमर नहीं रहता। यह अटल सच्चाई है।

कृषक मित्र

हिमाचल में चाय की खेती

ड्रैगन फ्रूट

आमदनी बढ़ाने का नया विकल्प

साजन शर्मा

पूजा शर्मा

भारतीय किसान बीते कई सदियों से पारम्परिक फसलों के साथ-साथ फलों की खेती कर रहे है जो की उनकी आय का एक प्रमुख साधन है। देश में किसान बड़े पैमाने पर आम, केला, नींबू प्रजाति के फल, अमरुद, सेब, पपीता, अनार, लीची आदि की खेती करके अपनी आजीविका चला रहे हैं। पिछले बीते कुछ वर्षों से ड्रैगन फ्रूट जिसे 'पिटाया' के नाम से भी जाना जाता है, भारत में अपनी एक नई पहचान बनाने में कारगर साबित हुआ है। ड्रैगन फ्रूट थाईलैंड, वियतनाम, इजराइल, श्रीलंका आदि देशो में काफी ज्यादा लोकप्रिय है लेकिन अब इसकी लोकप्रियता भारत में भी होने लगी है।

ड्रैगन फ्रूट के फल देखने में आकर्षक लाल रंग के साथ खाने में मीठे होते है। ड्रैगन फ्रूट के फल में पाए जाने वाले काले रंग के बीज जो की खाने के लिए उपयुक्त होने के साथ-साथ पोषक गुणों से भरपूर होते हैं। ड्रैगन फ्रूट में कई तरह के पोषण और औषधीय गुण होते हैं जिनमें वजन कम करने, पाचन क्रिया में सुधार, खून में कॉलेस्ट्रोल को कम करने तथा प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करना आदि प्रमुख हैं। अपने इन्ही गुणों के कारण ड्रैगन फ्रूट को भविष्य का फल भी कहा गया है।

ड्रैगन फ्रूट को बाजार में आसानी से 200 से 250 रूपए प्रति किलो के हिसाब से भाव मिल जाते हैं। इस फसल का सबसे बड़ा लाभ यह है कि एक बार लगाने के बाद यह लगभग 20 वर्षों तक बढ़ती है, और एक हेक्टेयर में लगभग 800 ड्रैगन फ्रूट के पौधे लगाये जा सकते हैं। यह रोपण के बाद दूसरे वर्ष में फल देना शुरू कर देता है और पांच साल के भीतर हम इससे पूर्ण उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। भारत में इस फल की फसल पर बहुत ही कम शोध कार्य हुए हैं। हाल के वर्षों में ड्रैगन फ्रूट की खेती का विस्तार इसके स्वास्थ्य और महत्त्व के कारण हो रहा है जो की आने वाले समय के लिए एक अच्छा संकेत है। बात अगर हिमाचल प्रदेश की हो तो कम पानी की आवश्यकता और उच्च तापमान के अनुकूल होने के कारण प्रदेश के निचले क्षेत्रों जिनमें ऊना, काँगड़ा, मंडी, बिलासपुर, हमीरपुर आदि प्रमुख हैं। ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए उपयुक्त है। वर्तमान में काँगड़ा और ऊना ज़िले के कुछ प्रगतिशील किसान ड्रैगन फ्रूट की खेती करके अच्छी आय प्राप्त कर रहे हैं। साथ ही साथ ये प्रगतिशील किसान ड्रैगन फ्रूट की खेती करके समाज में भी अपनी एक नई पहचान बनाने में ज्यादा सफल हुए है। इन प्रगतिशील किसानों द्वारा ड्रैगन फ्रूट की खेती से अब प्रदेश के और भी किसान इसकी खेती के प्रति आकर्षित हुए हैं। प्रदेश की कुछ युवा पीढ़ी भी अब ड्रैगन फ्रूट की खेती में अपनी पूरी रूचि दिखा रही है इसके साथ-साथ प्रदेश में उद्यान विभाग भी अब ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए किसानों को प्रेरित कर रहा है जो की आने वाले समय में प्रदेश में ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए बेहतरीन संकेत हैं।

जलवायु व मिट्टी

ड्रैगन फ्रूट एक अर्ध-एपिफाइटिक पौधा है जो 21-29 डिग्री सेल्सियस के औसत तापमान के साथ शुष्क उष्णकटिबंधीय या उपोष्णकटिबंधीय जलवायु को तरजीह देता है, लेकिन 38-40 डिग्री सेल्सियस के तापमान और छोटी अवधि के लिए ठंड के तापमान का भी ये सामना कर सकता है। ड्रैगन फ्रूट को विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है हालांकि, सबसे आदर्श प्रकार की मिट्टी कार्बनिक पदार्थों से भरपूर और थोड़ी अम्लीय होती है। ड्रैगन फ्रूट के पौधे उच्च कार्बनिक पदार्थों वाली रेतीली दोमट मिट्टी को पसंद करते हैं और अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी में अच्छी तरह से विकसित होते हैं।

सिंचाई

ड्रैगन के पौधे बहुत कम वर्षा, कई महीनों के सूखे में जीवित रह सकते हैं, लेकिन जब अच्छी गुणवत्ता वाले फलों की आवश्यकता होती है, तो नियमित रूप से पानी की आपूर्ति की आवश्यकता होती है। फलों के विकास को सुनिश्चित करने के लिए नियमित सिंचाई महत्त्वपूर्ण है। फलों का टूटना, फूल गिरना, पौधे का पीलापन जरूरत से ज्यादा सिंचाई देनें के कारण होता है।

पौधे तैयार करना

ड्रैगन फ्रूट को बीज और तने की कटिंग के माध्यम से तैयार किया जाता है। बीज से तैयार पोधे को फूल और फल पैदा करने में 4-5 साल लगते हैं; जबकि तने की कटिंग से तैयार पौधे तीन साल के भीतर फूल पैदा करते हैं। कलमों को मिट्टी, गोबर खाद और रेत के 1:1:1 अनुपात से भरे 12 30 सेमी आकार के पॉलीथीन बैग में लगाया जाता है। कटिंग कम से कम (50 से 70) सेमी लंबाई की हो और संतोषजनक जड़ों के विकास को सुनिश्चित करने के लिए नियमित रूप से पानी दिया जाए। इन सभी पहलुओं पर ध्यान दिया जाये तो लगभग 90 प्रतिशत कटिंग बढ़िया जड़े सुनिश्चित करती हैं।

खाद और उर्वरक

ड्रैगन फ्रूट पौधे की जड़ प्रणाली सतही होती है और पोषक तत्त्वों की सबसे छोटी मात्रा को भी तेजी से आत्मसात कर सकती है। फसल की बेहतर उपज के लिए उचित पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। अधिक फल उत्पादन के लिए अनुशंसित गोबर 40 कि.ग्रा., 50 ग्राम यूरिया, 100 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट, 100 मिउरेट ग्राम ऑफ़ पोटाश, 100 ग्राम जिप्सम और 10 ग्राम बोरेक्स प्रति पौधा ड्रैगन फ्रूट के लिए आवश्यक है।

फलों की तुड़ाई

ड्रैगन फ्रूट में फूल आने से लेकर तैयार होने में 28-30 दिन लगते हैं। पके फलों को परागण के 30-50 दिनों के बीच तोड़ा जा सकता है। ड्रैगन फ्रूट का पौधा 25-30 साल तक फल दे सकता है। सबसे अच्छी गुणवत्ता वाले फल जिनका आकार 400 ग्राम से लेकर 500 ग्राम तक होता है। फल पकने पर अपने छिलके का रंग हरे से लाल रंग में बदल लेता है। जल्दी और उपज देने की क्षमता के कारण यह एक आसान आय उत्पन्न करने वाली फसल है।

चाय भारतीय संस्कृति का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। चाय पीने का इतिहास लगभग 750 ईसा पूर्व से है और भारत में चाय पीने की शुरुआत 2000 साल पहले हुई थी।

भारत दुनिया की लगभग 27 प्रतिशत चाय का उत्पादन करता है। उपभोक्ता बाजार के दृष्टिकोण के अनुसार, भारत में प्रति व्यक्ति चाय की खपत 0.7 किग्रा है जो इसे दुनिया में सबसे बड़ी प्रति व्यक्ति चाय उपभोक्ता में से एक बनाती है। टी बोर्ड ऑफ इंडिया की एक रिपोर्ट के अनुसार देश के लगभग 636557.07 हेक्टेयर भूमि पर चाय के बागान फैले है। भारत में 2021-22 में कुल 1344.40 मिलियन किलोग्राम चाय का उत्पादन हुआ था। हिमाचल प्रदेश में चाय की खेती लगभग 170 वर्ष पूर्व 1849 में शुरू की गई थी, जब डॉ. जेमसन, अधीक्षक, उद्यान विभाग, पेशावर, कांगड़ा के दौरे पर आये थे और उन्होंने जिला कांगड़ा की धौलाधार की तलहटी में चाय की खेती करने की सिफारिश की। टॉय ट्रेनों और खूबसूरत हिल स्टेशनों के साथ, चाय के बागानों ने हिमालय के परिदृश्य में एक दुर्लभ और विलक्षण आकर्षण जोड़ा। व्यावसायिक तौर पर पहली बार सन् 1852 में होल्टा, पालमपुर में चाईना किस्म की चाय का बगीचा स्थापित किया गया। सन् 1880 तक यह चाय की खेती कांगड़ा जिला के शाहपुर में, मण्डी जिला के जोगिन्द्रनगर तक 4180 हेक्टेयर में लगा दी गई थी। कांगड़ा चाय को पंजीकृत भारतीय भौगोलिक संकेत (GI) प्राप्त है। के आधार पर कांगड़ा चाय ने लंदन में 1870 में गोल्ड मेडल जीता था। ताजगी और जायके जैसी गुणवत्ता की पुष्टि कांगड़ा चाय उद्योग द्वारा लंदन व अमस्ट्रडम बिक्री केन्द्रों से अर्जित हुये स्वर्ण व रजत पदकों (1886 से 1895 तक) से होती है। कांगड़ा चाय के बेहतर स्वाद और खुशबू के कारण इसका निर्यात यूरोप और एशिया के कुछ देशों में होता है।

राज्य में चार विभाग-टी बोर्ड ऑफ इंडिया के क्षेत्रीय कार्यालय पालमपुर, राज्य के सहकारी और कृषि विभाग, सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर और चौधरी सरवण कुमार कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर कांगड़ा चाय की खेती को बढ़ावा देने के लिए प्रयास कर रहे हैं। कांगड़ा चाय की खेती की बात करें तो वर्तमान में धर्मशाला, शाहपुर, नगरोटा बगवां, पालमपुर, जयसिंहपुर, बैजनाथ और जोगिंदरनगर में धौलाधार पहाड़ों की निचली ढलानों में 2,310.71 हेक्टेयर क्षेत्र में चाय की खेती की जा रही है। राज्य ने 2021-22 के दौरान 10,01,419 किलोग्राम चाय का उत्पादन दर्ज किया और अगले पांच वर्षों तक लगभग 20,00,000 किलोग्राम चाय उत्पादन हासिल करने का लक्ष्य रखा गया है। राज्य में लगभग 5,900 चाय की खेती करने वाले परिवार हैं और 95 प्रतिशत चाय उत्पादकों की औसत भूमि जोत 0.5 हेक्टेयर से कम है। 21 बड़े चाय बागान हैं जिनकी औसत भूमि 10 हेक्टेयर से अधिक है, जबकि लगभग 237 चाय बागान मालिकों के पास औसत भूमि 1 से 10 हेक्टेयर के बीच है। हिमाचल प्रदेश सरकार ने वर्ष 1979 में हिमाचल प्रदेश में चाय की खेती के विकास एवं विस्तार के लिए तकनीकी अधिकारी (चाय) के कार्यालय की स्थापना उद्योग विभाग के अधीन की जो कि बाद में वर्ष 1999 में कृषि विभाग में हस्तांतरण कर दिया गया था। वित्तीय वर्ष 2021-22 में चाय उत्पादकों को एक लाख से अधिक पौधे प्रदान किए गए और 5.6 हेक्टेयर नए क्षेत्र में चाय की पौध लगाई गई है। राज्य सरकार चाय के तुड़ान और छंटाई में प्रयोग आने वाले उपकरणों पर 50 प्रतिशत उपदान प्रदान करेगी।

विभिन्न जिलों में स्थित विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्रों और अनुसंधान केंद्रों-मलां, कांगड़ा, बड़ा, बरठीं, सुंदरनगर, बजौरा व धौलाकुआं में चाय बागान लगाने के उद्देश्य से यह पौधरोपण किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के तहत पहले चरण में 800 चाय के नए पौधे लगाए गए। चाय निर्यात नीति के तहत पहचानी गई 'हेरिटेज कांगड़ा टी' पर सामान्य जागरूकता प्रसार के लिए कुलपति ने भारत सरकार के चाय बोर्ड तथा राज्य चाय इकाई के अधिकारियों और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के साथ बैठक करने के बाद यह कार्यक्रम शुरू किया गया है।

विभिन्न जिलों में स्थित विश्व विद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्रों और अनुसंधान केंद्रों-मलां, कांगड़ा, बड़ा, बरठीं, सुंदरनगर, बजौरा व धौला कुआं में चाय बागान लगाने के उद्देश्य से यह पौधरोपण किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के तहत पहले चरण में 800 चाय के नए पौधे लगाए गए। चाय निर्यात नीति के तहत पहचानी गई 'हेरिटेज कांगड़ा टी' पर सामान्य जागरूकता प्रसार के लिए कुलपति ने भारत सरकार के चाय बोर्ड तथा राज्य चाय इकाई के अधिकारियों और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के साथ बैठक करने के बाद यह कार्यक्रम शुरू किया गया है।

विश्वविद्यालय के अनुसार यदि उपेक्षित और परित्यामित क्षेत्र का अच्छी तरह रख रखाव किया जाये तो हिमाचल प्रदेश में 20 लाख किलोग्राम चाय उत्पादन के लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। **चाय की खेती :** खेती के लिए हल्की अम्लीय व उचित जल निकासी वाली भूमि का होना जरूरी है। इसके लिए भूमि का पी.एच. मान 5.4 से 6 के बीच होना चाहिए।

चाय की खेती के लिए गर्म मौसम के साथ-साथ बारिश (1500-2500 मि. मी.) का होना जरूरी होता है। पौधे शुष्क और आर्द्र मौसम में अच्छे से विकास करते हैं। इसकी खेती के लिए छायादार जगह सबसे उपयुक्त होती है। पौधे 20 से 30 डिग्री तापमान के बीच अच्छे से विकास करते हैं. इसके पौधे अधिकतम 35 और न्यूनतम 15 डिग्री तापमान को सहन कर सकते हैं।

डॉ. संजय कुमार डॉ. प्रमोद वर्मा

कांगड़ा चाय की उन्नत किस्में

बीज की किस्में

कांगड़ा लोकल : चाय के पौधे चाइना हाइब्रिड प्रजाति के हैं। इन पौधों के बहुसंख्यक तनों में लगी कोंपलें आकार में छोटी होती हैं और इनमें सुरभि तत्व प्रचुर मात्रा में होते हैं

नन्दा देवी (स्टॉक-378) दो किस्मों के प्रजनन द्वारा यह बीजू किस्म दार्जिलिंग से लाई गई है। विश्वविद्यालय में सफल परीक्षण के बाद इस किस्म की सिफारिश खाली पडे बगीचों व नये चाय के बगीचें लगानें के लिए की गई है।

कलम की किस्में : कांगड़ा आशा

अच्छी व समान बढ़ोतरी वाला पौध जिसकी शाखायें सीधी, पत्तों का रंग गहरा हरा तथा शुष्कावस्था, ओलावृष्टि व कोहरे की अवरोधक क्षमता रखती है। अच्छी गुणवत्ता के कारण व्यवसायिक बागवानी दृष्टि से भी यह किस्म उपयोगी है।

कांगड़ा ज्वाला : इसका पौधा फैलावदार होता है। पत्ते लम्बे चौड़े, हल्के हरे रंग के होते हैं। गुणवत्ता के आधार पर भी यह बहुत ही अच्छी किस्म प्रमाणित की गई है जिसमें रंग व खुशबू दोनों गुण विद्यमान हैं। अन्य प्रयोग में लाई गई किस्मों में से निम्नलिखित को इस क्षेत्र में सफलतापूर्वक लगाया जा सकता है : टी. वी.-1, टी. वी.-8, टी. वी.-9, टी. वी.-23, फूवसरिंग-312, तुकदाह 253।

चाय बागीचा लगाने की योजना

पुराने समय में पौधों को 1.5 ग 1.5 मीटर की दूरी पर लगाया गया था जिससे प्रति हेक्टेयर केवल 4444 पौधे ही लग सकते थे। परिणामस्वरूप पौधे देरी से उत्पादन देते थे और उत्पादन भी बहुत कम होता था। आज कल उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के उद्देश्य से पौध संख्या 12000 से 18000 प्रति हेक्टेयर उचित समझी गई है। निम्नलिखित प्रणालियां उपयोग में लाई जा सकती हैं। **दोहरी पौध प्रणाली :** इस प्रणाली में दो कतारें नजदीक होती हैं तथा बीच की दूरी अधिक होती है ताकि काम करने वाले मजदूर सुविधापूर्वक कार्य कर सके। यान्त्रिक विधि द्वारा तोड़ाई करने के लिए यह प्रणाली अति उत्तम मानी गई है।

चाय बागीचों में पौध लगाना

चयन व स्थानांतरण : चाय पौध 30 से 45 से. मी. जिसके ऊपर कम से कम स्वस्थ व परिपक्व 12 पत्ते हो का चयन करें। इस बात का ध्यान रखें कि मिट्टी की थैली को किसी प्रकार का नुकसान न हो। दूरस्थ स्थानों के लिए पौध को लकड़ी के डिब्बों या बाँस की टोकरियों में स्थानाँतरण करें। **समय :** हिमाचल व उत्तराँचल जहां पर सिंचाई का उचित प्रबन्ध नहीं है वर्षा ऋतु (जुलाई से सितम्बर) सबसे अच्छा समय है।

पौध रोपण विधि : भरे हुए गड्ढे में से पौधे की थैली के आकार अनुसार मिट्टी निकालें। थैली को चाकू या ब्लेड की सहायता से ऊपर से नीचे तक चीरा लगायें। जड़ वाली मिट्टी को बिना टूटे गड्ढे में डाल दें। फिर हटाई गई मिट्टी के साथ धीरे-धीरे भर दें और किनारों से दबा दें। लगाने के बाद सिंचाई कर दें।

यादों में अंतरराष्ट्रीय कुल्लू दशहरा

देव समागम व खास-ओ-आम के मिलन का पर्व

कुल्लू का ढालपुर मैदान बचपन से ही हमारे लिये सिर्फ दशहरा मैदान ही नहीं रहा है। यहां हमने बचपन के बहुत सारे जीवन के रंगों को चढ़ते-उतरते देखा है। बस अड्डे के स्थान पर यह जगह जितनी थी तब से लेकर आज तक उससे कुछ ज्यादा जरूर हो गई है लेकिन सीमित ही है। इसके साथ लगता आजाद ढाबा, अंपायर स्टोर, तेजू चाय वाला (बैजनाथ - कांगड़ा से) और ठीक मंदिर के पीछे खोखानुमां कपूर स्वीट शॉप बगैरह उस वक्त की मशहूर दुकानें हुआ करती थीं ढालपुर की। एक कांगड़ी गीत- आर घर मेरा पार तेरा हो - की तर्ज पर ठीक- आर-पार, दो और खाना खाने के होटल यानी ढाबे अवस्थी जी और दूसरे का नाम याद नहीं आ रहा हुआ करते थे, जो अब भी हैं।

अब जब कुल्लू दशहरा की ही बात की जा रही हो तो यहां यह बताया जाना भी कि दशहरा मनाए जाने का प्रचलन कब और कैसे आरंभ हुआ मुनासिब नहीं समझता। क्योंकि हर कोई इस बात को जानता है कि कुल्लू दशहरा उत्सव राजा जगत सिंह द्वारा कुल्लू के सुल्तानपुर को 1660 में राजधानी बनाए जाने और श्रीराम को

राजेन्द्र पालमपुरी

अयोध्या से यहां लाए जाने के बाद से ही इस पावन उत्सव का आगाज हुआ।

अपने समय की ही बात करूं तो हमने बचपन से ही सुना है कि सैंकड़ो देवी देवताओं की उपस्थिति यहां अनिवार्य होती है। लकड़ी के 12 पहियों पर सुसज्जित रथ पर रघुनाथ जी की यात्रा कुल्लू जनपद के स्वंयसेवकों और आस्थावानों द्वारा गंतव्य तक पहुंचाए जाने की रिवायत को असंख्य श्रद्धालुओं की देखरेख में पूर्ण किया जाता है। यह दृश्य अत्यंत चिरस्मरणीय और मनमोहक होने के साथ ही हमें अपनी सभ्यता और संस्कृति को सहेजे रखने की प्रेरणा देने की क्षमता भी रखता है।

लेकिन यहां यह बता देना भी आवश्यक हो जाता है कि मां हिडिंबा जी की दशहरा उत्सव में उपस्थिति के उपरांत ही दशहरा आयोजन का श्रीगणेश पुरातन समय से ही होता रहा है।

सात दिन तक चलने वाले दशहरा उत्सव में देश ही नहीं बल्कि विदेशी आगंतुक मेहमानों का भी खूब जमावड़ा रहता है कुल्लू दशहरा पर्व में। और जिन्हें इस मनमोहक पर्व की डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनाते हुए मैं साल 1958 से ही देखते आया हूं। वर्ष 1966 की ही बात करूं तो पहली बार रूस से आए विदेशी कलाकारों का रशियन बैले (रूसी लोक नृत्य) हममें से बहुत से मेरे हमजोली साथियों ने देखा तो होगा ही बल्कि बहुत अच्छे से याद भी होगा।

दशहरा मंच संचालन का कार्य उस वक्त स्वं. चांद मिश्रा जी की दिल को छू लेने वाली आवाज व महकते और खिलखिलाते हुए अंदाज के हाथ हुआ करता था।

बिनाका गीत माला के अमीन सयानी साहब के साथ-साथ ही हम उस दौर में जिला कुल्लू के उद्घोषक श्रीमान् चांद मिश्रा जी की आवाज के भी कायल थे। हमारे ही नहीं बल्कि अन्य कार्यक्रमों की भी जान हुआ करते थे हमारे मंच उदघोषक चांद मिश्रा जी।

बॉलीबाल में याद राम जी की 'स्मैश' पूरे कुल्लू में शायद ही किसी ने कभी उठाने की हिम्मत दिखाई हो कह नहीं सकता। जैसा कि पहले भी कह चुका हूं कि साहित्य और संगीत से जुड़ा रहा हूं इसलिये चांद मिश्रा जी का मंच संचालन और शेर-ए-कुल्लू-चांद कुल्लवी यानि लाल चन्द प्रार्थी जी की साहित्यिक यात्रा में- कुलूत देश की कहानी - जैसे साहित्य को याद करना भूल जाएं तो बात अधूरी रहेगी दशहरा उत्सव की। लाल चंद प्रार्थी साहब भी हमारे हिमाचल प्रदेश की आन और शान रहे हैं। फिर बात चाहे लोक संस्कृति, साहित्य की या फिर राजनीति की ही क्यों ना हो प्रार्थी साहब का नाम लिये बगैर भी कुल्लू दशहरा आधा-अधूरा ही लगेगा।

ढालपुर के दशहरा मैदान में लोक संपर्क विभाग अनेकों फिल्में दिखाया करता था। जिनमें - हम एक हैं, मुझे जीने दो, जाग उठा इंसान, गंगा जमुना जैसी अनेकों फिल्में देखी हैं इसी मैदान में हमने। बल्कि यहीं पर फिल्म निदेशक आई. एस. जौहर ने अपनी फिल्म जौहर इन-कश्मीर को भी शूट किया था। इसके अलावा यहां देखे जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में उस समय का - जिंदा डांस (बाद में जिसे केबरे डांस का नाम दिया गया) मौत का कुआं और सर्कस बगैरह खास प्रोग्राम हुआ करते थे जो आज भी हैं। सन् 1962 के भारत और चीन के बीच हुए युद्ध पर आधारित एक सशक्त नाटक 'भूली मां' भी हमने कुल्लू दशहरा के इसी कला केंद्र में ही देखा है।

हां मुझे बहुत अच्छे से याद है देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू जी की स्मृति में जब 'जवाहर ज्योति' देश के विभिन्न प्रांतों के मुख्य शहरों में लाई गई थी तो उसमें कुल्लू दशहरा के इसी मैदान में जवाहर ज्योति आम जनमानस के दर्शनार्थ रखी गई थी जो इस दशहरा मैदान के लिये गौरवमयी बात रही।

आज दशहरा उत्सव देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अपनी अलौकिक छवि बनाए हुए है क्योंकि 4/5 बरस पहले ही पुरातन लोक नृत्य 'लालड़ी' को गिनीज बुक रिकॉर्ड में दर्ज करने से यहां की लोक संस्कृति को चार चांद लगे है। कहना गलत न होगा कि हमारी लोक संस्कृति और प्राचीन सभ्यता के चलते हमारे देश भारत के साथ ही हिमाचल प्रदेश का नाम भी स्वर्णाक्षरों में लिखा गया है।

विशेष रूप से यहां यह उल्लेख भी किया जाना आवश्यक हो जाता है कि विगत 4 साल से कुल्लू दशहरा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर का दर्जा मिलने से यहां के देव समाज के साथ ही पूरे प्रदेश के लिये बेहद हर्ष की बात है।

कुल्लू जनपद के लिये प्रसन्नता की बात है कि साल 2018 में हमारे कुल्लू दशहरा उत्सव में कुल्लू की प्राचीन राजधानी जगतसुख की आराध्य देवी माता संध्या गायत्री ने एक लंबे अंतराल यानि 75 वर्षों के बाद 'अड्डारह करडू की सोह' उत्सव में और इसी ढालपुर मैदान में शामिल हो फिर से देव परंपरा को कायम किया है। सर्वविदित है कि संध्या गायत्री माता समय-समय पर विश्व शांति एवम् विश्व कल्याण हित में पूजा-अर्चना करवाती रहती हैं जिसके परिणामस्वरूप समूचा जिला धन- धान्य से परिपूर्ण रहता है हमेशा।

लेकिन साल 2021 में यह उत्सव कोरोना बंदिशों के बीच में ही मनाए जाने से आमजन को मायूस होते देखा गया है।

किंतु इस वर्ष सरकार और प्रशासन की ओर से अंतर्राष्ट्रीय कुल्लू दशहरा बीते दिनों की ही भांति खूब धूमधाम से मनाए जाने की खबरों से आम आदमी में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई है। जिससे कुल्लू के स्थानीय और अन्य राज्यों से आने वाले व्यवसायियों को अच्छी खासी कमाई होने का अनुमान है। यहां यह कहना भी गलत न होगा कि हमारा कुल्लू दशहरा हर आम-ओ-खास जनमानस का पर्व है। यही वह त्योहार है जिसमें हम सब मिलते-जुलते और घर परिवार के लिये ढेरों नई-नई चीजें खरीदते हैं। हमारा यह एक त्योहार ही नहीं, बल्कि एक दूसरे से मिलने जुलने का भी पुरातन पर्व है। इसलिये इसकी परंपरा इसकी रिवायत को बनाए रखना इसे संजोए रखना हम सबका कर्तव्य है, फर्ज है। अत : आइये मिलजुल कर अपने इस पावन पर्व की आभा और इसकी गरिमा को बनाए रखने में अपनी और अपने स्थानीय प्रशासन की मदद करें, सहयोग करें ताकि हम फिर से लिख सकें कोई नई - कुलूत देश की कहानी।

मनोरम छटा से लबरेज
श्री कुंजजेश्वर महोदव

नंद किशोर परिमल

प्राचीन काल में लम्बागांव कटोच वंश के राजपूत शासकों की प्रसिद्ध रियासत थी। यह रियासत अपनी बहादुरी के लिए भारत वर्ष में चर्चित थी। इसके चर्चे इतिहास में आज भी पढ़ने को मिलते हैं।

लम्बागांव कांगड़ा के आलमपुर कस्बे से 12-13 किलोमीटर की दूरी पर व्यास नदी के किनारे बसा हुआ है। यह स्थान जयसिंहपुर, पालमपुर और हमीरपुर तीनों शहरों से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। प्रकृति ने अपनी पूरी छटा से इसे मनोरम बनाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है। पर्यटक यहां आकर यहीं के होकर रह जाते हैं। जहां यह क्षेत्र अपनी राजनीतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध है वहीं इस भूभाग पर अनेकों धार्मिक स्थल दर्शनीय हैं। समीपवर्ती स्थान बालकरूपी गांव में भगवान शिव बाल रूप विग्रह में स्थापित हैं। शायद इसीलिए गांव का नाम भी बालकरूपी पड़ गया हो।

मंदिर की व्यवस्था एक कुशल कमेटी के हाथ में है। यात्रियों के ठहरने व लंगर आदि सुंदर व्यवस्था है। इसके साथ लगते आलमपुर कस्बे में 500 सौ से अधिक पुराना 'लक्ष्मी नारायण' मंदिर देखने योग्य है। यहां भी यात्रियों के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। आलमपुर से लगभग 15 किलोमीटर की दूरी पर लम्बागांव स्थित है। लम्बागांव से 3-4 किलोमीटर की दूरी पर व्यास नदी के किनारे कुंज्जेश्वर महादेव का मंदिर स्थित है जिसकी हम चर्चा करने जा रहे हैं। यह सभी स्थल सड़क मार्ग से जुड़े हुए हैं और बसों की व्यापक व्यवस्था है।

कुंज्जेश्वर महादेव जालंधर पीठ का स्थान है। पौराणिक कथा के अनुसार त्रेतायुग में जालंधर नामक दैत्य भगवान शिव जी के क्रोध से उत्पन्न हुआ था। वह दैत्य भगवान विष्णु, शिव और ब्रह्मा जी का महान तपस्वी था।

उस दैत्य ने जालंधर पीठ क्षेत्र में 355 देवालय और चार मुख्य द्वारपालों की स्थापना की थी। ये द्वारपाल हैं - कुंज्जेश्वर महादेव (लम्बागांव), नंदीकेश्वर महादेव (चामुंडा), कालेश्वर महादेव (नादौण), कुवेश्वर महादेव (जो अब पौंग बांध में जलमग्न हो चुके हैं)। कहते हैं कि जालंधर दैत्य ने भगवान शिव से यह वरदान लिया था कि जो उपासक जालंधर पीठ के इन चार द्वारपालों की सच्चे मन से तपस्या करेगा उसे अराधना से चार गुणा अधिक फल प्राप्त होगा।

भगवान शिव ने जालंधर की तपस्या से प्रसन्न होकर अपने अंग से जिन चार देवताओं को द्वारपाल के रूप में प्रकट किया उनमें से एक हैं कुंजनाथ का देवता। कहा जाता है कि यह कुंज देवता भगवान का इक्यावनवां(51) द्वार है और इसी कारण इसे (कुंज्जेश्वर कुई द्वार) के नाम से भी जाना जाता है।

कुंज्जेश्वर महादेव मंदिर निर्माण

किंवदन्ती अनुसार आज से लगभग 500 वर्ष पूर्व लम्बागांव रियासत पर कटोच वंश के शासक राज करते थे। उस समय व्यास नदी मंदिर के दोनों ओर बहती थी और बीच में एक ऊंचा टापू था जहां आज मंदिर स्थित है।

लोकगाथा के अनुसार जब व्यास नदी का

पानी कम हो जाता तो ग्वाले इस स्थान पर पशु चराने के लिए जाया करते। एकदिन की बात है कि एक गाय जो मालिक को अच्छा खासा दूध दिया करती थी अचानक उसने दूध देना बंद कर दिया। इस प्रकार चार पांच दिन बाद मालिक ने ग्वाले जिसका नाम कुंजू था से पूछा कि क्या कारण है कि मेरी गाय कुछेक दिनों से दूध नहीं दे रही है। मालिक ने ग्वाले को इसका कारण जानने का आग्रह किया। अब ग्वाला गाय का पहरा करने लगा।

एक समय वो क्या देखता है कि टापू की चोटी पर स्थित एक पिंडी-नुमा पत्थर के समीप खड़ी होकर गाय अपना दूध उस पत्थर पर छोड़ रही है। कुंजू ग्वाले ने वापिस लौट कर यह समाचार गाय के स्वामी को बताया।

गाय के मालिक और समीपवर्ती लोगों ने उक्त स्थल पर जाकर जांच पड़ताल की और इस अनोखी घटना को देख कर अचंभित रह गए। वापिस आकर लोगों ने यह समाचार राजा कटोच वंश तक पहुंचाया। राजा सच्चाई जानने के लिए अपने कुल पुरोहित और ज्योतिषियों को लेकर उक्त स्थान पर पहुंचा। टीले पर स्थित उस भव्य पिंडी के दर्शन करके सभी विचार विमर्श करने लगे कि यह क्या चमत्कार हो सकता है!

घर लौट कर मंत्रियों और ज्योतिषियों के साथ मंथन चलता रहा। उसी रात राजा को स्वप्न में बताया गया कि जिस पिंडी को तुमने देखा है वो भगवान शिव का शिवलिंग है और जालंधर पीठ क्षेत्र है। राजा को उक्त स्थान पर मंदिर निर्माण कराने का निर्देश दिया। तत्पश्चात कटोच वंशी राजा ने वहां भव्य मंदिर का निर्माण कराया और पिंडी को कुंज्जेश्वर महादेव का नाम दिया गया क्योंकि सर्वप्रथम उस स्थान को कुंजू ग्वाले ने ही देखा था। आज दूर-दूर से श्रद्धालु कुंज्जेश्वर महादेव को शीश निवाने पहुंचते हैं और उनकी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

पर्यटन की दृष्टि से स्थान का महत्त्व

वर्तमान में जिस ऊंचे टीले पर कुंज्जेश्वर महादेव विराजमान हैं वहां मंदिर के साथ लगभग 20 मीटर लम्बा और 20 मीटर चौड़ा सभागार बना हुआ है जहां किसी भी उत्सव को मनाने के लिए पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध हैं। 5-7 कमरे भी यात्रियों के ठहरने के लिए बने हुए हैं। यही नहीं पीने के पानी और बिजली का भी सुंदर प्रबंध किया गया है।

मंदिर तक पहुंचने के लिए मुख्य द्वार से 50-60 सीढ़ियां चढ़ कर पहुंचने का प्रावधान है। नीचे अल्पाहार हेतु दो तीन दुकानें हैं और ऊपर मंदिर में पुजारी की व्यवस्था है। मंदिर तक आप लम्बा गांव कस्बे से टैक्सी या निजी गाड़ी में आराम से पहुंच सकते हैं। पार्किंग की भी कोई कठिनाई नहीं। यह स्थान लम्बागांव और तलवाड़ दोनों ओर से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है।

यदि पर्यटन की दृष्टि से देखें तो प्रकृति की गोद में बसे इस स्थान की कोई रीस नहीं। एक ओर शांत स्वभाव में व्यास नदी और दूसरी ओर ऊंचे टीले पर कुंज्जेश्वर महादेव इस स्थान को साक्षात स्वर्ग तुल्य बना रहे हैं।

इस मनोरम स्थान को हिमाचल प्रदेश सरकार चाहे तो आधुनिक सुविधाएं जुटा कर विश्व भर के पर्यटकों को आकर्षित कर सकती है। इससे जहां सरकार की आर्थिकी में सुधार होगा वहीं स्थानीय लोगों को घर-द्वार पर रोजगार उपलब्ध हो सकेगा।

कोटधार दीपावली विशेष पकवानों का त्योहार

✍ कर्नल जसवन्त सिंह चन्देल

बिलासपुर की कोटधार वीरों और शहीदों की भूमि है। इस पहाड़ी सिलसिले के हर गांव की महान संस्कृति है। कोटधार की संस्कृति किसी जाति तक सीमित नहीं है। यह मैं इसलिए लिख रहा हूं, क्योंकि यहां पर गुजरों के गांव हैं जिन्हें जोहड़ कहते हैं, यहां बसने वाले लोगों को राजा आनन्द चन्द ने 'नए राजपूत' उपनाम या जाति ही थी। यहां के लोगों को इस धार में कुट्लैहड़िए भी बसते हैं और सिख भी रहते हैं। चन्देल जाति के गांव हैं, ग्राह्मण के गांव हैं। कामगारों का बसेरा है और मुस्लिम भी रहते हैं। मगर हर जाति, उपजाति सभी त्योहारों को मिलजुल कर मनाते हैं। ईद के दिन मुस्लिम घर से सेवियां आना और हिन्दुओं के घर से दीपावली के दिन एफंलू और एंकलियां मुस्लिम घर में भेजना यहां की परम्परा है।

यहां पर दीपावली को दियाली कहा जाता है। समय के साथ हर त्यौहार को मनाने के तरीकों में बदलाव आ गया है। लगभग तीस वर्ष पहले तक गांव के कच्चे घर होते थे। दियाली के पहले घरों को गोबर से लीपा जाता था और उस पर गोलू के घोल से पुताई की जाती थी।

गोलू खास किस्म की मिट्टी होती है। जिसका रंग हल्का नीला होता है। मक्की की कटाई उस समय तक हो चुकी होती थी और मक्की की गड्डियों को एक खेत में खड़ा कर चुम्ब लगाया जाता था। चुम्ब का मतलब होता है कि काटी हुई मक्की को बांध कर एक जगह खड़ा करना। कहीं कहीं पर खेतों में हल चला लिया होता था जिसे हलयाड़ी कहते हैं।

दियाली के लिए पकवान केवल एंकलू और एंकलियां होती थी। ये पकवान चावल के आटे से तैयार होते हैं। दियाली से पहले चावलों को साफ करके पानी से धोकर सुखाया जाता था। फिर इसका आटा बनाया जाता था। एंकलू बनाने के लिए पत्थर की चवांसी हर घर में होती थी। एक समतल पत्थर पर गोल-गोल छेद होते हैं, इसे चवांसी कहते हैं। चावल के आटे का घोल बनाया जाता है।

चवांसी को चुलेह पर खूब गर्म होने दिया जाता थ, फिर छेदों में थोड़ा- थोड़ा तेल लगा कर उन छेदों में चावल के आटे का घोल डाला जाता है। पकने पर इन्हें बाहर एक लोहे की पतली छड़ी की मद्द से निकाला जाता थ। देखने में हूबहू दक्षिण भारत की इट्ली/इडली की तरह होते हैं। इसी चावल के आटे के घोल को एक कड़छी की मद्द से गर्म तवे पर डाला जाता है। यह रोटी की शक्ल की बन कर तैयार होती है। इसे एंकली कहते हैं। इन्हें दूध के साथ और मांह की दाल के साथ खाया जाता है। तो ये होते थे कोटधार में दियाली के पकवान। कई घरों में ये पकवान आज भी बनाए जाते हैं।

दीपावली को दियाली कहा जाता है। समय के साथ हर त्योहार को मनाने के तरीकों में बदलाव आ गया है। लगभग तीस वर्ष पहले तक गांव के कच्चे घर होते थे। दियाली के पहले घरों को गोबर से लीपा जाता था और उस पर गोलू के घोल से पुताई की जाती थी। गोलू खास किस्म की मिट्टी होती है। जिसका रंग हल्का नीला होता है।

पटाखों का रिवाज नहीं था, और न ही उपलब्ध होते थे। घर द्वार में मिट्टी के छोटे-छोटे दिए जलाये जाते थे जिन्हें दिऊंढ़िया कहते हैं। दियाली से पहले चीड़ के फल इकट्ठे किए जाते थे। चीड़ के फल को चलाखड़ी कहते हैं। शहतूत या बीऊल की पतली डालों को बीच से चीरा जाता था। इस तरह इस चीरी हुई डाली में एक चलाखड़ी बांधते थे। शाम को चलाखड़ी को आग लगाते और ऊंची जगह से इसे घुमा कर नीचे की तरफ फेंकते थे और कहते थे 'दियाली वो दियाली'।

दियाली के दिन घर की बेटियां और बहनें जरूर मायके आती थीं। दियाली पर इन्हें कपड़े भेंट किये जाते थे। इस तरह दियाली का त्योहार मनाया जाता था। पूजा पाठ का कोई बड़ा विधान नहीं था। बस शक्कर और घी मिला कर परिवार स्वलहें में औहतें डालते थे और भगवान का नाम लेते थे।

बुजुर्ग बच्चों को दियाली क्यों मनाई जाती है का कारण जरूर बताते थे। कहते थे इस दिन भगवान राम चौदह वर्षो का वनवास काट कर अयोध्या वापस आए थे और लोगों ने दिए जला कर स्वागत किया था।

भगवान श्रीकृष्ण ने दियाली से एक दिन पहले नरकासुर का वध कर प्रह्लाद को बचाया था। समुंद्र मंथन भी इसी दिन हुआ था और लक्ष्मी प्रकट हुई थी। सिखों के छट्ठे गुरु हरगोविन्द जी इसी दिन ग्वालियर जेल से रिहा हुए थे। स्वामी दयानन्द तथा स्वामी रामतीर्थ का यह निर्वाण दिवस है। इसी दिन महामाया दुर्गा के क्रोध को भगवान शिव ने उनके रास्ते में लेट कर दूर किया था।

आज दीपावली की धूम पहले से लाख गुना बढ़ चुकी है। भारत वासियों के पास धन है। साधन हैं, पटाखे फोड़े जाते हैं, घरों को बिजली की लड़ियों से सजाया जाता है। खूब मिठाइयां खरीदी व बांटी जाती है। मेहमान नवाजी खूब होती है। दिखावा खूब होता है। पटाखों से आज भी जगह-जगह आग लगती है। कुछ लोगों को चोटें भी आती हैं। कहीं-कहीं शराब परोसी जाती है और कहीं-कहीं जुआ खेला जाता है।

अन्त में मैं कहना चाहता हूं कि दीपावली या हमारी दियाली आनन्द उत्सव हे, प्रकाशोत्सव है और ज्योति पर्व है। हमारा अतीत महान था। हमें यह नहीं भूलना चाहिए और दियाली के दिन सच्चे मन से लक्ष्मी व भगवान को याद करते हुए खुशियां मनानी चाहिए।

000

रक्षा दात्री तथा न्याय की देवी माता सिद्ध काली

✍ सुशील लोहिया

हिमाचल प्रदेश का जिला मण्डी देव भूमि के साथ-साथ काशी के नाम से भी जाना जाता है। यहां देवी देवताओं के मंदिर शहर तथा गांव-गांव में देखने को मिलते है। मण्डी में अधिकांश मन्दिरों का निर्माण समय-समय पर राजाओं द्वारा कराया गया है। राजकाल में मण्डी में एक ऐसा राजा भी हुआ था, जो एक कुशल शासक, न्याय प्रिय तथा तंत्र विद्या का जानकार भी था। इस राजा का नाम सिद्धसेन था। राजा सिद्धसेन ने अपने शासन काल में चौदह मन्दिरों को बनवाया था। इस राजा ने मण्डी में 43 वर्ष तक राज किया था। (1684-1727) राजा सिद्धसेन द्वारा बनवाए गए मन्दिरों के आगे सिद्ध लगाया जाता था। मण्डी में सिद्ध जालपा, सिद्ध भद्रा मन्दिर, सिद्ध पंचवक्त्र मन्दिर तथा सिद्ध काली के साथ-साथ और भी मन्दिर बनवाए थे। सिद्ध काली का मन्दिर मुख्य बाजार सेरी में होने से यहां सारा दिन भक्तों का दर्शन करने आना लगा रहता है। सिद्ध काली को यहां रक्षा दात्री और न्याय की देवी के रूप में जाना जाता है। मन्दिर निर्माण के बारे में बताया गया कि जहां यह मंदिर बना है वहां पहले सरोवर था। जो पानी से भरा रहता था। बरसात में इसका पानी बढ़ जाता था। इस सरोवर को पहले सेरी सरोवर कहा जाता था। सिद्ध सेन द्वारा सरोवर में काली का मन्दिर बन जाने के बाद इसे सिद्ध सरोवर भी कहने लगे। बताया जाता है कि इसी सरोवर में एक चट्टान थी। उसी चट्टान को काट कर कारीगरों ने माता काली की अष्ट भुजाधार शव पर आसीन (बैठी) हुई मूर्ति बनाई थी, फिर राजा द्वारा मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा करा कर मन्दिर बनवाया था। माता के मुंह से आज भी वही तेज चमकता है। राजकाल में इस मन्दिर में दिन में चार समय सवेरे, दोपहर, शाम तथा रात्रि बारह बजे पूजा होती थी। सवेरे और रात्रि के अंतिम प्रहर में होने वाली पूजा का विशेष महत्त्व दिया जाता था। अब यहां सवेरे शाम ही पूजा और आरती होती है। पहले माता का मन्दिर छोटा था। माता के दर्शन करने के लिए एक बार एक ही व्यक्ति दर्शन कर पाते थे। मन्दिर के पास बड़ा सिमेंट से बना पानी का टैंक भी था, जो अक्सर खाली ही था। 1982 में मण्डी के भुवनेश्वर सुनार चोपड़ा परिवार ने वहां जीर्णोद्धार करके बड़ा हाल बनवाया, जिससे अब तक आसानी से कई लोग एक साथ मां के दर्शन कर लेते है। वहां बैठ कर विश्राम भी कर लेते है। सिद्ध काली को रक्षादात्री तथा न्याय की देवी के रूप में माना जाता है। पहले राजकाल में राजा से न्याय मिल जाने के लिए माता के पास पत्र लिख छोड़ जाते थे। माता अवश्य उन्हें न्याय दिलाती थी। आज के समय में लोग आस्था लेकर माता के दर आकर न्याय मांगते है। ऐसी मान्यता है कि माता सच्ची भक्ति तथा सही होने पर अवश्य न्याय दिलाती है। बाजार में मन्दिर होने से भक्तों का आना जाना लगा रहता है। माता की सुबह शाम पूजा आरती होती है। आरती के समय लोग आकर आरती में शामिल होते है। मन्दिर में जहां माता काली का मन्दिर है वहीं ऊपर शिवलिंग मन्दिर है जिसे सिद्धेश्वर महादेव पुकारते हैं। एक ओर हनुमान जी का मन्दिर बना है। भक्तों को यहां आने पर माता काली के साथ-साथ शिवलिंग तथा हनुमान के दर्शन हो जाते है।

पर्वों में छिपे गहरे संदेश

✍ मुकेश विग

मां दुर्गा के पावन नवरात्रों से शुरु होकर दशहरा-दिवाली तक हर दिन विशेष उत्साह एवं आस्था से ओतप्रोत होता है। नवरात्र श्रीराम नवमी-हनुमान जयंती जैसे पर्वों का विशेष महत्त्व तो है ही करवाचौथ, भाई दूज जैसे पर्व भी इनमें खास जोश उमंग से परिपूर्ण कर देते हैं यानि हर रिश्ते व देवी-देवता के नाम पर इन पर्वों का कोई सानी नहीं। इन्हीं पर्वों में गहरे सन्देश भी छिपे रहते हैं जिन्हें आत्मसात करना बहुत जरूरी है क्योंकि पर्व यही कहते हैं कि अच्छाई को अपनाओ तथा बुराई-अवगुणों को शीघ्र त्याग दो, नहीं तो अन्त रावण जैसा ही होगा, जो महापंडित-शिवभक्त-चारों वेदों का ज्ञाता होते हुए भी बुरे कर्मों के फल से न बच सका यानि कर्मों का फल सभी को भुगतना पड़ता है।

एक बार भगवान शिव के क्रोधित हो जाने पर दशानन ने अपने दस शीश एक-एक कर शिव को अर्पित कर दिए तो दस रुद्र शान्त हो गए लेकिन ग्यारहवें रुद्र हनुमान रुष्ट हो गए। इसी शिव के रुद्र हनुमान के सहयोग से श्रीराम ने रावण का अन्त कर दिया। यदि रावण अहंकार व अनीति का मार्ग न अपनाता तो उसे कोई मार न पाता। अहंकार मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। रामलीला मंचन, नवरात्र व दशहरा हमें यह संदेश भी देते हैं। अहंकार से दूर रहो। कन्या पूजन करने वाले न तो कन्या पर जुल्म करते हैं न ही ऐसा सहन कर सकते हैं यही सच्ची पूजा है। हमारे शास्त्रों में कन्या को देवी का रूप कहा गया है। इसी कन्या से संसार का चक्र चलता है। इसके हर रिश्ते से प्यार ही झलकता है। इसकी रक्षा हेतु संकल्प लेकर पर्वों का उद्देश्य हम सार्थक कर सकते हैं फिर किसी विशेष अभियान चलाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

श्रीराम के आदेशों को गहराई से समझना व उन पर अमल करना इन्हीं पर्वों का संदेश है। सौतेली माता के वचनों को पूरा करने हेतु चौदह साल वनों में रहना सहर्ष स्वीकार किया तथा वापिस लौटने पर धन्यवाद दिया कि माता आपके ही कारण मुझे कई अनुभव हुए, मित्र मिले व कई राक्षसों से धरा को मुक्त किया।

लेकिन आज वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या देख दुःख होता है। सगे माता-पिता ही कितने कष्ट में जी रहे हैं। रावण ने अच्छी राय देने वालों को भी दुश्मन समझ अपमानित किया क्योंकि वह अहंकार में आकंठ डूबा था। इसीलिए उसका विनाश हुआ। हर वर्ष दशहरे पर रावण के पुतले जलाने के साथ ही यह भी ध्यान देना होगा कि यही रावण हमारे भीतर प्रवेश न करें। इसकी कोई मर्यादा नहीं थी जबकि श्री राम विष्णु जी के अशांवतार थे। सदा मर्यादा में रहे इसीलिए मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये। इसी राम नाम की शक्ति से मरा-मरा जपने वाले भी पार हो गए। भारत के साथ ही अन्य कई देशों में भी राम-कृष्ण की पूजा होती है। रावण महाविद्वान था व श्रीराम के हाथों मारा गया, इसीलिए दशहरे पर पुतला दहन बाद लोग पुतले से लकड़ियां निकालकर घर ले जाते हैं जो उसकी हड्डियों की रूप में रखते हैं। इससे कोई बुरी छाया उस परिवार पर कभी नहीं पड़ती। हनुमान जी ने रावण का घमण्ड दूर किया इसीलिए उनका एक नाम दशग्रीवदर्पहा कहलाया। दशहरे को विजय दशमी भी कहा जाता है यानि हर बुराई पर विजय (नियन्त्रण) पाना यही इस पर्व का मुख्य संदेश है। श्रीराम चौदह कलाओं के स्वामी थे। राज्य के मोह से दूर रहे। सीता और लक्ष्मण भी वनों में हर पल उनके साथ रहे। यह पर्व मर्यादा में रहने का ही संदेश देता है। इस कलियुग में राम नाम का जाप हर कष्ट दूर करता है। देवी दुर्गा ने भी कई दैत्य मार कर धर्म की रक्षा की इसलिए नवरात्र-दशहरा व रोशनी के पर्व दिवाली का हमारे जीवन में विशेष महत्व है।

एक बार भगवान शिव के क्रोधित हो जाने पर दशानन ने अपने दस शीश एक-एक कर शिव को अर्पित कर दिए तो दस रुद्र शान्त हो गए लेकिन ग्यारहवें रुद्र हनुमान रुष्ट हो गए। इसी शिव के रुद्र हनुमान के सहयोग से श्रीराम ने रावण का अन्त कर दिया। यदि रावण अहंकार व अनीति का मार्ग न अपनाता तो उसे कोई मार न पाता। अहंकार मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। रामलीला मंचन, नवरात्र व दशहरा हमें यह संदेश भी देते हैं। अहंकार से दूर रहो। कन्या पूजन करने वाले न तो कन्या पर जुल्म करते हैं न ही ऐसा सहन कर सकते हैं यही सच्ची पूजा है। हमारे शास्त्रों में कन्या को देवी का रूप कहा गया है। इसी कन्या से संसार का चक्र चलता है। इसके हर रिश्ते से प्यार ही झलकता है। इसकी रक्षा हेतु संकल्प लेकर पर्वों का उद्देश्य हम सार्थक कर सकते हैं। फिर किसी विशेष अभियान चलाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

कहानी

जिंदगी के रंग

अशोक दर्द

मैं अपने बरामदे में बैठा पहाड़ों की खूबसूरती को देख रहा था। इस बार कई सालों के बाद मैं घर आया था। नीचे सड़क में गाड़ियां आ जा रही थी। सामने पहाड़ों पर जहां तक नजर जा रही थी बिछी हुई सड़कें पहाड़ की छाती पर उभरी लकीरों सी लग रही थीं।

अब इन पहाड़ों पर चढ़ाई उतराई से लोगों को राहत मिल गई थी। गांव में सड़कें पहुंच चुकी थीं। जहां नहीं भी पहुंची थीं वहां भी फासला कम हो गया था।

वर्षों पूर्व यूं तो देखने में पहाड़ सामने नजर आता था परंतु वहां पहुंचना इतना कठिन था कि पूरा पूरा दिन लग जाता था और रास्ते भी इतने खराब होते थे कि थोड़ा सा पैर फिसला तो समझो गई जान।

परंतु अब ऐसा नहीं था। सड़कों के जाल को देख कर मुझे तसल्ली हो रही थी। आजादी के पचहत्तर सालों बाद पहाड़ की तस्वीर भी बदली थी और तकदीर भी। लोगों के जीवन स्तर में बहुत बदलाव आया था। नई पीढ़ी के लोगों ने तो वैसा जीवन देखा ही नहीं था जैसा मैंने या मेरी पीढ़ी के लोगों ने जिया था। यदि इस पीढ़ी के लोगों के साथ उस जीवन की चर्चा भी की जाए तो उन्हें विश्वास दिलाना मुश्किल ही नहीं कठिन भी है कि हमारा जीवन कैसा रहा है।

मैं भी तो अब अपने गांव अपनी गाड़ी से आया था। घर पर पार्किंग में अपनी गाड़ी खड़ी कर रखी थी। यह सोचता हुआ मैं अतीत और वर्तमान के झूले में बैठा जैसे झूलने लगा।

अतीत की हिलोर आई और मैं चालीस बरस पीछे जा पहुंचा। जब यहां गांव में ना तो पक्के मकान थे और ना सड़कें। यहां तक कि ठीक से चलने के लिए रास्ते भी नहीं थे। बड़ा ही कठिन जीवन था। लोग अनपढ़ता और अंधविश्वासों की चपेट में थे।

अगर कोई बीमार हो जाता तो ओझों के पास जाते डॉक्टर के पास नहीं। यूं भी आज की तरह न तो अस्पताल थे और न ज्यादा डॉक्टर। पास के कस्बे में एक दो बिना डिग्री के डॉक्टर यानी कि वैद्य हुआ करते थे। लोग उन्हीं पर निर्भर थे। वहीं से दवाई लेते, ठीक हुए तो ठीक वरना राम नाम सत है ऐसी स्थिति थी।

मुझे याद आया उस दिन शाम के समय अम्मा गौशाला से आकर बोल रही थी— आज भैंस ने दूध नहीं दिया। बीमार हो गई है ... घास भी नहीं खा रही है।

यही तो सारी पूंजी थी। इसके दूध के बूते ही सारा परिवार चलता था। नमक, तेल और हमारी पढ़ाई का खर्चा। तीन किलो दूध लगाया था गांव के एक आदमी को। गांव से यह व्यक्ति सारा दूध इकट्ठा करके कस्बे में ले जाता था। छः रुपए किलो के हिसाब से दिन के अट्ठारह रुपए बन जाते थे। उसी से पूरा घर चलता था। यह भैंस नहीं एक तरह से पूरे परिवार का कमाऊ पूत था।

भैंस के बीमार होते ही पूरा परिवार यानी अम्मा बापू और हम दो भाई सकते में थे। अब क्या किया जाए। बापू कह रहे थे अभी तक इस भैंस को खरीदने का पिछला कर्जा भी नहीं चुका पाए हैं। अगर इसे कुछ हो गया तो हम तो कहीं के नहीं रहेंगे। बापू रुआंसे से होकर अम्मा से कह रहे थे। हम दोनों भाई पास बैठे सुन रहे थे। हमें उनकी यह परेशानी ज्यादा समझ तो नहीं आती थी, परंतु हम इतने छोटे भी नहीं थे कि समझ न सके उनके इस दुख को, उनकी इस परेशानी को, उनके इन आंसुओं को।

आधी रात को अम्मा बापू ने तो हमें खाना खिला कर सुला दिया परंतु उन दोनों ने पूरी रात गौशाला में काटी। अम्मा बापू भैंस की सेवा में लगे रहे पूरी रात। सुबह जब हम उठे तो अम्मा कह रही थी कि भैंस ने घास का एक तिनका भी मुंह में नहीं डाला।

आस-पड़ोस वाले भी हमारे इस दुःख में शामिल थे। कोई कहता इसने घास में जहरीला कीड़ा खा लिया है। तो कोई कहता शायद इसने जहरीली घास खा ली है। इसलिए सभी उस जहर को उतारने के अपने-अपने तरीके से अपने-अपने टोटके बता रहे थे। कोई कहता इसे अजवाइन खिलाओ, कोई कहता फलां पेड़ की पत्तियां पीसकर खिलाओ। तो कोई कहता इसके पेट को मलो, शायद उसके पेट में दर्द है। अम्मा बापू सब कुछ करने में लगे थे जो जैसा बता रहे थे वैसा कर रहे थे। परंतु भैंस ठीक नहीं हो रही थी।

धीरे-धीरे दिन चढ़ आया था, परंतु भैंस की तबीयत और ज्यादा खराब हो गई थी। वह लेट गई थी। अब अम्मा बापू ने उसकी रस्सियां खोल दी थीं। शायद वह धीरे-धीरे मौत के मुंह में जा रही थी। दिन के कोई बारह बजे होंगे जब भैंस मर गई। अम्मा का रो-रो कर बुरा हाल था। बापू उसे हौसला दे रहे थे। अड़ोसी-पड़ोसी भी हौसला दे रहे थे, कह रहे थे ...कोई बात नहीं, पशु ही तो है और खरीद लेना, कोई आदमी थोड़ी है।

पर वह क्या जाने कि यह उनकी भैंस नहीं कमाऊ पूत था, जिसके बूते घर चलता था।

आज घर में खाना नहीं बना, घर में मातम पसरा था। थोड़ी देर में गांव के मर्द इकट्ठे हुए और भैंस को गौशाला से निकाल कर खेतों के रास्ते गिराते हुए हशनाले के किनारे तक ले गए और वहां गहरा गड्ढा बनाकर उसमें उसे दबा दिया। उधर घर में अम्मा का रो-रोकर बुरा हाल था आज ऐसे लग रहा था जैसे घर का कोई प्राणी सदा के लिए बिछड़ गया हो। खैर दुनिया स्वार्थी है। हमारे परिवार का भी स्वार्थ रहा होगा। भैंस परिवार के सदस्य की तरह पूरे परिवार को पाल रही थी। इसलिए परिवार का भैंस के मोह में बंधा होना स्वभाविक था। कहते हैं न सभी को अपना सुख प्यारा होता है। हमारे परिवार को भी अपना सुख प्यारा था।

उस जमाने में गांवों में अक्सर पशुपालन ही मुख्य व्यवसाय हुआ करता था। पशुओं के बूते ही लोगों की रोजी-रोटी चलती थी। पहाड़ की जमीने तो मौसम पर निर्भर रहती आई हैं। किसानी हो या बागबानी मौसम साथ दे तो ठीक वरना मेहनत भी पल्ले नहीं पड़ती।

किसानी-बागबानी में तो आज भी संभवतः वही हालत है। कभी आंधियों में बगीचों के बगीचे खत्म हो जाते हैं तो कभी सूखे या भारी बरसात से खड़ी फसलें तबाह हो जाती हैं। किसान बागबान आज भी बेचारा है लाचार है। यह बेचारगी और लाचारगी आज भी इनकी जैसे नियति हो, और इस नियति को स्वीकारना आज भी इनकी जैसे विवशता है।

दो-चार दिन यूं ही मातम में बीत गए तो पिताजी ने एक बार फिर हिम्मत की। गांव के जिस व्यक्ति से पहले कर्ज लिया था फिर उसके पास पहुंच गए। अपनी सारी राम कहानी सुनाई। जमाना अच्छा था अभी पिछली रकम भी वापस नहीं की थी और फिर पैसे चाहिए थे।

कहते हैं न मूल से ब्याज ज्यादा प्यारा होता है। इसी ब्याज के लालच में या फिर पिताजी की लाचारगी को देखकर गांव के उस सेठ ने एक बार फिर हामी भर दी और पिताजी को भैंस लेने के लिए पांच हजार रुपए ब्याज पर फिर कर्ज दे दिए। पिछली राशि डालकर पिताजी के सिर पर कर्ज का बोझ भारी हो गया था।

कस्बे में पंजाब से व्यापारी भैंसे बेचने के लिए लाते थे। पिताजी उनसे पांच हजार रुपयों में फिर भैंस खरीद लाए। कस्बे से गांव के लिए रास्ता बहुत खराब था। जंगल के रास्ते से भैंस को लाने के लिए गांव के तीन चार लोग पिताजी के साथ गए थे। घर में एक बार फिर अम्मा खुश थी कि चलो रोजी रोटी फिर चल पड़ेगी।

सुबह चले थे कस्बे से परंतु रास्ता खराब होने के कारण शाम के समय तक गांव तक पहुंचने ही वाले थे कि अचानक भैंस का पांव फिसला। फिर उसे संभालना मुश्किल था। वह देखते ही देखते ढांक से नीचे गिर गई और मर गई।

भैंस के गिरते ही पिताजी भी फूट-फूट कर रोने लगे। जब घर पर पता चला तो अम्मा और हम सारा परिवार फूट-फूट कर रोने लगे। अम्मा को देख तो ऐसा लग रहा है जैसे पूरी दुनिया ही लुट गई है। उसकी आंखों से आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे। भैंस को लेने गए पिताजी और बाकी लोग खाली हाथ घर लौट आए। एक बार फिर घर में मातम पसर गया।

अब पिताजी के पास इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह दोबारा कर्ज लेकर और भैंस खरीद लें। अब बड़ी मुश्किल से घर चलने लगा। कुछ दिनों बाद सेठ को लगा की पिताजी उसकी रकम वापस नहीं कर पाएंगे तो एक दिन वह घर आए और बोले, सुनो हरदयाल तुम मेरी दी रकम वापस नहीं कर पाओगे। क्योंकि तुम्हारे पास अब आमदन का कोई साधन नहीं है, और मुझे लगता है कि अब आपको यह रास्ते वाला खेत मुझे दे देना चाहिए। ताकि तुम्हारा कर्जा भी उतर जाए और मुझे भी अपनी रकम की चिंता न रहे।

क्योंकि पिछले तीन महीनों से आप मूल तो कहां सूद भी नहीं दे रहे हो। इसलिए तुम्हारी इसी में भलाई है कि तुम इस खेत को मुझे दे दो। अगर आप प्यार से नहीं दोगे तो भी मैं इसको ले लूंगा और हां एक शर्त पर आपको सुविधा देता हूं कि जब आप मेरी रकम ब्याज सहित लौटा दोगे तो मैं यह खेत आपको वापस लौटा दूंगा। मरता क्या न करता पिताजी के पास कोई और विकल्प तो था भी नहीं। उन्होंने खेत देने के लिए हामी भर दी। और सेठ जी को कहा कि आपको जब मैं सारी रकम लौटा दूंगा उस दिन आप मेरा खेत मुझे लौटा देना। बस मेरी इतनी सी ही आपसे विनती है। लोग ईमानदार हुआ करते थे उस जमाने में। पिताजी और सेठ जी के बीच का अनुबंध लिखित नहीं था सिर्फ जुबान का अनुबंध था और उसका गवाह भी कोई और नहीं था सिर्फ हमारी मां और हम दो भाई।

फसल के खत्म होते ही अगली फसल सेठ ने बीज दी हमारे इस खेत में। किसान का खेत कोई और ले ले इससे ज्यादा पीड़ादायक स्थिति कोई और नहीं होती उसके लिए। पिताजी के भीतर भी न जाने कितनी पीड़ा थी इस खेत को सेठ को दे देने के बाद। परंतु कोई चारा भी तो नहीं था। जमीन तो मां होती है किसान के लिए। उसे किसी और को दे देना उसे कभी गवारा नहीं होता।

समाज में भी पिताजी को शर्म महसूस होती कि कर्ज न चुका पाने के कारण उसे अपना खेत गिरवी रखना पड़ा। लोग तरह-तरह की बातें करते। कई बार ऐसी बातें हमारे कानों तक भी पहुंचती। सुनकर हमें भी ऐसा लगता जैसे किसी ने सीसा पिघलाकर हमारे कानों के रास्ते दिल तक उड़ेल दिया हो, मन पीड़ा से भर जाता।

जब सेठ के बैल हमारे खेत को जोत रहे थे तो पिताजी आंखें आंगन में बैठे आंसुओं से भर आई थीं। मैंने उनके चेहरे पर पहली बार इतनी पीड़ा देखी थी। उसी समय मैंने प्रण किया कि मैं बेशक पढ़ाई छोड़ दूंगा परंतु अपने खेत वापिस लेकर रहूंगा। उसके लिए चाहे मुझे कितना भी संघर्ष करना पड़े कितनी ही मेहनत करनी पड़े। फिर मैंने एक दिन स्कूल छोड़ दिया।

(शेष पृष्ठ नौ पर)

ग़ज़ल

नाम ले-ले के वो बदनाम किया करते हैं,
बात पर्दे की थी पर सरेआम किया करते हैं।

इनके तोहफे कब मिले कोई पता नहीं,
चुपके से जुर्म दोस्तों के नाम किया करते हैं।

खुद बन गए जाहिद तुम्हें फतवा काफिर का
कुछ इस तरह एहसान तमाम किया करते हैं।

उम्मीद न थी जिनसे कि बात भी करेंगे,
झुक-झुक के कई बार सलाम किया करते हैं।

हमें अब समझ में आया इस अकीदत का राज,
लोग तो बस अपनी खातिर काम किया करते हैं।

दो

क्या खूब हुआ बदनाम तेरे शहर में,
रुसवाई के मिले इनाम तेरे शहर में।

मैखाने में गया जब कल पहली बार,
हंसने लगे थे जाम तेरे शहर में।

आज तो जी भर के बहक लेने दे,
ये है आखिरी शाम तेरे शहर में।

बड़े शौक से मना लेना जश्ने बहार,
नहीं मिलेगा मेरा नाम तेरे शहर में,

गर मिली पनाह मौत की आगोश में,
नहीं पहुंचेगा वो पैगाम तेरे शहर में।

रवि वर्मा

सामान्य ज्ञान

जीन सम्पादन क्या है?

जीन सम्पादन तकनीकों का एक समूह है, जो वैज्ञानिकों को जीवों के डी.एन.ए. में बदलाव करने की क्षमता प्रदान करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी खाद्य फसलों के जीनोम के विशेष क्षेत्रों में जेनेटिक पदार्थों को जोड़ने, हटाने अथवा उन्हें संशोधित करने की सुविधा प्रदान करते हैं। पौधों के अन्दर जीन सम्पादन सुसंस्कृत पौधों की कोशिकाओं में किया जाता है। जिन्हें बाद में पूरे पौधों में पुन: उत्पन्न किया जा सकता है।

1. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा देश भर में जल संरक्षण को लेकर शुरू किए गए अमृत सरोवर अभियान में हिमाचल प्रदेश के किस जिले ने प्रथम स्थान हासिल किया है ?
2. हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष कौन हैं ?
3. कुल्लू के हिमतरू प्रकाशन द्वारा प्रकाशित कविता संग्रह 'हाशिये वाली जगह' का संपादन किसने किया है ?
4. हिमाचल सड़क परिवहन निगम बसों में किराए में महिलाओं को 50 प्रतिशत रियायत प्रदान करने के लिए कौन सी योजना आरम्भ की गई है ?
5. वर्ष 2020 के लिए भारतीय सिनेमा के सर्वोच्च सम्मान दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से किसे सम्मानित किया गया है ?
6. प्रसिद्ध रुद्रसागर झील किस राज्य में स्थित है ?
7. देश के 49वें मुख्य न्यायाधीश कौन हैं ?
8. 17वां प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन (2023) भारत के किस शहर में प्रस्तावित है ?
9. इंग्लैण्ड के बर्मिंघम में संपन्न 21वें राष्ट्रमण्डल खेलों में भारत ने कितने स्वर्ण पदक हासिल किये हैं ?
10. भारत के वॉरेन बफेट एवं शेयर मार्केट के बुल कहे जाने वाले किस इन्वेस्टर का निधन अगस्त 2022 में हुआ था ?
11. भारत और अमेरिका की सेनाओं के संयुक्त अभ्यास का 13वां संस्करण 2022 में किस नाम से सम्पन्न हुआ ?
12. विश्व हॉकी दिवस कब मनाया जाता है ?
13. संत तुकाराम किस संप्रदाय के संत और कवि थे ?
14. बेजा नृजातीय समूह कहां पाया जाता है ?
15. डॉगर बैंक मत्स्य क्षेत्र किस सागर में स्थित है ?

प्रस्तुति : चन्द्रशेखर वर्मा

उत्तर : 1. सिरमौर, 2. रामेश्वर सिंह ठाकुर, 3. गणेश गनी, 4. नारी को नमन योजना, 5. आशा पारेख, 6. त्रिपुरा, 7. न्यायमूर्ति यू. यू. ललित, 8. 8-10 जनवरी 2023 को इंदौर में, 9. 22, 10. राकेश झुनझुनवाला, 11. वज्र प्रहार 2022, 12. 12 अगस्त, 13. वारकरी, 14. मिस्र में, 15. नार्क सी में।

बाल कहानी

अनन्त आलोक

मुंडू

माँ सुना रही थी और हम पांचों भाई-बहन बड़े मनोयोग से सुन रहे थे। अक्सर ऐसा होता था। कहानी सुनते-सुनते चार बहनों में से किसी एक को तो अवश्य नींद आ जाती थी। मुझे कभी नींद नहीं आई , इसलिए माँ को पूरी कहानी सुनानी ही पड़ती थी। हां , बहनों के सो जाने से माँ का उत्साह कभी कम नहीं होता था। वह वैसे ही एक-एक बात बड़े सलीके से सुनाया करती थीं।

मैंने जब माँ से पूछा कि क्या ये कहानियां आपको नानी सुनाती थी ? तो उन्होंने कहा नहीं तुम्हारी नानी तो कभी कहानी सुनाती ही नहीं थी। उन्हें कहानियां नहीं आती थीं। उन्हें तो घर के कामों से ही फुर्सत नहीं मिलती थी। गाय-भैंस की सेवा, घास-पानी, गोबर, दूध बस इसी में सारा दिन खप जाता था। फिर भी सब को खाना खिलाते, बर्तन मांजते दस तो बज ही जाते थे सोने के लिए। वह थक भी जाती थी और हमने कभी कहा भी नहीं कि कहानी सुनाओ। वे कह देती थी मुझे नहीं आती, जाओ बापू से सुन लो।

मैंने जब माँ से पूछा कि क्या ये कहानियां आपको नानी सुनाती थी? तो उन्होंने कहा नहीं तुम्हारी नानी तो कभी कहानी सुनाती ही नहीं थी। उन्हें कहानियां नहीं आती थीं। उन्हें तो घर के कामों से ही फुर्सत नहीं मिलती थी। गाय-भैंस की सेवा, घास-पानी, गोबर, दूध बस इसी में सारा दिन खप जाता था। फिर भी सब को खाना खिलाते, बर्तन मांजते दस तो बज ही जाते थे सोने के लिए। वह थक भी जाती थी और हमने कभी कहा भी नहीं कि कहानी सुनाओ। वे कह देती थी मुझे नहीं आती, जाओ बापू से सुन लो।

ये कहानियां तो तुम्हारे नाना मुझे सुनाते थे। 'अच्छा तो नाना कोई काम नहीं करते थे क्या ?' नहीं बेटा नाना काम करते थे। बहुत सारा काम करते थे। लेकिन उनका काम दिन में होता था न।' माँ बोली। 'अच्छा जैसे हमारे पापा दिन में ड्यूटी जाते हैं वैसे ही नाना भी जाते होंगे न ?' छोटे वाली बहन धनु बोली।' 'नहीं तुम्हारे नाना तो बिजनेस मैन थे।' 'अच्छा यानि के व्यापारी' हां, 'व्यापारी मतलब बिजनेस मैन और बिजनेस मैन मतलब व्यापारी।' नीलू ने समझाया।

'तो सुनो बच्चों तुम्हारे पापा तो हर रोज शाम को घर आ जाते हैं न! लेकिन हमारे पापा यानि तुम्हारे नाना तो कई -कई दिन तक घर नहीं आते थे। आज मैं तुम्हें जो कहानी सुनाने जा रही हूं। वह उनकी अपनी कहानी है। उन्होंने बताया था एक बार वे माल लेकर अम्बाला गए थे। गाड़ी से माल उतारने में देर हो गई। कुछ तो पहले से हम लोग देर से पहुंचे थे। जैसे ही हमने माल उतरवाया और पेमेंट ली, वैसे ही हमारे पीछे कुछ चोर-गुंडे लग गए। चारों ओर एक ऊंची दीवार थी। मैं अकेला था और साथ में रुपये भी थे पांच हजार। उस समय पांच हजार रुपये पचास हजार के बराबर होते थे।' 'अच्छा तो उस समय के रुपये बड़े होते होंगे।' बीच में सीमा ने कहा।' नहीं बेटा! उस समय पैसे की कीमत ज्यादा होती थी। मान लो आज एक बिस्कुट का पैकेट कम से कम दस रुपये का आता है। उस समय इतना ही पैकेट चार आने का आ जाता था।' माँ ने समझाया तो ममता बोल पड़ी 'ये चार आने क्या होते हैं माँ ?' 'चार आने मतलब एक रुपये का चौथा भाग, जिसे हम एक बटा चार भी कहते हैं।' मैंने समझाया। 'अच्छा ये तो हमने भिन्न में पढ़ा था।' वह पुनः बोली। हां हां , एक बटा चार को चार आने और एक बटा दो को आठ आने कहते थे उस समय। मां अब आगे सुनाओ न 'हां तो बच्चों हम कहां थे।' माँ ने थाह लेनी चाही तो सभी बोलो पड़े 'अम्बाला में नानू ने माल के पैसे लिए ...।' 'हां, नाना ने जैसे ही पैसे लिए तो उनके पीछे कुछ गुंडे लोग लग गए। वे कह

रहे थे पहाड़ी है। पहाड़ी तो वैसे ही मुंडू होता है, इसे पकड़ो और पैसे छीन लो। नाना ने यह बात चुपके से सुन ली। 'ये मुंडू क्या होता है माँ ?' मैंने पूछा और सबने सिर हिला कर मेरी हां में हां मिलाई। 'मुंडू यानि सीधा-साधा, भोला आदमी, जिसे कोई भी ठग दे। हमारे पहाड़ों के लोग बड़े सीधे और भोले होते थे पहले। अब भी हैं लेकिन अब पढ़े लिखे हो गए हैं। उन्हें शहरों के चालाक लोग आसानी से ठग लेते थे। लूट लेते थे, मार भी डालते थे। घरवालों को तो पता भी नहीं चलता था कि हमारा आदमी कहां गायब हो गया। शहरी लोग बड़े चालाक होते हैं। तो आगे सुनो तुम्हारे नाना क्योंकि अक्सर बाहर जाया करते थे, तो थोड़ी बहुत चालाकी, होशियारी उन्होंने भी सीख ली थी। थोड़े पढ़े-लिखे भी थे। उन्होंने देख लिया कि वे लोग गेट पर डंडे लेकर खड़े हो गये। वहां एकदम अंधेरा था, तो नाना ने बारह फुट ऊंची दीवार एक झटके में फांद ली और चार दीवारी से बाहर हो गए। लेकिन वे नाना का पीछा करते हुए उनके पीछे भागे। नाना ने एक-एक को खूब पीटा। उनके हाथ में रस्सियों का बंडल था और उसी से सबकी एसी की तेसी कर डाली और भाग गये। वहां निकट के गांव में उनका एक दोस्त रहता था। वे अक्सर उसी के पास ठहरा करते थे। दोनों का व्यापार भी एक ही था अदरक का व्यापार। बस उसी के घर जाकर जान और धन दोनों बचा लिए।' 'ओह्ह नाना तो बड़े बहादुर थे। हाँ बच्चों नाना किसी से कभी डरते नहीं थे। और बिना बात के किसी को तंग भी नहीं करते थे। हां यदि कोई उनको परेशान करता तो उसे नानी याद दिला देते थे। चलो अब सब सो जाओ अगली कहानी कल।

कविता

दो अक्तूबर

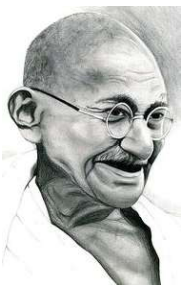

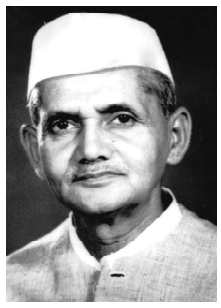

बापू गांधी और लाल बहादुर
भारत मां के मुकुट को सजाने
आज के दिन मिले दो रत्न,
जिन्होंने सजाया ये वतन, ये वतन
सीधे, सच्चे, भोले-भाले थे उनके मन,
पहने धोती रहते थे, वे नंगे बदन।
पीते थे बकरी का दूध
खाते थे वे अल्पा अन्न।

माला-माल थे वे इस कदर,
सब्रो, शान्ति का था अपार धन,
झूठ कभी न कहते थे,
कहते थे वे सदा सच्चे वचन,
गुरबत का ना था उनको गम,
राम नाम में रहते थे सदा मगन।

करके देश की सेवा अनमोल,
धन्य कर लिा अपना जीवन
उनके शुभ कर्मों की खुशबू से
महक रहा है, देश का चमन,
आज के दिन मिले दो रत्न
जिनसे सजता अपना वतन
आओ, हम भी इस धरती का,
कुछ तो कर्ज चुकायें
अपना कर इनके वचनों को
जीवन सफल बनायें
अपना जीवन सफल बनायें।

✍ निर्मला चन्देल 'नीरू'

जिंदगी के रंग

(पृष्ठ आठ का शेष)

कस्बे के एक ढाबे पर मुझे बर्तन धोने का काम मिल गया। पिताजी नहीं चाहते थे कि मैं स्कूल छोड़ूं।

परंतु मैंने पिताजी को कह दिया था कि मैं अब आगे नहीं पढ़ूंगा। उस समय मैं सातवीं में पढ़ता था और मेरी उम्र थी लगभग तेरह साल। फिर एक दिन मैं ढाबे से भागकर अमृतसर चला गया। मैंने सुना था कि वहां गुरुद्वारा है। वहां मुफ्त में लंगर मिल जाता है। मैंने सोचा जितने दिन मुझे काम नहीं मिलेगा मैं वहीं खाना खा लूंगा।

कस्बे से जब मैं निकला तो मुझे नहीं पता था कि शहर इतने बड़े होते हैं। वहां पहुंचकर मुझे घबराहट होने लगी। इतने ज्यादा लोग इतनी बड़ी-बड़ी इमारतें, सड़कें, पुल, चहल -पहल, ये सब मैं पहली बार देख रहा था।

यहां आकर मैं सबसे पहले पूछते-पूछते गुरुद्वारे में पहुंच गया। वहां लंगर भी चखा और रात भी सराय में बिताई। दूसरे दिन मैं काम की तलाश में निकला तो एक आढ़ती ने मुझे काम पर रख लिया। तीन साल तक मजदूरी से जो पैसा कमाया वह सेठ का कर्जा उतारने के लिए पर्याप्त था। अब मेरी उम्र भी सत्रह वर्ष की हो गई थी। मैं घर आया और पैसे बापू के हाथ पर रखकर कहा -बापू आप सेठ का कर्जा उतार दो। बापू ने सेठ को पैसे दे दिए और सेठ ने हमारे खेत से कब्जा छोड़ दिया। मैं फिर शहर में रम गया। मेरी मेहनत और उसकी रहमत रंग लाई। आढ़ती के कोई बच्चा नहीं था। उन्होंने मुझे अपने बच्चे की तरह रखा और मुझे अलग से कारोबार खोल दिया। मेरा कारोबार चल निकला, अब मैं अपना व अपने आढ़ती का कारोबार स्वयं चलाता।

अब मेरे अम्मा बापू को भी कोई तंगी नहीं थी। वे अभावों के दिन गुजर गए थे। अब वही गांव के लोग मेरे पिताजी को दुआ सलाम करने लगे थे। अब मेरे पास कोठी कार बंगला सब कुछ था। गांव में भी और शहर में भी। अब मेरे पास नहीं थे तो अम्मा बापू नहीं थे। बाकी सब कुछ बदल गया था मेरा जीवन भी और मेरे गांव का जीवन भी। अब पैदल रास्ते नहीं थे न पगडंडियां थीं, सड़के थीं और गाड़ियां। मैं सोचते-सोचते अतीत के द्वंद से बाहर निकला तो सिंदूरी धूप पहाड़ों की चोटियों से विदा लेने लगी थी। मैं कुर्सी से उठा और बरामदे से अंदर कमरे में आ गया। जिंदगी के कई रंग मेरे मानस पटल पर आ- जा रहे थे। अब ख्यालों का सारा जाला खुल चुका था।

शाकाहार ही जीवन का सही आधार है

शाकाहार जीवन का आधार है इस बात को आधुनिक विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है फिर भी कुछ लोग पर्यावरण के विपरीत आचरण को सही सिद्ध करने के लिए झूठे तर्क गढ़ते हैं। शाकाहार मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। जीवों का जीवन समाप्त कर पैदा हुआ आहार हमारे जीवन का आदर्श कैसे हो सकता है! जीवन का आदर्श होना चाहिए शाकाहार। प्राचीन जगत पर दृष्टि डालने पर ज्ञात होता है कि शाकाहार का प्रारंभिक रिकॉर्ड ईसा पूर्व छठी शताब्दी में प्राचीन भारत और प्राचीन ग्रीस में पाए जाता है। 1847 में स्थापित शाकाहारी सोसाइटी ने लिखा कि इसने लैटिन 'वेजिटस' अर्थात 'लाइवली' (सजीव) से 'वेजिटेरियन' (शाकाहारी) शब्द बनाया। मध्यकालीन यूरोप में भिक्षुओं के कई नियमों के जरिये सन्यास के कारणों से मांस का उपभोग प्रतिबंधित या वर्जित था, प्राचीनकाल में रोमन साम्राज्य के ईसाईकरण के बाद शाकाहार व्यावहारिक रूप से यूरोप से गायब हो गया।

अंतर्राष्ट्रीय शाकाहारी संघ, 1908 में स्थापित किया गया है। पश्चिमी दुनिया में, 20वीं सदी के दौरान पोषण, नैतिक और अभी हाल ही में, पर्यावरण और आर्थिक चिंताओं के परिणामस्वरूप शाकाहार की लोकप्रियता बढ़ी है। सृष्टि पर मानव का अवतरण हुआ तो प्रकृति ने उसके पोषण के लिए विविध कंद-मूल फल-फूल पैदा किये ताकि उनका समुचित विकास हो सके। मानव ने अपने जीवन का आदर्श शाकाहार को बनाया, लेकिन वही असंतोषी मानव भला कब तक शांत रहता, पशुओं की देखा-देखी उसने पशु-मांस का आस्वादन किया और मांसाहार मानव की प्रवृत्ति हो गयी। शाकाहारी मानव मांसाहारी के सभ्य मानवों पर सदियों बाद भी हावी है और हम मिथ्या तर्क-वितर्क करते हैं कि मांसाहार श्रेयस्कर है मांसाहार पुष्टिकारक है। नहीं, नहीं, एकदम नहीं। मांसाहार हमारे जीवन का आदर्श हो ही नहीं सकता। यह तो अमानुषी आधार है। मांसाहार के उप्पारण मात्र से ही मनोमस्तिष्क में घृणित भाव उत्पन्न होने लगते हैं। मांसाहारी निरीह पशु-पक्षियों की हत्या का पाप अपने सर पर ढोता है, उसे मानसिक शांति कभी नहीं मिलती। कितने आश्चर्य की बात है कि वैज्ञानिक युग में निवास करने वाले हम मानव जानकर भी अनजान बन रहे

✍ अंजु अग्निहोत्री

हैं कि मांस में ऐसे जैविक रसायन होते हैं, जो अत्यन्त ही हानिकारक है। मांसाहार कितना हानिकारक है यदि आप यही जानना चाहते हैं तो पढ़िये उन हजारों गोमांस ब्रिटेनवासियों से जिनके बंधु-बांधवों को इस भयावह राक्षस ने ग्रस लिया। कुछ माह पश्चात शोधों से ज्ञात हुआ कि प्रिजोना नामक रोगाणु के संक्रमण से गोमांस विषाक्त हो जाता था। जरा सोचिए, ऐसी बीमारियां अन्य पशुओं के मांस में भी तो फैल सकती है। शाकाहारियों के मुखमण्डल पर अप्रतिम संतोष की लकीर खिंची रहती है उसके मनोमस्तिष्क में दिव्य शांति रहती है और शरीर स्वस्थ रहता है। उसके स्वस्थ मस्तिष्क एवं स्वस्थ चित्त में सर्वदा उदात भावनाएं मूर्तरूप धारण करने के लिए हिलोरें भरती हैं। धन्य शाकाहार जो मानव को उत्थान की राह प्रशस्त कर उसे जीवन में सफल बना देता है। यह आवश्यक नहीं कि एक शाकाहारी व्यक्ति चरित्रवान हो किन्तु परिजन होने के लिए शाकाहारी होना नितांत आवश्यक है। क्या हम पसंद करेंगे कि कोई हमे मारकर खा जाए ? जब मृत्यु इतनी असुंदर है तो हम निरीह पशुओं का वध क्यों करें ?

साहित्य साक्षी है कि लोकोत्तर पुरुषों के जीवन का आदर्श शाकाहार था। महाबली श्री हनुमान जी से आधुनिक काल के स्वामी विवेकानंद तक जितने भी लोकोत्तर पुरुष हुए हैं, सबने शाकाहार का ही व्रत लिया। महात्मा गांधी ने कहा था- 'मैं मर जाऊंगा, लेकिन मांसाहार नहीं करूंगा।' विज्ञान को ही अपना आराध्य मानने वाले अमेरिकी लोगों ने भी भारी संख्या में मांसाहार त्याग कर शाकाहार अपनाया है। विश्व के विभिन्न देशों में यह शाकाहार क्रांति जोरों पर है। फिर हमारा तो शताब्दियों से यही मंत्र रहा है सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्चन्तु मा काश्चिद् दुःख भाग्भवेत्। भला हम मासूम जानवरों की हत्या क्यों करें ? वह भी अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु। आज जरूरत है ऐसे मानव की, जो तन-मन और संस्कारों से स्वस्थ और सुदृढ़ हो। हम आज से, अभी से यह निश्चय कर लें कि हम मांसाहार नहीं करेंगे। वहीं दूसरी ओर अमेरिकन डाएटिक एसोसिएशन और कनाडा के आहारविदों का कहना है कि जीवन के सभी चरणों में अच्छी तरह से योजनाबद्ध शाकाहारी आहार स्वास्थ्यप्रद, पर्याप्त पोषक है और कुछ बीमारियों की रोकथाम और इलाज के लिए स्वास्थ्य के फायदे प्रदान करता है।

पहाड़ी भाषा कनै साहित्य लोक मंच

गिरिराज साप्ताहिक, शिमला 05-11 अक्तूबर 2022

यऐ कदेईया बरसातां

दो साल पैअले जिंआ कोरोना बिमारी जाने दा नां नी लेया दी थी उनां ई इबकनी बरसात जाने दा नां नी लेया दी। इसा बरसाती ते पूरे मुल्के च मता नुकसान करी तेया। फसलां रूड़ी गईयां, रस्ते सड़कां रूड़ी धंसी गयै, कुत्थु बरसाती नालेयां ने माह्णुआं दी जिंदड़ी उजाड़ी दित्ती, कुत्थु बिजली गिरी, कुत्थु बाढ़ देई आई कि लोकां दी उम्रां दी कमाईयां मुक्की गईयां, कदी बरी मणे बिच्च ख्याल औंदा कि प्रमात्मा गरीब माह्णुआ जो कैं कुदरती मार मारदा मुसीबतां दी बिजली कजो पांदा। यऐ कदेईयां बरसातां लागीयां जाने जो नी औंदिया। हे परमेसरा हुण तां ठैर कर दिआली बी नेड़े ओया दी, बरसात कैअनी जाअदी हर माह्णू अजकल ऐई गलांदा। पूरे श्राद बरसाती च निकली गयै, अगर इब्बे यऐ बरसात नी मुक्की तां नराते-दशहरा वी वरखा च ई सिनदे जाणे हन्। देये असार दुस्सा दे हन् इबकीया बरसाती दे।

पिछला वख्त जे असां याद करन तां अजकल दे दियाड़ेया च बडी छैल तिक्खियां छुप्पा लागीयां थिंया। असा उनां धुप्पा विच्च अपणे खिंद खंदौलू वथेरे सुखाये थे। अंगण द्वार वी सुक्खे रैअ्दे थे कणै घरां च वी सेजल नी थी, दुआरां च वी सल्लाब नी थी कनै इब्बे दिक्खा तुसां खिंद खदौलुयां च सडैण पौणा लागीयो, घर द्वार पाणिये च डुब्बयो हन्, दुआरां दरकी गईयां, जिआ आजकल रिश्ते दरका दे। कदी बरी असां सोच्चदे इंजा ई नी कोई मुसीबत बखेड़ा खड़ा हुदां कुत्थु न कुत्थु इनां बखेडेयां दी जड़ असां दे अपणे सुआर्थ (स्वार्थ) लालच ही हन् जिनां दिया वजहा ते कुदरती मार असां जो पौंदी ऐ कुत्थु देईयां वी मजबूरियां हुंदियां जोड़ियां माह्णुये ते गल्त कम्म कुरदियां हन्। बोलदे ताली इक्की हत्थे नी बजदी अगर बजदी ऐ तां तुसां बजाई के दस्सां..बजणे तां वी कोई उवाज नी और्णी।

मुहाबरे कावतां साच्चियां बाणीयां हन्, बडे पैअले ते ई असां सुणदे आये हन् के शास्त्रां दियां गल्लां सोलह आणे सच्च हुंदिया। जिआं-जिआं असां तरक्की करा दे हन् उज्जां उज्जां शास्त्रां दियां गल्ला जो नकारदे-विसारदे जा दे हन्। तरक्किया दे नामे पर असां बुजुर्ग सरीखें रुक्ख वड्डी-कट्टी दित्ते, सड़कां बनाने खातर बड्डे-बड्डे पाअ्ड कट्टी दित्ते हौर बी मता नुकसान असां कुदरत जो पुजाया। बरसाती पैअले वी हुंदियां घिंया हर मौसम वारोबरिया औंदे जांदे थे खरे वांके लगदे थे कुदरत कणै माह्णुये बिच्च इक्क तालमेल गणया हुंदा था। कुदरत विच्च असां ईश्वर दे दीदार करदे थे रुक्ख बूट्टेयां जो बड्डणे कटणे ते डरदे थे। शास्त्रां विच्च ई लिक्खिया के जालू वी असां जो फुल्ल डालिया ते तोड़ना होए ता असदा मंत्र पढ़ना चाइदां तुलसिया दा पत्ता तोड़ना होए ता उसदी आज्ञा लैणा पौंदी पर असां नौये जमाने दे माह्णू कुत्थु इना डुग्गियां गल्लां जो मणदे।

कुत्थु देया विचार करदे असां रुक्खे ते फल तोड़ने जो वी पत्थर मारदे असां पत्थर मारणा सिक्खियो कुत्थु पत्थर लगने दी पीर मसूस कित्ती जालू जी पत्थर मार पत्थर मारदे जालू पता लगदा कि पीर क्या हुंदी पत्थर बजणे दा दर्द क्या हुंदा। पत्थरवाजां कदैडी पीर कुस्सी दी झेल्ली हुंगी अपणे ऊप्पर। लेण देण कुदरत दा पर चलदा रैअ्दा। जदेया जदेया असां कुदरत जो दिंगे सैई असां जो मिलणा ऐ। जदेया व्यवहार असां कुस्सी ने करदे हन् जदेयां ई असां जो भुगतना पौंदा ऐ। कर्मा दा लेखा जोक्खा जरूर हुंदा। इसा सच्चाईया जो सिरे ते समझना हुंगा। अज्ज असां अपणे टप्परू बनाने तांई पंछियां दे, पशुआ दे कणै नदियां दे वसेरे उजाड़ी दित्ते, इसजो दिक्खदेयां नदियां ने वी माह्णुये दे बसेरे उजाड़ी दित्ते। हिसाब कताब बराबर। ताली दोनां हत्था बज्जी..सुनोई कि नी सुनोई तुसां जो पत्ता।

अहां दियां सरकारां पर्यावरण जो बचाण दी वथेरी कोससां तां करा दियां हन् पर हर माहणू वी अगर अपणी जिम्मेवारी जो समझगां तांई पर्यावरण बचगा। असां खबरां च सुणया कि हुण तां कारां, मोटर साईकलां देईया बजारे च औणिया हन् जोड़ियां असमान च उड़णिया, मतवल कि जिआं, हवाई जहाज उड़दे उनां कारां मोटर साईकलां वी देईयां वणानियां जेड़ियां कि असमाने च उड़ादियां दुसाणीयां किंजा जमीना पर तां माह्णुये जगहां नी छड्डी चलणे जो तां हुण असमाने च कब्जा करना पंछी तां माहणू

श्रीगीता च वी श्रीकृष्ण जी ने कर्म दा उपदेश दित्तया सैह चाहदे तां भाग्य जो बलशाली दसदे पर नई ना, उनां कर्म जो प्रधान बनाया। जदेया कर्म करगे जदेया फल्ल मिलगा। कनै उनां दी गल्ल हमेशा सोलह आणे खरी वैंअदी। असां अपणे आले आले दुआले कितणे भिखारियां जो दिक्खदे हन् पिक्ख मंगदे हर योनि विच्च कुत्ते वित्लेयां जो दिक्खदे बांदर उजाड़ करदे, उना दे हुड़दंग जो दिक्खदे पिछले कर्मा दा नतीजा ऐ जेड़ा इस जन्म विच्च भुगता दे हन् तांई शास्त्र गलांदे खरे कर्म करां ताकि चौरासी लक्ख योनियां दे चकरे च नी पौणा पौए पर असां माया दे चक्करे च फसी के इनां गल्लां जो पुल्ली जाअ्दे हन्।

बणी के रैहया पछियां सांई उड़ने तांई कारां-मोटरसाईकलां बनाणियां चद्रमें पर तां असां जमीनां वी खरीदी लिंया सिर्फ बसेरे बणाने जो रैई गये औणे आले टैमे विच्च असां चद्रमें ते ई धरता जो दिक्खणा ऐ तरक्की देई गलांदी। अजकणा माहणू जो मर्जी जो करी सकदा देया लगदा साईस इतणी अग्गे बधी चुकियो कि असां अपणे हिसाबे कब्जै दुनियां जो चला दे हन्। हर कैसी दा रिमोट असां दे हत्थे विच्च ऐ। इस

वंदना राणा

रिमोट सिस्टम कब्जै असां अपणे मनमुताबक हर चैनल चला दे हन्। पर इसा गल्ला दा हमेसा ख्याल करणेयो, जालू 'उसदा' रिमोट चलदा जालू सारा कुछ कंट्रोल हुंदा।

असां सोच्चा समझा दे हन् कि पूरी दुनियां असां दी मुठ्ठी बिच्च ऐ। सोशल मीडिया दे जरिये असां कुछ वी करा दे कमा दे, सोशल घट कणै प्रचारक ज्यादा बणा दे कोई खड्डा च डुब्बा मरा दा असां उसदी फोटो बनाई के सोशल मीडिया च पाई देया दे। कुत्थु नौंअदी कुडियां दे फोटो बनाई के सोशल मीडिया च पाई के ठगी-ठगाई दे कम्म धंधे करा दे हन् असां सोच्चा दे बडा खरा कम्म करा दे हन् पर इसदा जरा वी अंदाजा नी कि इसदी सजा क्या हौणी। हर कर्म दी सजा हुंदी ऐ बुरे कर्मा दी सजा सबनां जो मिलदी ऐ कितना बि कोई दिखावा 'खरे' बनने दा कोई करी ले। कर्म अपणे कर्ता जो जन्म जन्मान्तर तक तोपदा रैहदा कर्म करी के तुसां भुल्ली जाणा पर कर्त्ता होणे दे नाते कर्म तुसां जो कदी नी पुलदा। तांई तां गलादे हन् जदेया वाया जदेयां मिलणा।

श्रीगीता च वी श्रीकृष्ण जी ने कर्म दा उपदेश दित्तया सैह चाहदे तां भाग्य जो बलशाली दसदे पर नई ना, उनां कर्म जो प्रधान बनाया। जदेया कर्म करगे जदेया फल्ल मिलगा। कनै उनां दी गल्ल हमेशा सोलह आणे खरी वैंअदी। असां अपणे आले आले दुआले कितणे भिखारियां जो दिक्खदे हन् पिक्ख मंगदे हर योनि विच्च कुत्ते वित्लेयां जो दिक्खदे बांदर उजाड़ करदे, उना दे हुड़दंग जो दिक्खदे पिछले कर्मा दा नतीजा ऐ जेड़ा इस जन्म विच्च भुगता दे हन् तांई शास्त्र गलांदे खरे कर्म करां ताकि चौरासी लक्ख योनियां दे चकरे च नी पौणा पौए पर असां माया दे चक्करे च फसी के इनां गल्लां जो पुल्ली जाअ्दे हन्। कदी कुस्सी जो मारा दे कदी कुस्सी जो ठगा दे हन्.। कदी कुस्सी ने बेईमानी करी के दूजेयां दे हकां जो खा दे हन्. ..असां दे सामने गलांदे थे कि पता नी कुस्स जन्मे भुगतना पौणा ऐ..।

इस वास्ते खरी, सादी, संतोखी जिदडी हर माह्णू जो जीणा चांईदि ऐ। कणै कई माह्णू देई ईमानदारी दी जिंदडी जिआ दे वी हन्, तांई तां ऐ धरत् टिक्कियो ऐ। अज्ज बी असां सुणदे हन् कि फलाणे माह्णुये पैसेयां दा भरया झोला, फलाणे जो वापस कितया....पिच्छे शिमले दी इक्की खबरा च असां पढ़या था कि टैक्सिया विच्च कुस्सी दे लक्खा रुपये दा बैग रैई गया था। टैक्सी आले ने पुलिसा जो दित्तया कणै फिरी जिसदे पैसे थे पुलिसा उस दे हवाले कित्ते..तांई गलाया अज्ज वी ईमानदार माह्णू हन्, ईमानदारी जिंदा ऐ। तांई यऐ धरत खडौतियो टिक्कियो ऐ। अगर अज्ज बी हर माहणू देई ईमानदारी दी जिंदड़ी जिए तां असां दा समाज कितना खुशहाल होई जांगा अगर असां अपणी जिदड़ी दूजये दी भलाई च लगांगे तां असां हर जन्म विच्च सुखी जीवन जींगे। असां कई माह्णुयां जो अमीरी च दिक्खदे तां उनां अपणे पिछले जन्मां विच्च खरिया कमाईया कित्तिया हुंगिया तांई इस जन्म विच्च राज करा दे हन्। बोलदे हन् मानस जिदि मिल्लियो तां इसनो खरे कर्मा ने चमकाई लेया। यऐ गल्लां चूठ्ठियां नी हन्..सच्च मन्ना श्राद्ध श्रद्धा दा दुआ नां समझी के तुसां मनाये. विश्वास ऐ तांई मनाये इजां थोड़ी मनाने थे.. प्रमात्मे सांई पितर वी सच्चे हन्..उना जो तृप्त करी के असां दी जिंदड़ी तृप्त हुंदी ऐ..। शास्त्रा दी हर गल्ल सच्ची ऐ इसजो मणदे होए अपणी कुदरत जो संवारा-सुआरा, हिफाजत करा। यऐ कदेईया बरसातां लाग्गीयां चुकणे दा नां नी लेयादियां अपणे जल-जंगल जमीन बचांगे ता यऐ बरसातां थमौगियां। तरक्की जरूरी ऐ तरक्की दे सौगी सौगी कुदरत दे वक्खे भी ध्यान देना जरूरी ऐ। शरीर ऐ तांई आत्मा ऐ..आत्मा ऐ तांई शरीर ऐ। उजां ई कुदरत ऐ तांई माह्णुये दी जिद्दी ऐ, अगर कुदरत नी ऐ तां माह्णुये दी जिंदड़ी वी नी ऐ। सवनां जो मिली के, समाज दे हर तबके जो अपणे पर्यावरण जो बचाणे दी जिम्मेबारी निभानी हुंगी। कोरोना जो नठाने तांई जिंआ दुआई कड़ाई कित्ती उनां बरसाती जो थमाने तांई वी देया कोई कम्म करना हुंगा जिसते टैमे पर बरसात आये कणै चल्ली जाए। टैमे-टैमे पर बारोबारिया मौसम औंगे-जांगे तां माह्णुये दा जीणा सौक्खा बणया रैहंगा..बिन मौसमे बरसाते होए, चाए कोई वी मौम हुंगा खरा नी लग्गा। इस खातर असां-तुसां-सबना जो सोचना पौणा ऐ। अति हर चीज दी बुरी हुंदी. .इसा बरसाती दी बी अति होई चुकियो ऐ...अज्जे ते ई मौसम दी सेहता दे बारे च कुच्छ करना पौअ्णा ऐ। यऐ धरत जलमग्न होए उसते पैअ्ले बचणे दे जुगाड़ सबनां जो करने हुंगे।

31अगस्त-6 सितंबर दे अंका ते अग्गै)

माला काव्य : अन्तर

मनका छंद-92

मेरा बणीं के मिञ्जो ही तैं,
अन्दरैं डुग्गी मार चलाई।
मिट्ठिया साणीं पता नीं लग्गा,
बत्त मेरी दित्ती पटुआई।
देही जरेब तैं फैंकी मित्रा!
सिर-मुण्ड बी फटुआई दित्ता।
क्या था तूं कमाणां मित्रा!
क्या तूं एह कमाई दित्ता।
तैं गलाया इक्क-मिक्क करनैं,
एह अन्तर कैंह पाई दित्ता।

93

खरा था अपणैं खान्दा-जीन्दा,
गल्लां नैं उटकाई दित्ता।
मूहण्डा था मेरा थी रफळ तेरी,
ढल्हाका तैं बड्डा कराई ही दित्ता।
रिह्या बणान्दा था तूहीं तां सारा,
मिञ्जो तां थल्लैं लुआही दित्ता।
क्या था तूं कमाणां मित्रा!
क्या तूं एह कमाई दित्ता।
तैं गलाया इक्क-मिक्क करनैं,
एह अन्तर कैंह पाई दित्ता।

94

छुट्ट भलियाईया सब्बो गुण थे,
बधेयो होर बधाई दित्ते।
भोळे -भाळे अज्ज बी मित्रा!
सारे ही कजो डराई दित्ते।
अपणां भिरी मिया खोड्डा सिक्का,
सैह्बी तैं चम्मकाई दित्ता।
क्या था तूं कमाणां मित्रा!
क्या तूं एह कमाई दित्ता।
तैं गलाया इक्क-मिक्क करनैं,
एह अन्तर कैंह पाई दित्ता।

95

थी भुक्ख मिञ्जो भत्ते दी मिया!
लुग्गड़ा तैं खुआई दित्ता।
अपणां कजो बचाया सारा,
मेरा खूहैं पाई दित्ता।
दूर कोहां पर मेरा उसदा,
टिप्पड़ा तैं बणाई दित्ता।
क्या था तूं कमाणां मित्रा!
क्या तूं एह कमाई दित्ता।
तैं गलाया इक्क-मिक्क करनैं,
एह अन्तर कैंह पाई दित्ता।

96

नीं रेहियो हुण घड़ियो रोट्टी,
हंड्डुए दा बी मुक्का चार।
बाहैं दिक्खणैं जो सब बांके,
अन्दरे दे हिन्न सब बमार।
मिट्ठा जैह्र बिका दा सारैं,
घर -घर एह पुजाई दित्ता।
क्या था तूं कमाणां मित्रा!
क्या तूं एह कमाई दित्ता।
तैं गलाया इक्क-मिक्क करनैं,
एह अन्तर कैंह पाई दित्ता। (क्रमशः)

हरिकृष्ण मुरारी

झग्गू-टोपू कने गंतरयाल़ा

म्हांचला रे ग्रांवा मंझ छैल छैल रीत-रिवाज देखणे जो मिलाहे येओं रवाज आज वी मन मोही लैहे। सह जे परेम-प्यार, भाइवो, करूणा, आश-वश्वास, मिलणा बरतणा, खाण- पीण, शुभ-शीष मिला हीं तिधीरे ता कहणे हे क्यांहे लायधे-लायधे रवाज लगभग लोका चार सबणी बिचा छैल वांके सनेहे ल्हुखी रे हुएं येओं सब माहणु जो माहणु बणाई रखने वास्ते मते खरे है। जेबे धीया रे घरा बालक जन्मा ता गंतरयाले ध्याड़े नानके आवले झग्गू-टोपू ल्यौंहें। एकी गीता पर झग्गू टोपू रा वरणन कित्ती रा। क्याए-क्याए ल्याई ओ भाभीगे क्या-क्याए ल्याई । झग्गू-टोपू ल्याई ओ भाभीगे झग्गू टोपू ल्याई। किसको ल्याई ओ भाभीगे किस को ल्याई। घिग्गे को ल्याई ओ भाभीग, घिग्गे को ल्याई । घिग्गा जम्मैया था, गुड बांडेया था। आस्साओ दित्ता बिनी था, आस्से खादा बिनी था। तेरा झग्गू आवला जीए, तेरा टोपू आवला जीए। तेरा थालीया केशर, तेरा भला करे प्रमेश्र। गंतरयाले ले पहिले छेह्वुंवे घ्याड़े बाम्हण पुरोहित पंज्जगरन पूरे घरा छिड़कांहा फेरी पुरोहित कने बच्चे रे ननहयाला जो जाहें, दूभ दें बधाई देंदे। ननयाली पुरोहेता जो नसरावा, दान-दछणा देहें। कने जवाई जो भेंट देहाएं। धीयूआ रे आम्मा-बापू आपणी बेटी जो धीयू-मेवेया री सुंढ बी बणाई करी भेजाहें। गंतरयाले आनी कि बच्चे हुणे रे तेहरूएं ध्याड़े मठीया रे माओ-बाब आपणे दोहितू जो झग्गू-टोपू ल्यौंहें। पैहले ता येओं झग्गू-टोपू आपू बणाहें थे आ फेरी सोई ले बणवाहें थे। झग्गू होर टोपू सौगी सुथणू, फालतरू, छुण छुणे - खेलणू, चांदी रे कांगणू देहें। हियूंद हुआ ता ऊनी कपड़े ल्याहेंए। इहां ता आपणी बेटी जावई जो बी कपड़े ल्यौहें होर भी भेंट रही घरा रे सबणी जो किछ ना किछ भेंट जरूर रहां ई छल-छैल पक्वान बणाहें। ननह्याली बी छडोलू ल्यौहें। सवाहली, बेटूंआ, भल्ले, बाबरू-भठावरू, छडौलू बिचा हुए। बालका सौगी सबणी जो समान ता छड़ा परा ल्यौहें। गंत रयाले ध्याड़े आपणे-बगाने, नाते रिश्तेदार सब सादे जाहें। खूब गाणा बजाणा चला। गाई र गोबरा के चौका देई कने बच्चा चौके पर रखेहैं, सौगी बच्चे रे आम्मा बापू बी बैठ है। पुरोहेत बच्चे रे ग्रैह-गोचर बांचा, नांव रखा। भियाई बी बणाहें। भियाई री हर साल पूजा-अर्चणा कराहें। हवन -पूजन करी के कुलारा पुरोहित विदा हुई जाहां। झग्गू होर टोपू बड़े नर्म कपड़े रा बणाया जाहां। खास करी के टोपू बड़े साफ- सुथरे कने नापी तोली के बणाहें। टोपू इहां रैहा था जिधी ले बालका रा मूंड गोल रहोए। सिर त्रेफला आ बडडा नी हो। बच्चे माथा तुम्बी छैल बणो कने दमाक बी बांका बणो। इधी वास्ते झग्गू टोपू बौत छैल बणाहें। झग्गू बच्चे जो पीड्ढा नी बणो, चुभो नी इधीरा पूरा-पूरा ध्यान रखाहें।

झग्गू होर टोपू बड़े नर्म कपड़े रा बणाया जाहां। खास करी के टोपू बड़े सफ-सुथरे कने नापी-तोली के बणाहें। टोपू इहां रैहा था जिधी ले बालका रा मूंड गोल रहोए। सिर त्रेफला बडडा नी हो। बच्चे माथा तुम्बी छैल बणो कने दमाक बी बांका बणो। इधी वास्ते झग्गू टोपू बौत छैल बणाहें। झग्गू बच्चे जो पीड्ढा नी बणो, चुभो नी इधीरा पूरा-पूरा ध्यान रखाहें।

झग्गू होर टोपू नेणे-ल्योणे म्हांचली संस्कृति कने समचारा, मेल-जोला रा वांका जे अंग हे ऐस सभ चारा कने प्रवार जुड़ी रे हुए तिन्हा रे रवाज, संस्कार, सोच मना रा वांकपना, नेह-नीत सब जुड़ी रा हुआ। एस्स गंतरयाले ध्याड़े जेस्सरे घरा जे कारज हुआं जे सैह करसाण हा ता तेस्सरे कमीण आनी कि स्याथड्ड बी द्रूभ लई के बधाई देंदे आहवें। करसाण तिन्हा सबणी रा इज्जत मान कराहें कने समरथा रे तई तिन्हा जो भेंट बी देहे। कई स्याथड्ड बालका जो झग्गू-टोपू बी ली आहवें। नानी-नानू, मामी मामा आ बुआ गंतरयाले बिच पुज्जाहें ता जनाने छैल-छैल गीत बी गाहीं। गाणेया रे सीधे-सादे बोल कने स्वर-लय सबणी जो आपणे पासे खींजी लेंदी। झग्गू-टोपू री इस गाणे परा वांकी सज्जाहीं

खेल मेरे बालका रंगीला तेरा छुण छुणू/ किन्ने ल्यांदा झग्गू टोपू किन्ने ल्यांदा छुण छुणू/ नानीए ल्यांदा झग्गू टोपू नानुएं ल्यांदा छुण छुणू/ खेल मेरे बालका रंगीला तेरा छुण छुणू।

कृष्ण चंद्र महादेविया

राज्य सरकार ने कर्मचारियों को प्रदान किए अधिकतम लाभ - मुख्यमंत्री

राज्य के कर्मचारी सरकार की रीढ़ हैं और वे सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने यह बात गत दिनों मंडी के विपाशा सदन में मंडी के कर्मचारियों द्वारा आयोजित 'एक शाम मंडी के कर्मचारियों के साथ' समारोह को संबोधित करते हुए कही।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने हमेशा अपने कर्मचारियों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखे हैं क्योंकि वे सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि राज्य में कर्मचारियों की संख्या प्रदेश की जनसंख्या के अनुपात में अधिक है। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी के बावजूद कर्मचारियों से संबंधित अधिकांश मामलों का समाधान किया है। उन्होंने कहा कि कोविड-19 संकट के बावजूद राज्य सरकार ने कर्मचारियों को पूर्ण वेतन, पेंशन और अन्य सभी वित्तीय लाभ प्रदान किए हैं ताकि उन्हें किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि अनुबंध कर्मचारियों के नियमितीकरण की अवधि को तीन वर्ष से घटाकर दो वर्ष तथा दैनिक वैतन भोगियों के नियमितीकरण की अवधि को भी एक वर्ष कम किया गया है।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने हाल ही में 'हिमाचल प्रदेश कौशल विकास और रोजगार निगम कंपनी' गठित करने का निर्णय लिया है जो सरकारी विभागों, बोर्डों, निगमों, विश्वविद्यालयों इत्यादि में कुशल, अर्द्ध-कुशल और अन्य श्रम शक्ति की तैनाती सुनिश्चित करेगी। उन्होंने कहा कि इससे कर्मचारियों को काफी राहत मिलेगी।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि राज्य सरकार ने हिमाचल पथ परिवहन निगम की बसों में बस किराए में महिलाओं को 50 प्रतिशत की छूट देने का भी निर्णय लिया है, जिससे सरकारी और निजी क्षेत्र में काम करने वाली लाखों महिला कर्मचारियों को मदद मिल रही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के नेताओं ने राज्य सरकार के इस निर्णय का भी विरोध किया था।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर राज्य सरकार ने कर्मचारियों और पेंशनभोगियों को 1 जनवरी 2016 से संशोधित वेतनमान के एरियर की पहली किश्त जारी करने की घोषणा की थी। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश के लाखों कर्मचारियों को संशोधित वेतनमान का एरियर इस वर्ष सितंबर माह के वेतन में प्राप्त होगा। इससे राज्य के लगभग 2.25 लाख कर्मचारी और 1.90 लाख पेंशनभोगी लाभान्वित होंगे।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि 3 जनवरी, 2022 को जारी पे रिवीजन रुल में संशोधन करके 89 श्रेणियों के कर्मचारियों को उच्च ग्रेड वेतन का लाभ प्रदान किया गया है, इसके अतिरिक्त प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में कार्यरत लगभग 3,200 प्रवक्ताओं और प्रोफेसरों को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के 7वें वेतनमान का लाभ प्रदान किया है। उन्होंने कहा कि एक जनवरी 2016 से 31 मार्च, 2022 तक संशोधित यूजीसी स्केल पर अनुमानित 337 करोड़ व्यय किए जाएंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिहाड़ी मजदूरों की दिहाड़ी में 140 रुपये की वृद्धि हुई है। वर्ष 2017 में दिहाड़ीदारों को 210 रुपये मिल रहे थे, जिसे बढ़ाकर अब 350 रुपये कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि राज्य के एक लाख से अधिक एनपीएस कर्मचारियों को लाभान्वित करने के लिए एनपीएस में सरकार के योगदान को 10 से बढ़ाकर 14 प्रतिशत कर दिया गया है तथा उन्हें ओपीएस कर्मचारियों के समान डेथ कम रिटायरमेंट ग्रेच्युटी (डीसीआरजी) का लाभ प्रदान किया गया है। उन्होंने कहा कि ग्रेच्युटी की अधिकतम सीमा को 10 लाख रुपये से बढ़ाकर 20 लाख रुपये किया गया है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन से जुड़े कर्मचारियों की समस्याओं का भी शीघ्र समाधान किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार चतुर्थ श्रेणी के सभी कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति 60 वर्ष निर्धारित करने पर भी विचार करेगी। उन्होंने मंडी में एनजीओ भवन के लिए 15 लाख रुपये और मंडी में कर्मचारियों के लिए सरकारी आवास की मरम्मत के लिए 2 करोड़ रुपये देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि हिमाचल पथ परिवहन निगम के परिचालकों और जिला परिषद के कर्मचारियों की समस्याओं का भी समाधान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सरकार जल रक्षकों की अंशकालिक अवधि को 12 से कम कर आठ वर्ष करने पर भी विचार करेगी।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने कर्मचारियों के लिए हाउस बिल्डिंग एडवांस की दरों, पात्रता और सीलिंग में संशोधन को भी स्वीकृति प्रदान कर हाउस बिल्डिंग एडवांस की अधिकतम सीमा अब मूल वेतन का 25 गुना की है। उन्होंने कहा कि 12 वर्ष तक निरंतर सेवा देने वाले पंचायत चौकीदारों को भी दिहाड़ीदार बनाया जाएगा।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री को कर्मचारी संघ मंडी ने 1,11,111 रुपये का चेक मुख्यमंत्री राहत कोष के लिए भेंट किया।

कर्मचारी कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष घनश्याम शर्मा ने कहा कि पिछले लगभग पांच वर्षों के दौरान प्रदेश के कर्मचारी राज्य सरकार और मुख्यमंत्री के साथ खड़े रहे हैं।

मुख्यमंत्री से रक्षा विनिर्माण क्षेत्र के अधिकारियों की भेंट

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर से गत दिनों ओकओवर में रक्षा विनिर्माण की प्रसिद्ध भारतीय कंपनी एसएमपीपी के कार्यकारी निदेशक आशीष कंसल और एसएमपीपी की सहभागी जर्मन कंपनी रैनमैटल एसए के मुख्य कार्यकारी अधिकारी जैन पैट्रिक हैलमसन, वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी विलेम एरास्मस और कंपनी के महाप्रबंधक (प्लांट इंजीनियरिंग) जेएस ड्यू टॉयट ने भेंट की।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने दोनों कंपनियों के प्रतिनिधियों एवं उच्च अधिकारियों से हिमाचल प्रदेश के नालागढ़ में प्रस्तावित निवेश के संबंध में चर्चा की। ये कंपनियां नालागढ़ में डिफेंस मेन्युफैक्चरिंग से संबंधित उद्योग स्थापित करने जा रही हैं।

शिक्षा का उद्देश्य संस्कारी व सभ्य नागरिक बनाना

राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने गत दिनों चौपाल उपमंडल के बलसन में सरस्वती विद्या मंदिर विद्यालय नेरवा के नव निर्मित भवन का लोकार्पण किया। हिमाचल प्रदेश के किसी भी राज्यपाल का नेरवा क्षेत्र का यह पहला दौरा था।

इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि हिमाचल प्रदेश शिक्षा समिति द्वारा राज्य में शिक्षा का व्यापक विस्तार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य संस्कारी और सभ्य नागरिक तैयार करना है क्योंकि इन्ही मूल्यों के कारण देश सुरक्षित रह सकता है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा समिति आगे बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि कोई भी देश अपनी विरासत को संजो कर ही विकास और प्रगति करता है।

श्री आर्लेकर ने कहा कि देश में शिक्षा के प्रति अनुकूल वातावरण बनाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू की गई है। हिमाचल शिक्षा समिति के प्रयासों की सराहना करते हुए राज्यपाल ने कहा कि लोगों को समिति के साथ सहयोग करना चाहिए और इन शिक्षण संस्थानों का अधिक से अधिक विस्तार किया जाना चाहिए। उन्होंने स्कूल के लिए लगभग दो बीघा जमीन दान देने के लिए स्थानीय निवासी मियां शवान सिंह की सराहना की।

अटल सुपर स्पेशियलिटी आयुर्विज्ञान संस्थान में सेवाएं आरंभ

(पृष्ठ एक का शेष) स्वास्थ्य मंत्री और वर्तमान में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा को भी जाता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी 5 अक्तूबर को बिलासपुर में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) का लोकार्पण करने जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऊना में 450 करोड़ से पीजीआई सैटेलाइट सेंटर भी स्थापित किया जा रहा है। इसके अलावा केंद्र सरकार ने नेरचौक, नाहन, चंबा और हमीरपुर में मेडिकल कॉलेज स्थापित किए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि हिमाचल प्रदेश में इस समय छह सरकारी मेडिकल कॉलेज और निजी क्षेत्र में भी एक मेडिकल कॉलेज संचालित किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार का लक्ष्य राज्य की मौजूदा स्वास्थ्य अधोसरंचना को मजबूत करना है। उन्होंने कहा कि इस संस्थान में 10 सुपर स्पेशलाइज्ड विभाग, जिनमें 50 आईसीयू और केन्द्रीकृत ऑक्सीजन आपूर्ति वाले 283 साधारण बिस्तरों की सुविधाएं हैं। उन्होंने कहा कि इस अस्पताल में नौ ऑपरेशन थियेटर, दो कैथ लैब और सिटी स्कैन की सुविधा भी उपलब्ध होगी। उन्होंने कहा कि इस संस्थान में ओपन हार्ट सर्जरी, एंजियोप्लास्टी, टी.ए.वी.आई, बी.एम.यू. आई.वी.यू.एस. तथा 4-डी अल्ट्रासाउंड की सुविधा होगी। इसके अलावा अस्पताल में डायलिसिस सहित नेफ्रोलॉजी सेवाओं के अलावा न्यूरोसर्जरी, किडनी प्रत्यारोपण और यूरोलॉजी प्रोसिजर्स की सुविधा होगी, जिसमें लेप्रोस्कोपिक सर्जरी और लिथोट्रिप्सी शामिल हैं।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि इस सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल में जीआई एंडोस्कोपी, कॉलोनोस्कोपी, न्यूरोलॉजी सेवाएं, ई.ई.जी, ईएमजी और स्ट्रोक थेरेपी जैसी महत्त्वपूर्ण स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज जिस एडवांस्ड डायग्नोस्टिक सेंटर का शिलान्यास किया गया, उससे स्वास्थ्य सुविधाएं और अधिक सुदृढ़ होंगी। उन्होंने कहा कि इसके अन्तर्गत सभी अति विशिष्ट विभागों में उन्नत डायग्नोस्टिक सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर मिशन के अन्तर्गत भविष्य में कोविड महामारी जैसी आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए राज्य में स्वास्थ्य सुविधाओं को और सुदृढ़ करने के लिए 350 करोड़ से 14 क्रिटिकल केयर ब्लॉक स्थापित किए जाएंगे।

उन्होंने कहा कि प्रत्येक क्रिटिकल केयर ब्लॉक के निर्माण पर पर 25 करोड़ खर्च किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि इस अस्पताल में प्लास्टिक सर्जरी की भी सुविधा होगी और इस चिकित्सा संस्थान के लिए लगभग 300 पद सृजित किए गए हैं।

स्वास्थ्य मंत्री डॉ. राजीव सैजल ने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार के कार्यकाल के दौरान 1860 डॉक्टरों की भर्ती की गई है और चिकित्सकों के 500 पदों को भरने की प्रक्रिया जारी है। उन्होंने कहा कि जरूरतमंद लोगों के इलाज के लिए मुख्यमंत्री चिकित्सा सहायता कोष योजना चलाई जा रही है। उन्होंने कहा कि इस अवधि में 48 ऑक्सीजन प्लांट और 1000 से अधिक वेंटिलेटर उपलब्ध करवाए गए हैं। इसके अतिरिक्त राज्य में ऑक्सीजन युक्त बिस्तरों की क्षमता 11000 से अधिक है। उन्होंने कहा कि इसका श्रेय मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर को जाता है, जिन्होंने लोगों को उनके घर द्वार पर बेहतर स्वास्थ्य सुविधा सुनिश्चित की है। इस अवसर पर अटल सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल के प्रधानाचार्य डॉ. रजनीश पठानिया ने मुख्यमंत्री और अन्य गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया।

इस अवसर पर शहरी विकास मंत्री श्री सुरेश भारद्वाज, पूर्व विधायक श्री रूप दास कश्यप, राज्य खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति निगम के उपाध्यक्ष बलदेव तोमर, प्रधान सचिव स्वास्थ्य सुभासीष पन्डा, आईजीएमसी की प्रधानाचार्या डॉ. सीता ठाकुर, भाजपा जिलाध्यक्ष रवि मेहता, भाजपा नेता विजय ज्योति सेन, उपायुक्त शिमला आदित्य नेगी और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

इसके उपरांत मुख्यमंत्री ने निर्माणाधीन ढली टनल के कार्य का भी निरीक्षण किया और निष्पादन एजेंसियों को कार्य समयबद्ध पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने 1.26 करोड़ से बनने वाली कार पार्किंग और ढली के समीप सामुदायिक केन्द्र का शिलान्यास भी किया।

शिमला, धर्मशाला में प्लॉट निर्माण के लिए...

(पृष्ठ एक का शेष) प्रदान की। इसके आलावा बैठक के दौरान बद्दी, परवाणू, शिमला व रोहडू क्षेत्रों में व्यावसायिक सम्पतियां विक्रय करने की अनुमति प्रदान की गई जिसकी अनुमानित लागत लगभग 30 करोड़ रुपये है। निदेशक मण्डल ने परवाणू में क्षतिग्रस्त उठऊ पेयजल योजना की मुरम्मत के लिए धनराशि की स्वीकृति प्रदान की व इस कार्य को जल्दी शीघ्र पूरा करने के निर्देश दिए। बोर्ड द्वारा हिमुडा के कर्मचारियों व पेंशनरों के लिए संशोधित वेतनमान व पेंशन की स्वीकृति भी प्रदान की गई । निदेशक मण्डल ने हिमुडा में लिपिक, स्टेनौ टाईपिस्ट, कनिष्ठ अभियन्ता सिविल व इलेक्ट्रीकल, कनिष्ठ प्रारूपकार सिविल, सहायक कंम्प्यूटर प्रोग्रामर व विधि सहायक के प्रारम्भिक भर्ती व पदोन्नति नियमों में संशोधन की स्वीकृति प्रदान की। इसके अलावा टेक्निशियन व चालक के भर्ती नियमों में छूट व वरिष्ठ आशुंलिपिक के एक पद के लिए सेवा मानदंड में छूट की अनुमति प्रदान की।

बैठक में निदेशक मण्डल ने हिमुडा में लिपिक, स्टेनौ टाईपिस्ट, कनिष्ठ अभियन्ता सिविल व इलेक्ट्रीकल, जूनियर ऑफिस असिस्टैंट आई.टी., स्टैनो टाईपिस्ट, कनिष्ठ प्रारूपकार सिविल, सहायक कंम्प्यूटर प्रोग्रामर व विधि सहायक के 42 पदो को अनुबंध के आधार पर भरने व सहायक अभियन्ता के तीन पदों को पदोन्नत करने की मंजूरी प्रदान की गई।

बोर्ड ने हिमुडा के वर्ष 2021-2022 के संशोधित बजट व 2022-2023 के बजट अनुमान के अनुमोदन को स्वीकृति प्रदान की।

PUBLIC NOTICE

I, Satish Kumar Sharma aged 67 years S/o Sh. Baldev Dutt Sharma R/o Village Ghumarwin, P.O. Baliah Tehsil Barsar, Distt. Hamirpur (HP) do hereby solemnly declare and affirm that I have been married to Sunita Sharma D/O Sh. Bali Ram R/O of Village Tihri, P.O. Phahal, Tehsil Galore, Distt. Hamirpur (HP) on 06.12.1982 as per Hindu rituals and ceremonies. But somehow this marriage was not entered /registered with the Gram Panchayat, Baliah in the Marriage Record Register. However the name is entered in the Ration Card and other records. Now, I, Satish Kumar Sharma and my wife Sunita Sharma want to obtain marriage certificate for visa / Passport for visiting abroad. Therefore, our marriage may be registered or entered in the marriage Register of my Gram Panchayat Baliah.

डाक पंजीकरण संख्या : एच.पी./42/एस.एम.एल. 2021-2023 साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

जुब्बल-कोटखाई क्षेत्र में 186 करोड़ की विकासात्मक परियोजनाओं के लोकार्पण व शिलान्यास

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर जिला शिमला के जुब्बल-कोटखाई विधानसभा क्षेत्र में हिमाचल गठन के 75 वर्ष के समारोह के दौरान जुब्बल स्टेडियम में विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों शिमला जिला के जुब्बल-कोटखाई विधानसभा क्षेत्र में अपने एक दिवसीय दौरे के दौरान 186 करोड़ रुपये लागत की 43 विकासात्मक परियोजनाओं के लोकार्पण और शिलान्यास किए।

हिमाचल प्रदेश के गठन के 75 वर्ष के उपलक्ष्य में जुब्बल स्टेडियम में आयोजित ''प्रगतिशील हिमाचल स्थापना के 75 वर्ष '' कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि लगभग पांच वर्ष के कार्यकाल के दौरान प्रदेश सरकार ने जुब्बल-कोटखाई क्षेत्र के चहुंमखी विकास को हमेशा विशेष प्राथमिकता दी है।

मुख्यमंत्री ने 57 करोड़ रुपये लागत की 24 विकासात्मक परियोजनाओं के लोकार्पण किए। उन्होंने 3.42 करोड़ रुपये की लागत से जुब्बल बाजार से संतोषी नगर संपर्क मार्ग में सुंदली नाला पर निर्मित 35 मीटर पुल, 17 लाख रुपये की लागत से निर्मित अंबेडकर भवन जुब्बल, जुब्बल में 56 लाख रुपये की लागत से निर्मित पशु चिकित्सालय भवन, 59 लाख रुपये की लागत से निर्मित नेहरा घाटी बाड़ा लोस्टा सड़क, 53 लाख रुपये की लागत से बनी घुण्डा तलका सड़क, 58 लाख रुपये की लागत से बनी धंदरोटी पुड़ग सड़क, 57 लाख रुपये की लागत से बनी खनोग बटोग सड़क, थरोला में 70 लाख रुपये लागत से निर्मित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला भवन, कलबोग में 1.09 करोड़ रुपये की लागत के पशु चिकित्सालय भवन, कुपड़ी नाला में 3.67 करोड़ रुपये लागत के 22 के.वी. कंट्रोल प्वाइंट का लोकार्पण किया।

प्रगतिशील हिमाचल: स्थापना के 75 वर्ष

मुख्यमंत्री ने ग्राम पंचायत रावला क्यार के लिए 1.31 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित जलापूर्ति योजना, 88 लाख रुपये लागत की ग्राम पंचायत क्यारवी के लिए जलापूर्ति योजना, जल शक्ति उपमंडल गुम्मा के अन्तर्गत शेष बस्तियों में नल कनेक्शन प्रदान करने के लिए 1.12 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित जलापूर्ति योजना, जल शक्ति उप-मण्डल सरस्वती नगर की विभिन्न ग्राम पंचायतों के लिए 1 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित जलापूर्ति योजना, जल शक्ति उप-मण्डल गुम्मा के अन्तर्गत विभिन्न ग्राम पंचायतों के लिए 89 लाख रुपये की लागत से निर्मित जलापूर्ति योजना, तहसील टिक्कर के अन्तर्गत विभिन्न बस्तियों के लिए 3.67 करोड़ रुपये की लागत से बनी जलापूर्ति योजना, जल शक्ति उप-मण्डल टिक्कर के अन्तर्गत विभिन्न पंचायतों के लिए 3.41 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित जलापूर्ति योजना का लोकार्पण किया।

इसके अतिरिक्त मुख्यमंत्री ने तहसील कोटखाई की ग्राम पंचायत हिमरी के लिए 8.44 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित उठाऊ जलापूर्ति योजना, 6.29 करोड़ रुपये की लागत से दरकोटी और गरयोग गांव के लिए बनी गिरटू नाला सिंचाई योजना, ग्राम पंचायत देवगढ़ के लिए 2.10 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित गिरी उठाऊ सिंचाई योजना, ग्राम पंचायत कुड्डू के लिए 1.20 करोड़ रुपये लागत से निर्मित सिंचाई योजना, ग्राम पंचायत धराड़ा के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न गांव के लिए 5.51 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित उठाऊ सिंचाई योजना, 6.28 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित 96 बिस्तरों वाले कन्या छात्रावास और 3.04 करोड़ रुपये की लागत से हाटकोटी मन्दिर में निर्मित पार्किंग का लोकार्पण किया।

सेब के समर्थन मूल्य में रिकॉर्ड वृद्धि-मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों शिमला जिला के रोहड़ू में आयोजित 'प्रगतिशील हिमाचलः स्थापना के 75 वर्ष' समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने नागरिक अस्पताल रोहड़ू में आईसीयू के लिए अल्ट्रा साउंड मशीन, लैप्रोस्कोपी मशीन और एबीजी मशीन उपलब्ध करवाने तथा उच्च विद्यालय बामनोली, खरील एवं खरशाली को वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला में स्तरोन्नत करने की घोषणा की। इसके अलावा उन्होंने माध्यमिक विद्यालय बनोटी तथा कलगांव को उच्च विद्यालय में स्तरोन्नत करने और चिड़गांव के लिए मल निकासी योजना उपलब्ध करवाने, जाखा सड़क के निर्माण के लिए 40 लाख रुपये, शीलघाट में गैस एजेंसी खोलने और क्षेत्र में दो विश्राम गृह निर्मित करने की घोषणा की।

- रोहड़ू विस क्षेत्र के लिए 29.65 करोड़ की विकासात्मक परियोजनाएं
- नागरिक अस्पताल रोहड़ू के आई.सी.यू के लिए अल्ट्रासॉउंड, लैप्रोस्कोपी व एबीजी मशीने
- चिड़गांव में स्थापित होगी मल निकासी योजना

मुख्यमंत्री ने रोहड़ू क्षेत्र के विकास का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा क्षेत्र में सड़कों और पुलों के निर्माण पर 125 करोड़ रुपये और जल शक्ति विभाग की विभिन्न योजनाओं पर 250 करोड़ रुपये व्यय किए गए हैं। उन्होंने कहा कि चिड़गांव में एक फायर पोस्ट खोली गई। उन्होंने कहा कि सेब उत्पादकों को राहत प्रदान करने के लिए राज्य सरकार द्वारा एचपीएमसी या खुले बाजार के माध्यम से खरीदी गई पैकेजिंग सामग्री यानी कार्टन और ट्रे की खरीद पर 6 प्रतिशत अनुदान की प्रतिपूर्ति की सुविधा प्रदान की जा रही है। उन्होंने कहा कि मण्डी मध्यस्थता योजना के तहत सेब खरीद के समर्थन मूल्य में रिकॉर्ड वृद्धि की गई है। इसके बाद, मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने रोहड़ू विधानसभा क्षेत्र में 29.65 करोड़ रुपये लागत की विकासात्मक परियोजनाओं के लोकार्पण और शिलान्यास किए, जिसमें तहसील चिड़गांव की ग्राम पंचायत ढकगांव, दिसवानी और गवास के लिए जल शक्ति अनुभाग कलोटी के अन्तर्गत 1.33 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित विभिन्न जलापूर्ति योजनाओं, तहसील रोहड़ू के पारसा, चुपाड़ी, सिद्धरोटी इत्यादि गांवों की बागवानी योग्य भूमि के लिए 5.12 करोड़ रुपये की लागत से पब्बर नदीं पर निर्मित ऊठाउ जलापूर्ति योजना शामिल है। उन्होंने बागवानी विषयवाद् विशेषज्ञ कार्यालय डोडरा क्वार और चिड़गांव में अग्निशमन चौकी का भी शुभारम्भ किया।

किशाऊ बांध की इनपुट पॉवर कॉस्ट हो 2.30 रुपये प्रति किलोवाट ऑवर

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश की सीमा पर यमुना की एक सहायक नदी टोंस नदी पर प्रस्तावित राष्ट्रीय महत्त्व की किशाऊ बांध परियोजना के क्रियान्वयन के संबंध में गत दिनों दिल्ली में एक बैठक में वर्चुअल माध्यम से भाग लिया। केंद्रीय जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में मुख्यमंत्री वर्चुअल माध्यम से जुड़े। इस बैठक में हरियाणा और उत्तराखंड के मुख्यमंत्रियों ने भी भाग लिया।

इस अवसर पर श्री जय राम ठाकुर ने केंद्र सरकार से इनपुट पॉवर लागत को 2.30 रुपये प्रति किलोवाट ऑवर पर स्थिर रखने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि इससे बिजली घटक लागत को कम रखा जा सकेगा और हिमाचल प्रदेश इसे वहन कर सकेगा। श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि इस परियोजना से उत्पन्न बिजली हिमाचल प्रदेश और उत्तराखण्ड के मध य समान रूप से बांटी जाएगी। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार जल घटक की 90 प्रतिशत और लाभान्वित राज्य 10 प्रतिशत लागत वहन करेंगे।

पांच साल में तैयार होगी शिमला रोपवे परियोजना

शहरी विकास मंत्री श्री सुरेश भारद्वाज ने कहा कि शिमला शहर के लिए लगभग 15 किलोमीटर लम्बी रोपवे परियोजना को मंजूरी मिल गयी है। उन्होंने कहा कि इस परियोजना कि खास बात यह रहेगी कि शहर में एक जगह से दूसरी जगह जाने में समय की भी बचत होगी और कम किराए में आवाजाही हो सकेगी। परियोजना के हिसाब से 10 किलोमीटर तक (रोपवे के हिसाब से दूरी) के सफर के लिए 50 रूपये किराया देना होगा।

उन्होंने कहा कि सही मायने में यह परियोजना जनता के लिए लाभकारी सिद्ध होगी क्योंकि इससे समय की बचत के साथ पर्यावरण संरक्षण में भी सहायता मिलेगी। उन्होंने कहा कि पहले भी कई बार रोपवे लगाने की बातें हुई हैं लेकिन केंद्र में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर के नेतृत्व वाली डबल इंजन सरकार ने अनुमानित 1546.40 करोड़ रुपये की इस परियोजना को मंजूरी दी है। यह रोपवे परियोजना तारादेवी से शुरु होगी और इसमें स्मार्ट पार्किंग, लिफ्ट, एस्केलेटर का संयोजन मौजूदा परिवहन नेटवर्क के साथ एकीकृत किया जाएगा। यह एक कार्बन न्यूट्रल प्रोजेक्ट होगा। शहरी विकास मंत्री के समक्ष इस परियोजना के सम्बन्ध में रैपिड एंड रोपवे ट्रांसपोर्ट सिस्टम डेवलपमेंट कारपोरेशन ने प्रस्तुति भी दी।

शहरी विकास मंत्री ने शिमला से सम्बंधित विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि कम किराए में स्थानीय लोगों को सुविधा देने के लिए यह एक बेहतरीन योजना है। उन्होंने कहा कि यह परियोजना न केवल स्थानीय लोगों के आवागमन बल्कि शिमला में पर्यटन की दृष्टि से भी लाभकारी सिद्ध होगी।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने यातायात के नए माध्यम तलाशने एवं कार्यान्वित करने के लिए इस कॉर्पोरेशन की स्थापना की है। जल्द ही इस परियोजना से सम्बंधित वांछित औपचारिकताओं को पूरा कर लिया जायेगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर का आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि शिमला के लिए यह न केवल एक बड़ी सौगात है बल्कि एक व्यावहारिक योजना भी है। उन्होंने कहा कि इस परियोजना में 14.69 किलोमीटर की नेटवर्क लंबाई के साथ 15 बोर्डिंग और डी-बोर्डिंग स्टेशन होंगे। उन्होंने कहा कि यह योजना गाड़ियों पर निर्भरता को काफी हद तक कम करेगी और ट्रैफिक जाम व पर्यावरण को होने वाले नुकसान और समय की बर्बादी जैसी समस्याओं का भी समाधान होगा।

उन्होंने कहा कि औपचारिकताएं पूर्ण होते ही इस परियोजना पर काम शुरू हो जाएगा तथा इसके निर्माण के लिए पांच वर्ष का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

युवाओं से नई सोच रखने का आह्वान

राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने गत दिनों हिमाचल प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय हमीरपुर के चौथे दीक्षांत समारोह के दौरान 310 उपाधियां और 55 पदक प्रदान किए। समारोह में विश्वविद्यालय के 32 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक और 23 विद्यार्थियों को रजत पदक से सम्मानित किया गया। राज्यपाल ने सभी डिग्री धारकों को बधाई देते हुए कहा कि उन्हें उन परिस्थितियों पर विचार करने की जरूरत है जिनमें उन्होंने डिग्री हासिल की है।

उन्होंने कहा कि उन्हें अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए रूपरेखा तैयार करनी होगी। उन्होंने युवाओं से अलग तरह से सोचने और जोखिम उठाने की अपील की ताकि वे समृद्धि के पथ पर अग्रसर हों। उन्होंने कहा कि जिस दिशा में हमारे युवा सोचेंगे, देश का भविष्य भी उसी के अनुसार निर्धारित होगा।

टी.बी से मुक्ति के लिए भावनात्मक जुड़ाव हो सुनिश्चित: राज्यपाल

राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने गत दिनों हमीरपुर में प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि इस अभियान को सफल बनाने के लिए व्यक्तिगत प्रयासों के साथ-साथ भावनात्मक जुड़ाव भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि व्यक्तिगत प्रयासों से सरकारी योजनाओं और अभियानों के क्रियान्वयन में तेजी आती है। उन्होंने कहा कि टीबी मुक्त भारत बनाने के प्रधानमंत्री के आह्वान को पूरा करने के लिए हर व्यक्ति को अपने-अपने स्तर पर प्रयास करने चाहिए। राज्यपाल ने कहा कि इसके लिए वह स्वयं भी प्रयास कर रहे हैं और अधिक से अधिक लोगों को इस अभियान से जुड़ने के लिए प्रेरित करने के लिए उन्होंने प्रदेश के हर जिले का दौरा किया है। उन्होंने लोगों से टीबी से ग्रस्त कम से कम एक व्यक्ति की जिम्मेदारी लेने और उसे हरसंभव सहायता प्रदान करने का आग्रह किया।

प्रकाशक एवं प्रधान सम्पादकः हरबंस सिंह ब्रसकोन, निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हि.प्र. शिमला-171002, मुद्रकः प्रभा राजीव, नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग, शिमला-171005, फोनः 2830381-PBX.A29., सम्पादकः नर्बदा कंवर
कार्यालयः हि.प्र. मुद्रणालय परिसर, शिमला-171005, फोनः 2633145 व फैक्सः 2830374, ई-मेलः giririajhp@gmail.com. OR giririajweekly1978@yahoo.co.in प्राप्ति स्थानः गिरिराज कार्यालय। (गिरिराज साप्ताहिक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं)